RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)

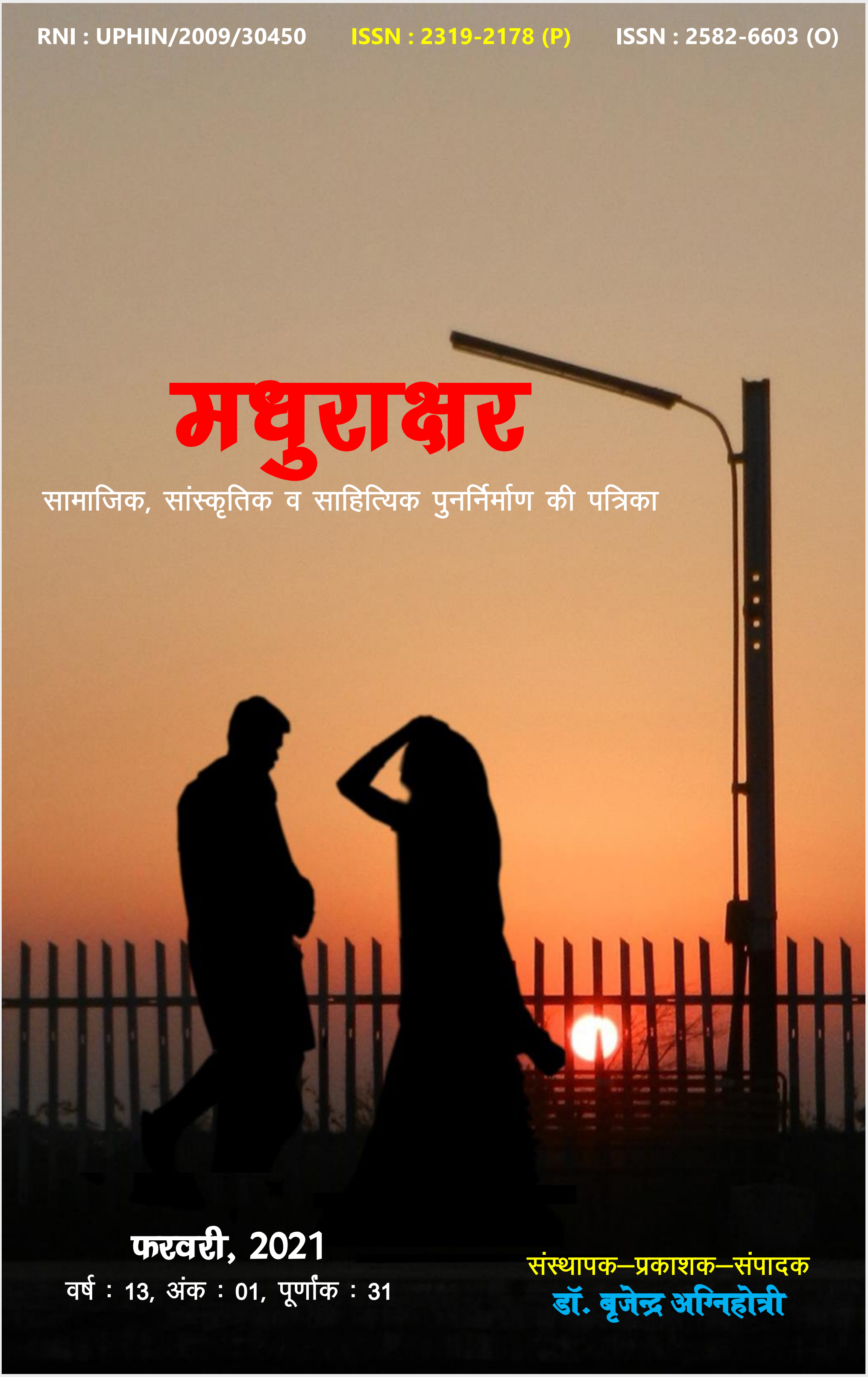

मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका

फरवरी, 2021

वर्ष : 13, अंक : 01, पूर्णांक : 31

संस्थापक–प्रकाशक–संपादक

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)

संरक्षक परिषद

श्रीमती चित्रा मुद्गल
प्रो. गिरीश्वर मिश्र
प्रो. अशोक सिंह
प्रो. हितेंद्र मिश्र
डॉ. कृष्णा खत्री
डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय

संपादक परिषद

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री (संपादक)
डॉ. प्रशांत द्विवेदी (सह-संपादक)
श्री पंकज पाण्डेय (उप-संपादक)
श्रीमती शालिनी सिंह (उप-संपादक)
डॉ. चुकी भूटिया (उप-संपादक)
डॉ. ऋचा द्विवेदी (उप-संपादक)
डॉ. आरती वर्मा (उप-संपादक)

परामर्श-विशेषज्ञ परिषद

डॉ. दमयंती सैनी
डॉ. दीपक त्रिपाठी
श्री मनस्वी तिवारी
श्री राम सुभाष
श्री जयकेश पाण्डेय
श्री महेशचंद्र त्रिपाठी
डॉ. शैलेष गुप्त 'वीर'
श्री मृत्यंजय पाण्डेय
श्री जयेन्द्र वर्मा

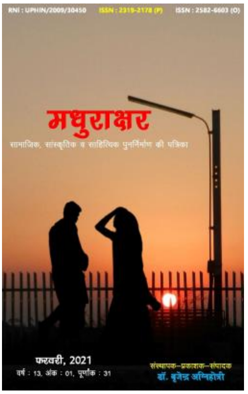

आवरण : **बंशीलाल परमार**

संस्थापक–प्रकाशक–संपादक
डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका

फरवरी, 2021
वर्ष : 13, अंक : 01, पूर्णांक : 31

पूर्णतः अव्यावसायिक एवं अवैतनिक प्रकाशन

ई-संस्करण

मूल्य

एक प्रति	: 30 रुपये

व्यक्तियों के लिए

वार्षिक	: 110 रुपये
त्रैवार्षिक	: 300 रुपये
आजीवन	: 2500 रुपये

संस्थाओं के लिए

वार्षिक	: 150 रुपये
त्रैवार्षिक	: 450 रुपये
आजीवन	: 5000 रुपये

विदेशों के लिए (हवाई डाक)

एक अंक	: 6 $
वार्षिक	: 24 $
आजीवन	: 300 $

सदस्यता शुल्क का भुगतान भारतीय स्टेट बैंक की किसी शाखा में खाता क्रमांक- **10946443013** (IFS Code-SBIN0000076, MICR Code - 212002002) या 'मधुराक्षर' के बैंक खाता क्रमांक **31807644508** (IFS Code- SBIN0005396, MICR Code- 212002004) में करें।

मधुराक्षर में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री की सत्यता व मौलिकता हेतु लेखक स्वयं जिम्मेदार है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके विरुद्ध कार्यवाही केवल फतेहपुर न्यायालय में होगी।

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामी
बृजेन्द्र अग्निहोत्री द्वारा स्विफ्ट प्रिन्टर्स, 259, कटरा अब्दुलगनी, चौक, फतेहपुर से मुद्रित कराकर जिला कारागार, मनोहर नगर फतेहपुर (उ.प्र.) 212601 से प्रकाशित।

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका

मधुराक्षर

फरवरी, 2021

संपादक
डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

संपादकीय कार्यालय
जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212 601

E-Mail :
madhurakshar@gmail.com

Visit us :
www.madhurakshar.com
www.madhurakshar.blogspot.com

www.facebook.com/agniakshar

चलित वार्ता
+91 9918695656

एक नज़र में...

संपादकीय

अपनी बात : बृजेन्द्र अग्निहोत्री .06

कथा–साहित्य

शहीद : धर्मेन्द्र कुमार . 11
ग्रीनकार्ड : डॉ. कृष्णा खत्री . *25*
मुझे भी हक है : भावना ठाकर . 32
नशे की दलदल : उर्मिला शर्मा . 35
बुद्धम् शरणम् गच्छामि : डॉ. पूरन सिंह . 39
उम्मीद अभी जिंदा है : प्रो. शरद नारायण खरे . 43
अपराधबोध : महेश कुमार केशरी . 45

यात्रावृत्त

खिल–खिल हँसता निर्झर : अनिता रश्मि . 83

कथेतर गद्य

साहित्य, समाज और संस्कृति : डॉ. विदुषी शर्मा . 47
मणिपुर के पर्व–त्योहार : वीरेन्द्र परमार दृ 53
भारत के निर्माण के आलोक में... : अमित कुमार पाण्डेय . 67
बुजुर्गों की दशा–दिशा : डॉ. मीरा सिन्हा . 72
मृत्युदंड : सलिल सरोज . 78

काव्य–सुरसरि

जवानी चार दिन की : मनोज शाह 'मानस' . 95
ग़ज़ल : मो. मुमताज हसन . 96
ग़ज़ल : अंजुदास गीतांजलि . 97
ग़ज़ल : नज़्म सुभाश . 98

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

हमारा अंतर्मन : लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव . 99
पिता के हाथ की रेखाएँ : महेश कुमार केशरी . 100
शब्दों की सत्यता : राजेश सिंह . 101
हारता नहीं हूँ कभी मैं : नरेश अग्रवाल . 102
सरकार व कृषक : बुद्धि सागर गौतम . 103
कवि की चेतना : क्षितिज जैन 'अनघ' . 104
सुकून : मधु वैष्णव 'मान्या' . 105
नयनों को करती सजल : डॉ. सम्राट् सुधा . 106
जीवन–वृक्ष : स्नेहलता . 107
गीतिका : गौरीशंकर वैश्य विनम्र . 108
मेरा गाँव : अमृता पांडे . 109
हत्या का आरोप : राहुल कुमार बोयल . 111
कैसे उसे पता : रजत सान्याल . 113
पूंजीवाद : पद्मनाभ पाराशर . 114
प्रतीक्षा : मोती प्रसाद साहू . 116
नव वर्ष अभिनंदन : डा. केवलकृष्ण पाठक . 117
मैं क्वारेनटीन में हूँ : अनामिका अनु . 118
स्वर्ग से सुंदर : डॉ. दीपा . 120
जिंदगी के गर्म रास्तों पर : आशीष कुमार वर्मा . 122
दृश्यों में जीवन और जीवन के दृश्य : अशोक सिंह . 123

चलते–चलते

कोविड–19 से जूझते समकालीनं... : डॉ. शैलेश शुक्ला .125

अपनी बात

हमारे समाज में महिला को हमेशा से महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। प्राचीन समय से ही घर–संचालन की जिम्मेदारी महिला के हिस्से ही रही है। पुरुष कमाता और महिला घर चलाती। आज भी यह परम्परा नियमित रूप से चल रही है, हालाकि अब अपवादों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। यह बात अक्सर सुनने में आती है कि महिला की स्थिति समाज में दोयम–दर्जे की है। पुरुष उसे हमेशा से प्रताड़ित करता आया है, कर रहा है। यथार्थ से मुँह मोड़कर हम महिला को कभी अबला कहते हैं, तो कभी सबला। महिला को कभी हम देवी कहते हैं, तो कभी दानवी। उसे मानवी समझकर एक व्यक्ति के रूप में देखने की समाज में हिम्मत जाने कब आयेगी।

हमारे समाज में महिला को हमेशा से सम्मानीय स्थान प्राप्त रहा है। भारतीय संविधान बिना किसी भेदभाव के महिला को पुरुष के बराबर अधिकार प्रदान करता है। यही कारण है कि आज देश में सभी क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति, उनका नेतृत्व दिखाई पड़ता है। चाहे वह क्षेत्र विज्ञान का हो, या फिर तकनीकि, शिक्षा, न्याय अथवा प्रशासन, राजनीति का।

भारतीय संस्कृति में अनादिकाल से ही महिलाओं का दखल रहा है। कैकेयी जैसे अनेकों प्रेरक उदाहरण हमारे इतिहास में भरे पड़े हैं। भारतीय राजनीति में आज़ादी के पूर्व से ही महिलाओं का दखल रहा है। रजिया सुल्ताना के षासनकाल को विस्मरण करना आसान नहीं है। आज़ादी के आन्दोलन में महिला नेताओं में ऐनी बेसेन्ट व सरोजिनी नायडू जैसी अनेकानेक महिलाओं ने नेतृत्व की बागडोर संभाली और आन्दोलन को सफल बनाया। इन्दिरा गाँधी के शासनकाल को पूरा विश्व याद करता है, और करता रहेगा। सोनिया गाँधी, वसुन्धरा राजे, जयललिता, राबड़ी देवी, ममता बनर्जी, मायावती और उमा भारती जैसे अनेकों नाम भारतीय राजनीति के पर्याय बने हुए हैं। देश की प्रथम नागरिक के पद को विभूषित करने वाली प्रतिभा पाटिल भी महिला ही हैं। इससे बढ़कर राजनीति में महिला की सहभागिता की क्या बात होगी।

वर्तमान समय में राजनीति के विभिन्न स्तरों यथा ग्राम स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक महिलाएं अपनी नेतृत्व क्षमता से पुरुषों को अचम्भित कर रही हैं। वैसे अगर यह कहा जाय कि भारतीय समाज में राजनीति सर्वत्र व्याप्त है, तो अतिशयोक्ति नही होगी। हमारे देश में लोकतंत्र कुछ इस तरह फैला है कि अपनी आगोष में उसने पूरे समाज को ले रखा है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा, जो राजनीति से अछूता हो। हर घर में राजनीति है, हर गली में राजनीति है, सरकारी–गैर सरकारी ऑफिसों में राजनीति है। फिर गाँव, शहर, कस्बा, प्रदेश और राश्ट्र इससे अछूता कैसे रह सकता है। राजनीति का पर्याय बनती जा रही भारतीय नारी सर्वत्र अपनी क्षमताओं के साथ अपनी उपस्थिति रसूख के साथ दर्ज करा रही है। ऑफिस, घर से लेकर संसद तक। आरक्षण जैसी चीज ने, महिला को पर्दे के पीछे रखने की मानसिकता वाले पुरुशों को इस बात के लिए मज़बूर कर दिया है कि वह अपने घर की महिलाओं को घर की चहारदीवारी के बाहर निकाले और उन्हें आगे कर राजनीति के मैदान में अपनी किस्मत आजमायें। ऐसे सैकड़ों नहीं लाखों उदाहरण होंगे, जिनमें जिन महिलाओं ने कभी घर के बाहर के उजाले की कल्पना भी न की होगी, वे आज राजनीति में विजय पताका फहरा जिम्मेदार पदों को सुषोभित कर रही होंगी। मौका मिलने पर भारतीय नारी स्वयं की क्षमता को प्रदर्शित करने में कोई कसर नहीं छोड़ती दिख रही है। राष्ट्रपति से लेकर गाँव के प्रधान पद को चलाने वाली महिला के स्वरों को ही शायद ग़ज़ल सम्राट दुष्यंत कुमार ने यह शब्द दिए हैं–

"हमने तमाम उम्र अकेले सफ़र किया,
हम पर किसी खुदा की इनायत नहीं रही।"

हम हमेशा से सुनते आये हैं कि महिला पीड़ित है, प्रताड़ित है। लेकिन भारतीय राजनीति में महिलाओं के बढ़ते प्रभाव को देखकर ऐसा महसूस होता है कि महिलाओं की जीवनधारा ही बदल गई है। यह अधूरा सच है, यथार्थ तो कुछ और ही है। भारतीय संस्कृति–सभ्यता ने हमेशा समाज को उच्छृंखलता से बचाने, संयमित जीवन जीने व मानवता के लिए स्वयं को उत्सर्ग करने की सीख दी है। इन सीखों या नियमों ने समाज को एक आवरण प्रदान किया। इस आवरण ने उसके अन्दर के इन्सान को ज़िन्दा रखा। पहले मानव के अन्दर मानवता का आधिक्य इतना अधिक था कि वह मानव मात्र के लिए

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

स्वयं को उत्सर्ग करने से नहीं चूकता था। महर्शि दधीचि, महाराज शिवि जैसे अनेकों उद्धरण हमारी विरासत हैं। लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल रही हैं। पाष्चात्य सभ्यता के दबाव ने भारतीयों को इतना अधिक जकड़ लिया है कि उसे अपने हित–अहित में अन्तर करने की समझ भी नहीं षेश बची। मेरी समझ में पाश्चात्य सभ्यता की नारी को लेकर राजनीति दो तरह की है, जिनका प्रभाव धीरे–धीरे भारतीय राजनीति पर हावी होता जा रहा है।

- महिला को घर चहारदीवारी के अन्दर छुपाकर–दबाकर रखो, जिससे वह स्वयं के अस्तित्व को भूल जाये।
- महिला को इतना उच्छृंखल बना दो कि उसे व्याभिचार भी फैशन लगने लगे।

आज महिला के यही दो स्वरूप ही अधिकतर दिखाई पड़ रहे हैं। संतुलित महिला न जाने क्यों दिनोदिन कम से कमतर होती जा रही हैं। आज की महिला के लिए पारिवारिक बंधन प्रगति में बाधा हैं। वह अपने परिवार, पति या प्रेमी के लिए अपने 'कैरियर' से समझौता करना बेवकूफी समझती है। लिविंग टूगेदर जैसी संस्कृति को अपनाने वाली महिलाओं के लिए विवाह जैसी परम्परा क्या मायने रखेगी। आज की नारी की कहानी उसी की ज़ुबानी– ''मैं औरत हूँ अर्थात् स्त्री, देवी, गृहस्वामिनी, हृदय–मल्लिका आदि आदि। केवल घर ही नहीं, इस सृश्टि के आदि से अन्त तक मैं ही मैं हूँ। मेरे बिना ब्राह्मांड में किसी का कोई अस्तित्व नहीं है, तभी तो मुझे आदि–शक्ति कहा जाता है। पुरुश यह सोचकर खुश होता रहता है कि सबकुछ उसने बनाया है। सारा संसार उसकी अपनी सुख–सुविधा–ऐय्याशी के लिए है। लेकिन वह पागल इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ है कि वह मेरी कठपुतली मात्र है। मैं औरत हूँ अर्थात् पत्नी–प्रेमिका। जो कुछ भी हो, जैसे भी हो... मेरे सुख, भोग, आनन्द और ऐश्वर्य के लिए सदा समर्पित रहना पुरुश का कर्तव्य है। यदि घर में मेरा नियन्त्रण तो घर स्वर्ग, नहीं तो नरक के समान है। अगर मैं अपने में आ जाऊं तो पुरुष की खैर नहीं, चाहे वह मेरा पति–प्रेमी ही क्यों न हो। बड़े से बड़े पद पर बैठे पुरुष को राजा से रंक बनाना, मेरे बायें हाथ का खेल है।''

सारतः आज की महिला के अन्दर अहम् का भाव जाग्रत होता जा रहा है। सफलता के लिए वह किसी भी स्तर तक जा सकती है। मर्यादा, चरित्र उसके लिए बीते जमाने की बात है। उसकी इस मानसिकता का फायदा राजनीतिज्ञ जमकर उठाते हैं कभी टिकट के लिए, तो कभी किसी विषिश्ट कार्य के लिए उसका दैहिक–मानसिक शोषण करते हैं। और आश्चर्य महिला उसका विरोध भी नहीं करती! अभी हाल ही में ऐसे कई उदाहरण सामने आये हैं कि राजनेताओं के यहाँ किस तरह महिलाओं का शोषण होता है। अनेकों राजनीतिक दलों की सर्वेसर्वा महिलाएं हैं, लेकिन वह महिलाओं को कितना लाभ दे रही हैं...? कहीं महिला द्वारा राजनीति का दृश्य दिखाई पड़ता है तो कहीं महिला के साथ राजनीति की कहानी सुनने में आती है। हमारे देश में संविधान का 73वां संशोधन महिलाओं को ज़मीनी स्तर पर आरक्षण प्रदान करता है। इसी कारण महिला सरपंच दिखाई पड़ती हैं, यह बात अलग है कि अपवादों को छोड़कर इनके नाम से राजनीति इनके पति या पुत्र ही करते हैं। भारतीय राजनीति के हाल तो इतने विचित्र हैं कि राजनीति में अपना दबदबा कायम रखने के लिए एक निरक्षर को मुख्यमंत्री की कुर्सी तक दी जा सकती है। राजनीतिक दलों के कार्यालयों से लेकर सरकारी, गैर–सरकारी कार्यालयों में महिलाएं अपने रूप–देह को भुनाने की चेष्टा करती हैं। आज की महिला आधुनिकता के नाम पर उच्छृंखलता को अपना रही है। पुरुश क्या कर रहा है...इसका विरोध करने के स्थान पर, उससे दस कदम आगे बढ़ना या कहें गिरना चाहती है। जब तक उसे अपनी गलतियों का अहसास होता है, समय जा चुका होता है और उसके पास हाथ मलने के सिवाय कुछ नहीं बचता। ऐसी महिलाओं को स्वयं से एक प्रश्न पूछना चाहिए कि जो, जिस तरीके से वह कर रही हैं, यही सब उनकी बेटी–बेटा करे तो क्या वह इसे स्वीकार कर पाएंगी ?

यह सच है कि एक समय महिला सिर्फ घर में ही रहती थी। घर को संभालना, बच्चों का पालन करना, उन्हें अच्छी सीख देना ही उसका कार्य था। ऐसा इसलिए नहीं था कि यह सब पुरुष चाहता था। बल्कि इसका निर्धारण महिला–पुरुष के आपसी सामंजस्य से किया गया था। महिला की सशक्ति का मतलब केवल पुरुष–विरोध नहीं है, इस पर भी मनन की आवश्यकता है। आज अगर अपनी क्षमता से महिला राजनीति या किसी भी क्षेत्र में जाना चाहे तो उसका

स्वागत होना चाहिए। लेकिन 'जुगाड़' को अपनाकर अपना स्थान बनाने वाली महिलाएं केवल कठपुतली बनकर रह जाती हैं, महिलाओं को यह भी याद रखना चाहिए। महिलाओं को राजनीति में प्रवेश करने से पूर्व यह स्मरण रखना चाहिए कि बड़ी–बड़ी बातें करने वाले राजनीतिक दल जो कुछ कह रहे हैं, कर रहे हैं... वह केवल निजता की छटपटाहट मात्र है। बहरहाल बात चाहे जो हो, लेकिन यह सच है कि भारतीय राजनीति में महिलाओं की सहभागिता निरन्तर बढ़ रही है। निःसंदेह यह सुखद है। पाश्चात्यता का आवरण ओढ़े भारतीय महिला को एक न एक दिन अपनी पहचान अर्थात् भारतीयता की अहमियत पता चलेगी ही। दुष्यंत कुमार के एक शे'र के साथ अपनी बात खत्म करूंगा–

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूँ आवाज़ में असर के लिए।

✍ **बृजेन्द्र अग्निहोत्री**

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कहानी

धर्मेन्द्र कुमार
भवानीपुर (बढैयाबाग), सासाराम,
रोहतास, बिहार 821 115
dharmendra.sasaram@gmail.com

शहीद

आधी रात बीत चुकी है। फरवरी का दूसरा सप्ताह चल रहा है। कड़ाके की ठंड और शीतलहर न होने पर भी कंपा देने वाला ठंड बाक़ी था। पटना की सड़कें और गलियाँ रोज़ की तरह सुनसान और विरान न थी। लोगों के हुजूम से भरा था। यह भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। लोग शांत, दु:खी और आंतरिक दबे क्रोध के साथ घरों से निकले चले आ रहे थे। उनके सीने में शोला और आँखों में आँसुओं का समंदर था। जिन स्त्रियाँ ने कभी डयोढ़ी न लाँघी थी, जिनपर कभी सूर्य का प्रकाश न पड़ा था। वह भी निर्भीक भग्न हृदय से गाँधी मैदान की तरफ़ बढ़ी चली आ रही हैं। क्या अमीर, क्या ग़रीब, क्या बच्चें, बूढ़े, वयस्क, औरतें, युवतियाँ सभी घरों से निकल पड़े हैं। सबके हाथों में एक जलती मोमबती है। मुख पर वेदना, आँखें नम, हृदय में क्रोध और बदले की ज्वाला दहक रही है। कल तक जिसने जाति–धर्म, ऊँच–नीच, छुआ–छूत, आपसी द्वेष और भेद का माहौल बना रखा था। आज एक दु:खद कृत्य ने उसे मिटा दिया है। मानो सम्पूर्ण नदियाँ अपना रंग, आकार, भेद, पहचान छोड़कर सागर में विलीन हो गयी, एकाकार हो गयी।

कदाचित् इस आकस्मिक खेद जनक घटना के सिवा दूसरी कोई परिस्थिति इनमें इतनी देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम, भाईचारा और अपनापन न भर पाता। यहाँ तक की देश के अशिक्षित और स्वार्थी लोगों का मन भी डोल

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

गया है। वे भी इस संग्राम में कूद पड़े हैं। ऐसी एकता और ऐसा राष्ट्रप्रेम शायद स्वतंतत्रा के पूर्व ही देखने को मिली हो। शोक से सहानुभूति उत्पन्न होती है, जो हमें एक सूत में बाँध देती है। रात के तीसरे पहर में गाँधी मैदान में तिनका रखने की जगह न थी। मोमबतियों की लौ से मैदान जगमगा उठा। मानो हजारों तारे आकाश से धरती पर उतर आएं हो। सबके मुख पर वेदना और आँखों से आँसू बह रहे थे। देश के महान् वीर सपूतों की श्रद्धांजलि में सारा देश करजोर नतमस्तक है। वह काला दिन इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा, जब कायर, अधम, नीच आतंकवादियों ने भारतीय जवानों की एक बस को धमाके से उड़ा दिया था। बस में मौजूद सभी चौवालिस जवान मौके पर शहीद हो गए। उन्हीं की शहादत को भावभीनी श्रद्धांजलि देने, उनके परिवार को सांत्वना देने तथा उनकी महान आत्माओं की शांति के लिये यहाँ सभी एकत्रित हुए हैं।

मैदान के एक कोने में स्थित चबुतरे से सक्रिय समाजसेवी बोल रहे थे, 'बन्धुओं देश के उन वीर जवानों के आत्मा की अनंत शांति और सम्मान के लिए हम सब उस परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। इस शोक की घड़ी में सारा देश उनके परिवार के साथ है। उन सिपाहियों के माता–पिता, उनकी विधवा पत्नी, उनके अनाथ बच्चों की दुःख की कल्पना से ही.....यह कहते–कहते अपने को रोक न सके, भाव–विह्वल हो गये। आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। लाख यत्न करने पर भी वे असमर्थ रहे। नदी ने बांध तोड़ दिया था। पानी रोकना संभव न था। इसके साथ ही हजारों आँखों से आँसू निकलने लगे। ऐसा लगता कलेजा मुँह को निकल आएगा। महाशय आँसू पोछते हुए मंच से उतर गए। कई लोग उन्हें सांत्वना देने लगे।

उनके जाते ही एक महिला कार्यकर्ता मंच पर चढ़ी। वह बिना किसी संबोधन के बोली, 'एक औरत का, एक माँ का, एक पत्नी का दुःख क्या होता है, यह वही जान सकती है, जिसके ऊपर बीत रही है। हम केवल संवेदना और दुःख व्यक्त कर सकते हैं। किसी के लाल को, किसी के नाथ, पिता और भाई को वापस नहीं ला सकते। बहनें कलाई पर राखी नहीं बाँध पाएँगी। बच्चे पिता के गोद के लिए तरस जाएँगे। एक पत्नी की, माता–पिता की वेदना क्या कोई शब्दों में व्यक्त कर सकता है ? कुछ दिन बाद इस घटना को भूलकर हम रोज़मर्रा की दिनचर्या में लग जाएँगे। वह परिवार जिनका एक सदस्य खो गया। जिनके सहारे से घर चलता था। घर के लोगों ने उनसे बहुत उम्मीदें लगा रखी थी। क्या वे उसे भूला पाएँगे

? क्या वह रिक्त स्थान कभी भर पाएगा ? नन्हें बच्चे आज भी इस इंतज़ार में है, पापा आएँगे। खिलौने और मिठाइयाँ लाएँगे। उन्हें गोद में लेकर खेलाएँगे। अपने घर में और दरवाज़े पर भीड़ देखकर उन्हें मेला का आभास होता है। माता को कलेजा पिटकर, चुड़ियाँ तोड़कर रोते, दादा–दादी को बेसुध बिलखते, मूर्च्छा खाकर गिरते देखकर वह भी रो लेते हैं; किंतु रोने की सही वजह नहीं पता। उन्हें नहीं पता, अब वह कभी लौट के नहीं आएँगे। आज से वह पिताविहीन और उनकी माँ विधवा हो गयी। अब वह माथे पर कुमकुम नहीं लगाएँगी। जिनके बच्चें बड़े हैं, समझदार हैं, उनके वेदना का अंत नहीं। जिन ललनाओं की शादी अभी दो–चार महीना पहले हुई और उनके पति वीरगति् को प्राप्त हो गये। उनके लिए संसार और संसार की सारी नेमतें किसी काम की नहीं। उनका जीवन नर्क से बदतर हो गया। जीवन में कोई रस, कोई आनन्द और उत्साह न रहा। नाथ की अत्यल्प स्मृतियाँ ही उनके जीवन की अक्षयनिधि और जीवनाधार है। दो–चार महीने में उनके परिवार और शहीदों को, सरकार, मीडिया, हमसब भूल जाएँगे। तब अकेला, उदास, निराश वह परिवार आर्थिक तंगी से जूझेगा। उस वक्त अपने सगे–संबंधी सभी दूरी बना लेते हैं। आपलोग सोचेंगे मैं इतनी गहराई से कैसे जानती हूँ ? वह इसलिए कि मेरे ऊपर यह सब बीत चुका है। मेरे पति भी कश्मीर में शहीद हो गये थे। उस समय भी टेलीविजन और मीडिया में इसी प्रकार सारा दिन, वही न्यूज़ दिखाया जा रहा था। नया पेंशन स्कीम के तहत हजार रुपये महीना मिल जाता है। बच्चों की स्कूल की फी ही पन्द्रह सौ है। मैंने और मेरे परिवार ने जो कुछ खोया उसका गम भूला भी न पाये थे कि आर्थिक तंगी की चिंता सताने लगी। बच्चों को कैसे पढ़ाया जाए, ससुर जी की दवा, अम्मा के आँखों का ऑपरेशन आज भी एक ख़्वाब–सा लगता है। मेरे कहने का सारांश यह कि हमसब मिलकर कुछ ऐसा करे जिससे उन परिवारों को निकट भविष्य में आर्थिक तंगी की चिंता से न जूझना पड़े।'

उनके मंच से उतरते ही सेवा सभा के कर्मठ कार्यकर्ता मंच पर चढ़ गये–'बन्धुओं, अभी देवीजी ने जो कुछ भी कहा, उसकी वेदन से मेरी छाती फटी जाती है। इस देश में देशप्रेम जैसी बहुमूल्य वस्तुएँ बलिदान से उत्पन्न होती है। राष्ट्रप्रेम बलिदान की क़िमत पर प्राप्त होती है। चौवालिस शहीदों का बलिदान ही है, जिसने हमारे अंदर देशभक्ति जगाया है। कल से सेवासभा के सभी सदस्य पूरे शहर में और गाँवों में जाकर चंदा इक्ट्ठा कर उन परिवारों को भेजेंगे। अपनी स्वेच्छा से कोई मदद करना चाहे तो

सेवासभा में आकर दे सकता है। एक बात और बन्धुओं, इस तरह से हम कबतक अपने जवानों को खोते रहेंगे। राजनीति पार्टियाँ अपना मकसद साध रही हैं। देश की पार्टियाँ, न्यायालय और राजनेता हमें बाँटकर रखना चाहती हैं। जवानों के सहादत पर राजनीति कर रहे हैं। अपनी चुनावी रोटियाँ सेक रहे हैं। इन जवानों को पेंशन नहीं मिलता तो इन मंत्रियों, सांसदों, और विधायकों को भी नहीं मिलना चाहिए।'

उनके जाते ही एक दाढ़ीवाले महाशय आए– 'कुछ सिरफिरे आततायियों के कारण आज मुसलमान कहना शर्म की बात हो गयी है। आज माहौल ऐसा हो गया है कि इस्लाम को मानने वाला हर शख़्स अपने को दोषी समझ रहा है। चंद नामुराद गद्दारों और हत्यारों के कारण आज क़ुरान शर्मिंदा है। इस्लाम की मैं क़दर करता हूँ। आयतों को पूरी निष्ठा और इमानदारी से मानता हूँ। मेरे कुछ मुस्लिम भाइयों ने इस्लाम के प्रचार–प्रसार का ठेका ले रखा है। उन्हें यह डर सता रहा है, कहीं इस्लाम का वजूद समाप्त न हो जाए। जिसने इस क़ायनात को बनाया, तितलियों में रंग भरा, गगन में तारें बनाये, जिनकी मर्ज़ी के बग़ैर एक पता भी नहीं हिलता। जिसने आयतों में चीख़–चीख़ कर भाइचारा का संदेश दिया है। आज ख़ुदा चाह जाये कि इस्लाम अब न रहे, नेस्तनाबूत हो जाए, तो कौन उसे रोक सकता है ? मुझे आश्चर्य होता है, भाईचारा और दया की जगह उनके दिलों में नफ़रत क्यों हैं ? आतंकवादियों का कोई मज़हब और इमान नहीं होता तो मिट्टी का तेल डालकर उनके शव को जला दिया जाए या चील, कौवों, दरिन्दों और जंगली जानवरों के लिए छोड़ दिया जाए। मानवाधिकार मानवों पर लागू होता है अचेतन और जड़ पर नहीं। वेलोग अपने–आप को इस्लाम का सच्चा सेवक कहते हैं और ख़ून की दरिया बहाने से बाज़ नहीं आते। ऐसे इस्लाम और कुरान को गंदे नाले में डूबो दो, जो जिहाद के नाम पर क़त्लेआम और क़त्लगाह बन चुका है। मुझे ज़रा भी अफ़सोस न होगा। जहाँ अहिंसा, अत्याचार, क्रूरता, द्वेष, तलवारों का दम, बाहुबल या सख़्ती के ज़ोर के बल पर धर्म–प्रचार की मनोवृत्ति हो; वह धर्म नहीं आडंबर, अंधविश्वास, कुविचार, पाखण्ड और आतंक है। इंसानियत और मानवता का दुश्मन है। उसे त्याज्य देना ही मानव या राष्ट्र हित में उचित है। मैं उस इस्लाम को जानता हूँ, जो बेसहारों का सहारा, ग़रीबों का दाता, दया, क्षमा, इंसानियत, मानवता और मुहब्बत का दरिया है। चंद लोगों को कुरान–शरीफ़ और कुरानपरस्तों को बदनाम करने का कोई हक़ नहीं। क़ायनात में सबसे बड़ा इंसान इसके बाद सारे धर्म, सारी

जातियाँ हैं। मैं और मेरी बेग़म ने फैसला किया है कि अपनी कमाई का चालीस प्रतिशत आजीवन इन शहीदों के परिवार को देते रहेंगे। इसकी मैं स्टैम्प पेपर पर लिखित देता हूँ।'

मंच संचालक नम आँखों से श्रद्धानत उनके क़दमों में गिर पड़े। एक नवयुवक मंच पर आकर बोला– 'भाइयों देश के इस गंदे राजनीति का भी अंत होना चाहिए। वरना हमारे नवजवान फ़ौज़ी भाई ऐसे ही शहीद होते रहेंगे। आज पूरे देश की यही पुकार है–वन कन्ट्री वन लॉं। अगर सरकारें निष्पक्ष हैं, जनमन की भावना की क़दर करती है तो फ़ौरन यह कानून पास कर देना चाहिए। किंतु वे राजनीति से प्रेरित हैं, सत्ता को ही सब कुछ समझती हैं, जवानों की लाशों पर चलकर तख़्ते दिल्ली पाना चाहती हैं तो अब हमें आगे आना होगा। देश के उच्च पदों को सुशोभित करने वाले, अफ़सरों, मंत्रियों, सांसदों और विधायकों को अपना एक तनूज फ़ौज में देना होगा। हमारी पुरानी पेंशन बंद कर बुढ़ापे का सहारा छीन लिया गया है। इन मंत्रियों, सांसदों और विधायकों को क्यों पेंशन दिया जाता है ? हम फ़ौजी हैं, शहादत से नहीं डरते, पर इतना तो होना चाहिए हमारे न रहने पर परिवार की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे। उन्हें किसी प्रकार का आर्थिक कष्ट या सामाजिक प्रताड़ना न झेलनी पड़े। हम ही जब सेवा–निवृत्त होकर घर लौटे तो तंगी न झेलनी पड़े। बुढ़ापा सही से गुज़रे।' यह कहकर वह नवजवान फ़ौजी मंच से उतर गया।

इसके बाद कई स्त्री–पुरुष, नवयुवक और युवतियाँ कविताओं, ग़ज़लों, गीतों से शहीदों को नमन किये। पड़ोसी देश को चेतावनी दीं। जहाँ आतंक संरक्षण पाता है, जो आतंकियों का गढ़ है। जहाँ उसे फलने–फूलने की अनुकूल माहौल दिया जाता है, जो अपनी विस्तारवादी नीतियों के लिए पूरे विश्व में विख्यात हैं। पूरे देश के हर शहर में, बल्कि गाँवों में इसी तरह की श्रद्धांजलि दी जा रही है। इस वक्त पूरे देश की एक ही पुकार है–बदला, बदला और बदला। हमारे चवालिस जवानों के बदले आतंकियों के चौवालिस हजार सिर चाहिए।

देश के बड़े–बड़े नेता, सांसद, मंत्री तथा अधिकारीगण उन शहीदों के घर जाकर उनके परिवारों को सांत्वना दे रहे हैं। दुःख व्यक्त कर रहे हैं। आर्थिक मदद का भरोसा दिलाते हैं। वे उनके विलाप और दुःख को देखकर स्थिर नहीं रह पाते, नम आँखों से विदा होते हैं। लेखकों और कवियों में भी देशभक्ति का जोश जाग उठा है। स्याही पानी की तरह बहाई जा रही है। कबाड़ीवालों के लिए काग़ज़ दुर्लभ वस्तु न रही। पर

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

इनसे कर्मठ, कार्यशील और निष्ठावान भी एक दल है, जो शहर की गलियों, सड़कों और गाँव–गाँव जाकर चंदा इक्ट्ठा कर शहीदों के परिवारों की मदद कर रहा है। शहीदों के परिजनों के विलाप की करुण–क्रंदन से कांपकर या देश की जनता का उनके प्रति सहानुभूति देखकर अथवा स्वयं की अंतरात्मा की आवाज़ सुनकर कुछ पूँजीपति आगे आये। उन परिवारों को, जिसने अपने लाल खोये हैं, आर्थिक सहायता का वादा किया जा रहा है। कल शहीदों के पार्थिक शरीर को गाँधी मैदान में दर्शनार्थ लाया जाएगा। पड़ोसी आतंकी मुल्कों के आसबाबों का बहिष्कार कर होली जलाने का कार्यक्रम तय किया गया है। दुःखी, क्षुब्ध मन से आज की सभा भंग होने के साथ ही पूरब में लाली दिखाई देने लगी।

गाँधी मैदान के एक कोने में शहीदों का क्षत–विक्षत पार्थिक शरीर को तिरंगे में सहेज कर शान से रखा गया है। लोग गर्व से आँखें नम किये सलामी दागते। एक–दूसरे के कंधे पर सर रखकर फूट–फूट के रोते। उनकी बहादुरी और वीरता की जयगान करते। उनपर देश के कण–कण को नाज़ है। मुल्क का सबसे बड़ा मैदान महान् सपूत वीरों के दर्शनार्थियों से भरा पड़ा है। कहीं तिल भर भी जगह नहीं है। मैदान के बाहर सड़क पर भी यही हुजूम देखने को मिल रहा है। देश के कोने–कोने से इनके अंतिम दर्शन को लोग आये हुए हैं। अनेकता में एकता, भाईचारा, देशप्रेम और एकता की ऐसी मिसालें शायद ही दुनिया की किसी देश में देखने को मिले। दूसरे कोने में विदेशी आतंकी मुल्कों के सामानों की होली जलाई जा रही है। सेवासभा के सदस्य द्वार–द्वार जाकर सामान इकट्ठा कर रहे हैं। देशभक्ति से ओत–प्रोत लोग ख़ुद ही विदेशी आतंकी मुल्क के सामानों को स्वयंसेवी की गाड़ियों में रख–जाते। प्रजा विदेशी सामानों को थैलियों में भर–भर के लिए चली आ रही हैं। राष्ट्रभक्ति के गीत गाये जा रहे हैं। वंदे मातरम् और भारत माता की जय के जयकारे लगाए जा रहे हैं।

सहसा मुहम्मद हाफ़िज़ सईद घर में आकर पत्नी से बोले– 'जुबैदा, सारा सामान निकल गया ? देखो, एक भी सामान छूटना नहीं चाहिए।' यह कहकर घर के एक–एक चीज़ को देखने लगे। एकाएक उनकी नज़र आले पर रखे चाइनीज मोबाइल पर पड़ी– 'अजी मोबाइल छूट रहा है, वह आले पर है। उसे भी झोले में डाल दो।'

हाफ़िज़ और जुबैदा का विचार ही अमेल न था; बल्कि रहन–सहन और व्यवहार भी विपरीत था। इसके बावजूद दाम्पत्य जीवन कलहमुक्त और ख़ुशहाल था। हाफ़िज़ कुरान की कई बातों की आलोचला करते हुए

उसें नहीं मानते थे। फिर भी दूसरे कौमी जनता के साथ इस्लामियत कौम भी उनका आदर करती थी। उसका कारण उनकी निष्पक्ष स्वार्थहीन सेवा भावना, नज़ाकत, समादर भाव, कट्टर राष्ट्रीयता की भावना, जनता तथा देश के लिए प्रबल सर्वस्व उत्सर्ग की भाव का होना है। अनेकों बार जेल हो आये हैं। कई बार पुलिस की लाठियाँ भी खानी पड़ी है। जुबैदा कुरान के एक–एक शब्द को प्राण की तरह मानती। पाँचों वक्त की नमाज़ करती। हाफ़िज़ आधुनिकता से प्रभावित स्वतंत्र विचार के थे। जुबैदा पुराने ख़्यालों वाली औरत थी। इतने पर भी दोनों एक दूसरे के भावनाओं का आदर, कार्यों में सहयोग तथा अटल विश्वास करते थें। हाफ़िज़ मियाँ ज़रूरत के वक्त कौम की ख़िदमत में सदैव तत्पर रहते। जुबैदा भारत के बहुसंख्यक मुसलमानों के विचारों से प्रभावित थी। भारत–पाकिस्तान के बीच क्रिकेट, हॉकी या कोई भी मैच होने पर दोनों दो ख़ेमे में रहते। हाफ़िज़ कहते, 'तुम लोगों का कुरान और ईमान इतना संकीर्ण कैसे हो गया ? भारत के धरती पर रहते हैं। यहाँ का अन्न खाते हैं। हवा, पानी सब यहाँ का लेते हैं; किन्तु गुणगान पाकिस्तान का करते हैं। रहते यहाँ हैं, ख़ैरियत वहाँ की दुआ करते हैं। अभी भारत यह मैच हार जाए, तो तुम्हारे विचार के पोषक लोग पटाखें और रवाइसों की गर्जना कर देंगे। बल्लियाँ उछालेंगे, पर ख़ुदा के फ़ज़ल से मुँह लटकाने के सिवा उनके हाथ कुछ न आएगा।'

जुबैदा– 'इतनी सीधी–सी बात आपकी समझ में नहीं आती। हम इस्लाम के आधार पर पक्ष या विपक्ष का निर्धारण करते हैं। सभी अपने जाति–धर्म की तरफ़दारी करते हैं। हमने भी वही किया। इसमें जुल्म क्या है ? आपकी नसें तनी क्यों जा रही है ?'

हाफ़िज़ गम्भीर भाव से कहते– 'विचारों की संकीर्णता का होना ही अपने आप में एक बड़ा पाप है। यह न केवल दूसरों की अवहेलना और क़त्ल करता है; बल्कि अपने जिस्म का नाश कर रूह को दोज़ख़ तक पहुँचा देता है। आप तो कई बार पाकिस्तान से हो आयी हैं। वहाँ की कैफ़ियत से रूबरू है। इतना भ्रष्टाचार के बाद भी जो अमन और शांति यहाँ है वह किसी इस्लामिक मुल्म में नहीं। आप इतिहास उठाकर देख लीजिए। किसी भी इस्लामिक मुल्क में अमनों–चैन नहीं है। कौम ग़रीबीयत, बदहाली, लाचारी और आतंक में बसर कर रही है। इसकी जिम्मेदारी आप किसके ऊपर रखेंगी–इस्लाम या कुरान।'

जुबैदा कानों पर हाथ रखकर– 'तौबा! तौबा! मुझे यकिन नहीं होता, आप मुसलमान होकर कुरान के ख़िलाफ बोल सकते हैं।'

हाफ़िज़– 'मैं किसी के ख़िलाफ़त में नहीं बोल रहा हूँ। जीवन के तजुर्बे, अनुभव और प्रत्यक्ष देखी बता रहा हूँ। कुरान की अच्छी बातों का मैं क़दर करता हूँ। उसे अपने जीवन में उतारता भी हूँ। उसी तरह अमेल बातों का विरोधक हूँ।'

जुबैदा चुपचाप मैच देखने लगती। वह दाम्पत्य जीवन में कलह उत्पन्न नहीं करना चाहती थी। पर हर बार वही नहीं दबती, जब वह अपने प्रवाह में बहने लगती, तो हाफ़िज़ को सामंजस्य करना पड़ता। उनके ख़ुशहाल दाम्पत्य जीवन का यही मूलमंत्र था।

शौहर की बातें सुनकर ज़ुबैदा तिलमिला कर बोली– 'न जाने आपका दिल कैसा है! इस वक्त आपके ऊपर कौन–सा भूत सवार हो गया है। दो–चार दिन की गहमा–गहमी है। बाद को सब शांत हो जाएगा। तब पछताने से भी वापस न आएगा। एक ही मोबाइल है, जला डालोगे तो कहीं बात कैसे करेंगे ? पन्द्रह हजार का है, कोई ख़ैरात का नहीं। अपने देश का बना यही मोबाइल लेने जाओ तो बीस–बाईस हजार से कम का नहीं मिलेगा। यहाँ की कम्पनियाँ अपने सामान सस्ते दर पर न बेचे, बराबर मूल्य पर बेचे तो कोई क्यों विदेशी सामानों का क्रय करता। अमीरों को छोड़ दिया जाए तो ग़रीब आदमी को जहाँ दो पैसे रिफ़ाह मिलेगा वहीं जाएगा। सारा नम्बर और फोटो भी इसी में है।'

सईद दुखी मन से– 'यह तो देश से गद्दारी हुई। नंबर कहीं डायरी में टाँक लो या नम्बर और फोटो मेमोरी कार्ड में रख लो।'

ज़ुबैदा– 'अभी टाँकने बैठूं तो घंटों लग जाएगा। यह कुछ दिनों की ख़ुमारी है। हजारों–लाखों का नुकसान क्यों करें ? हाँ, इस बात की ताकिद रखनी चाहिए, आगे से ग़ैर आतंकी मूल्कों की आसबाबों की ख़रीद न की जाए। जला तो देंगे, पर इसकी भरपाई करने में वर्षों लग जाएगा। पता न भरपाई हो पाएगा भी या नहीं। मैं तो कहती हूँ उन नीच आतंकियों को मार देना चाहिए। इसमें तो अपना ही नुकसान है।'

जुबैदा एक भारी झोले को मज़बूत हाथों से पकड़े अनिश्चित दशा में खड़ी थी। पाकिस्तान में उसके अपने कई संबंधी रहते थे। देश के आजादी के बाद उसके अपने खाला, ताऊ और कई संबंधी पाकिस्तान में जाकर बस गये थे। वहाँ से कितने ही क़ीमती, ख़ूबसूरत और दिल को मोह लेने वाली सामान लाई थी। उधर से कभी कोई आता तो कुछ–न–कुछ लेकर ही आता। उन वस्तुओं को देखकर आँखों को अपार ख़ुशी और आनन्द मिलता। पड़ोसिनों को दिखाकर प्रसिद्धि और वाह–वाही लूटती,

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

उनकी नज़रों में असाधारण बनी रहती। आज उन्हें इस तरह देते इसके हाथ कांप रहे थे। उन सामानों से उन्हें एक विशेष आत्मीयता और लगाव हो गया था। रोनी सूरत बनाएँ उन सामानों को पति की तरफ़ बढ़ाकर बोली– 'इस देश में इतनी घूसखोरी, बेईमानी, चोरी और दलाली न होती तो यहाँ के सामान भी उतने ही सस्ते होते।'

हाफ़िज़– 'यह इतना आसान नहीं है जुबैदा, जितना तुम समझती हो। फ़ौज़ अपना काम कर रही है। किसी मुल्क पर आक्रमण करने पर सैनिक और आतंकवादी से ज्यादा साधारण निर्दोष जनता मरती है। अब तलवार–भाले का युग नहीं रहा। यह परमाणु युग है। बर्बाद नहीं पूरा विनाश करता है। मुल्क के मुल्क ख़त्म हो जाएँगे। इससे तो अच्छा यही है कि उनके सामानों का बहिष्कार कर उन्हें आर्थिक रूप से कमज़ोर कर उनकी कमर तोड़ दिया जाए।'

ज़ुबैदा– 'इन सामानों के पैसे तो हमने दे दिये हैं। अब आप इसे जलाओ या दफ़नाओं, उन्हें कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। पैसे लौटने से रहा।'

यहाँ भी उनके विचारों में मतभेद था। ज़ुबैदा असबाबों के जलाने के विरोध में थी। उसका मानना था आगे से इन वस्तुओं को न ख़रीदा जाए। जिनके पैसे हमने दे दिये हैं, उसे लजाने से अपना ही नुकसान है। हाफ़िज़ इसके विपरीत, किसी विदेशी वस्तु को रखने के पक्ष में नहीं थे।

हाफ़िज़ कुछ देर असमंजस में रहने के बाद बोले– 'याद है, एक बार फ़ातिमा खाला की बहू से कुछ बात को लेकर तुम्हारी उनसे ठन गयी थी। तब से आजतक तुमने फिर कभी उनसे बात नहीं की, ना मिलती हो, ना उनकी चर्चा सुनना चाहती हो। तुम्हें उनके नाम से ही चिढ़ है। तुम उस समय आग–बबूला थी। मैं समझाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। किसी की एक न सुन रही थी। उसी वक्त अपने मोबाइल से उनके सारे फोटो और नंबर हटा दिया। उनके द्वारा दी गई कपड़ों को, सारी वस्तुओं को, घर आते ही भिखारियों में बाँट दिया। कई चीज़े तो जला डाली। आख़िर ऐसा क्यों बेगम ? तुमने एक मिनट भी यह नहीं सोचा, कितनी कीमती वस्तुएँ थी। कितने प्यार और सम्मान से तुम्हें दिया गया था। उन वस्तुओं को पा कर तुम फूले न समायी थी। बग़ैर कुछ सोचे पल भर में सब तहस–नहस कर दी।'

जुबैदा की नसें तन गयी, भौहें सिकुड़ गयी। आवेश में बोली– 'प्रतिष्ठा और जिद्द के आगे दुनिया की सारी नेमतें, यहाँ तक की अपना प्राण भी तुच्छ हो जाता है। उसने मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचायी। मुझे

ही नहीं आपको भी भला–बुरा कहा। मुझे उसकी शक्ल से नफ़रत है। उसका फोटो, नम्बर और आसबाब मेरे अंदर के क्रोध को बढ़ाता, मुझे उसकी याद दिलाता। इसलिए मुझे यह सब करना पड़ा। मैं उससे किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं रखना चाहती।'

हाफ़िज़ भावावेश में– 'उसने केवल तुम्हें भला–बुरा कहा! यहाँ हमारे सैनिकों को कायरता से मार दिया गया है, तो क्या हम हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप बैठे रहे ? इस देश में आन पर जान देने की परम्परा रही है। उन शहीद सैनिकों में एक हमारा बेटा होता तो भी क्या तुम यही बात कहती ? क्या तुम्हारा व्यवहार यही रहता ? शहीद होने वाला हर एक वीर किसी–ना–किसी का बेटा और लाल है। हमारी हिफ़ाज़त करते हुए वह मारा गया है। उनके प्रति हमारा कोई कर्त्तव्य, कोई फ़र्ज़ नहीं बनता ?'

जुबैदा पराभूत हो गयी। मन के भाव वही रहे, पर तर्काभाव ने हथियार डालने पर मज़बूर कर दिया। वह यह न कह सकी कि दूसरे गाँव में जब कोई मरता है तो आप रोते नहीं, न दुःख व्यक्त करते हैं। आपके घर में रोज़ की तरह खाना बनता है। वह भी आपके ही देश का एक कौम है। मोबाइल को थैले में डालकर काँपते हाथों से शौहर की तरफ़ बढ़ाया। आँसू भरी आँखों को पति से छुपाना चाहती थी। हाफ़िज़ आँसुओं को देख लिए। उन्हें जुबैदा पर दया आयी। वह असमंजस में पड़कर बोले– 'मन हो तो रख लो। मगर यह समझना, चौवालिस लाशों के ग़म और आसुओं को भूल रही हो।' इतना कहते–कहते गला भर गया, आवाज़ न निकली।

सहसा दरवाज़े से सेवासभा के सदस्य पंडित दीनदयाल बोले– 'मौलाना साहब, जल्दी करिये। आधा मुहल्ला अभी बाक़ी है। चार में दो ट्रक भर के चला गया। दरवाज़े पर पड़ा सारा सामान ट्रक में डलवाए देता हूँ।'

हाफ़िज़ जी दरवाज़े तक आकर बोले– 'पंडित जी, यहाँ पड़ा सारा सामान ट्रक में डालकर आप लोग दूसरे घरों से इक्ट्ठा कीजिए। मैं बाक़ी सामान अभी लिए आता हूँ। आप तो औरतों का स्वभाव जानते ही हैं।'

दीनदयाल– 'जानता हूँ हाफ़िज़ जी, मेरे यहाँ भी यही रोना था। मैंने साफ कर दिया, इस घर में भारत विरोधी देशों का सामान रहेगा तो मेरा रहना नहीं हो सकेगा। अगर एक–दो सामान जो बहुत प्रिय हो रखना चाहें तो रख लेने दीजिए।'

हाफ़िज़– 'ये आप क्या कह रहे हैं पंडित जी! जिस मातृभूमि और देश के लिए मैंने इस्लाम की परवाह नहीं की, मुझे काफ़िर की उपाधि से

नवाज़ा गया। उससे गद्दारी करने की मैं सोच भी नहीं सकता। मैं ख़ुदा के सिवा माता और मातृभूमि दोनों की वंदना करता हूँ। जब हम इस्लाम के ख़िलाफ़ नशा कर सकते हैं, ईमान का सौदा कर सकते हैं, नीच–से नीच कार्य कर सकते हैं, हजारों कर्मों में कुरान के विरूद्ध जा सकते हैं तो ख़ुदा के सिवा किसी और की वन्दगी क्यों नहीं कर सकते ? अल्लाह जो कि निहायत रहमवाला और बेहद मेहरबान है, तो फिर उनके नाम पर दिलों में ख़ौफ़ क्यों पैदा किया जाता है। मैंने हिन्द की धरती, यहाँ की मिट्टी को ही अपना ख़ुदा मान लिया है। आप कुरैशी जी के यहाँ चलिए मैं अभी आता हूँ। जुबैदा की इच्छा है, वह भी मेरे साथ चलेगी।'

"मौलाना साहब! केवल आपको देख लेने से मेरे अंदर जोश, उत्साह और साहस भर आता है। मैं सफलता–असफलता से परे हो जाता हूँ। आप साक्षात् गीता है। भौजाई आ रही हैं! यह तो बड़ी ख़ुशी की बात है। नमन है ऐसी देवियों के साहस और शौर्य को। यह कहकर पंडित जी अपने सहयोगियों के साथ कुरैशी के यहाँ चल पड़े।"

जुबैदा– 'मैंने कब कहा, आपके साथ जा रही हूँ ? आप मुझे काँटों में घसीट रहे हैं।'

"मेरे कहने से चलो। एक बार देख तो लो, नगर के सारे लोग इकट्ठा हुए हैं। दूर–दूर से भी लोग आये हुए हैं। एक बार तुम भी उन वीर सपूतों के अंतिम दर्शन कर लो।"

गाँधी मैदान जाने की जुबैदा की ज़रा भी इच्छा न थी। उसे सामानों के जलाये जाने का गहरा दुःख था। नमाज़ नागा होने का डर भी था। अंदर–ही–अंदर कुढ़ रही थी। पति पर जल–भुन रही थी। पंडित से कहा न होते तो वह जाती भी नहीं। अब न जाने से भी इनकी ही बुराई होगी। लगभग बीस मिनट के उपरांत, हाफ़िज़ सामानों से भरा बड़ा थैला लिये जुबैदा के साथ गाँधी मैदान की तरफ़ चले।

रास्तों में मेले की–सी भीड़ थी। इतनी भीड़ तो दशहरा, मुहर्रम, होली और ईद में भी देखने को नहीं मिलती। लोग स्वेच्छा से, हाथों में विदेशी सामानों को लटकायें लिये जा रहे थे। वह सोच रही थी, लोग बौरा गये हैं। ख़ून–पसीने की कमाई को यूँ ही बर्बाद कर रहे हैं। इसका ध्यान रखें, आगे से न ख़रीदूँगा। मर–मर के हड्डी तोड़ कमाई वस्तुओं को जलाना नीरे अहमक वाली बात हुई। इन्हें कौन समझाए ? अपना ही लेकर बैठ जाते हैं। देखो, कितने ख़ुश है, गोया कोई क़िला फ़तह कर लिया हो। सहसा उसे सलमा दिखायी पड़ी। उसके सर पर मुँहबँधा भारी बोरा था।

साथ में कई औरत–मर्द और बच्चे भी थें। उसने बुरक़े के अंदर से उसे बुलाकर पूछा–'अरे सलमा ! यह बोरा भर कर सामान लिए कहाँ जा रही है ?'

वह गर्व से ऊँची होकर बोली– 'विदेशी सामानों की होली जलाने मालकिन। नगर में कोई बाक़ी नहीं है। आप जैसे बड़े लोग इतना त्याग कर सकते हैं तो देखा–देखी हम...भी...थोड़ी... हिम्मत ? साहब की शहर में बड़ी इज़्ज़त है। भला ऐसे लोग हैं तो हमें किस बात का ग़म है !'

हाफ़िज़– 'ऐसा लगता है, तू घर का सारा सामान उठाकर ले आई। ये अब्दुल अपना खिलौना लिये कहा जा रहा है ?'

अब्दुल अम्मा के पैरों से लिपट गया। उसे डर था उसका ख़िलौना कोई ले लेगा। सलमा सर के बोझ को सम्भालती हुई– 'अरे! डरता क्यों है बेटा ? इन्होंने ही ईद पर तुझे कपड़े दिए थे। साहब कहता है– हमारे भइया को मारा है, हम उसका ख़िलौना नहीं रखेंगे। हम भी अपने ख़िलौने की होली जलाएँगे। मैंने कितना समझाया, पर नहीं माना, साथ हो लिया। हम ग़रीब सस्ता सामान लेते हैं साहब। यहाँ की सरकारें कुछ ऐसा क्यों नहीं करती कि यहीं का बना सामान हमें उसी दर पर मिल जाए।'

हाफ़िज़ इन गँवार, ग़रीब, मुख्यधारा से छूटे लोगों की जागरूकता और राष्ट्रप्रेम देखकर दंग रह गये। उसके अंदर ख़ुशी और उन्माद की लहर दौड़ गयी। बोले– 'इसके बारे में भी सरकारें सोच रही हैं। हम चकाचौंध में पड़ गये हैं। हमें देशी चीज़ों के उत्पादन, उपयोग, उपभोग पर ज़ोर देना होगा। हम बचपन में ताड़ के पत्तों की घीरनी बना कर नचाते थे, लकड़ी और मिट्टी की घराड़ी बना कर खेलते थे। उसमें जो मज़ा और आनन्द था वह आज असली महँगी–से–महँगी गाड़ियों में भी नहीं। मुझे गर्व है, तुम्हारी देशभक्ति और अब्दुल के त्याग पर।'

सलमा– 'हम छूँछे खाकर, भूखे भी रह लेंगे; पर उन हत्यारे, निशाचरों के सामान को हाथ न लगाएँगे।'

हाफ़िज़ का मन बाँसों उछलने लगा। आँखों में नीर आने से सामने का दृश्य धुँधला दिख रहा था।

सलमा पतिविहीन, दूसरों के यहाँ झाड़ू–पोछा लगाकर इतना त्याग कर सकती है। यह जुबैदा के लिए किसी आश्चर्य से कम न था। वह जितना सोची थी, उससे कहीं अधिक जन–समूह पक्ष में था। झुंड के झुंड लोग गाँधी मैदान की तरफ़ चले जा रहे हैं।

जुबैदा पति के साथ जब गाँधी मैदान के बड़े से अहाते में पहुँची तो अंधेरा होने लगा था। मेले की–सी भीड़ थी। मैदान के बीचों–बीच शहीद जवानों की अर्थियों को रखा गया था। दूसरे कोने में विदेशी सामानों की होली जलायी जा रही थी। जहाँ ऊँची–ऊँची लपटें उठ रही थी। भारत माता और शहीदों के जयकारे के नारे गूँज रहे थे। बड़े–बड़े लोग आये हुए थे। हाफ़िज़ सामान को एक तरफ़ रख कर शहीदों के दर्शन को पहुँचे। इन्हें देखते ही अदब के साथ कई लोग आकर खड़े हो गए। वहाँ नेता, अधिकारी और समाज सेवक जाकर सर झुका लेते। उन्हें सलामी देते और अश्रुसिंचित नेत्रों से उनके परिवार वाले को सांत्वना देते। इतना आदर, सम्मान और इतनी श्रद्धा तो ईश्वर के लिए भी नहीं होती। वहाँ पहुँचते ही जुबैदा शहीदों के पत्नी, बच्चों और परिजनों को देखकर विह्वल हो गयी। शरीर का क्षत–विक्षत होना उसे चंचल कर दिया। बच्चों का मासूम चेहरा, पत्नी का विलाप, माता–पिता का पछाड़, उसके साथ ही हजारों–लाखों लोगों का दुःख और आँसू से भरा हुआ, बदले की आग से जलता तन देखकर सिहर गयी। बुर्के में अर्थी के पास आधा घण्टा तक बेसुध बैठी रही। हाफ़िज़ क्षुब्ध संतापित मन से– 'ज़ल्दी करो जुबैदा, तुम्हारी नमाज़ का वक्त हो रहा है।' हाफ़िज़ का गला भारी था।

जुबैदा उफनती आँखों से एक नज़र पति को देखी। उसके नेत्र आँसुओं से भरे थे। वह स्वयं को रोक न सकी। फूट पड़ी। आँसुओं की धार बुर्क़ानशी कपोलों को गीला कर रहा था। मानो सामने तिरंगे में लिपटा क्षत–विक्षत शव उसके अपने बेटे का हो। यह अश्रु उसके अंतःकरण के तम को प्रकाशमान कर रहा था। रूह का एक–एक अणु प्रज्वलित हो उठा। वह उस जगह पहुँच गयी थी, जहाँ अद्वैत ही शेष रह जाता है।

एकाएक उठी, सामान के थैले के पास जा पहुँची। उसे ले जाकर अग्नि के हवाले कर दी। उसके हाथ काँपे नहीं। उसने एक मिनट का भी संकोच नहीं किया। चेहरे से एक दृढ़ता और संकल्प झलक रहा था। उसने अपना बुर्क़ा भी उसी में डाल दिया। इन असबाबों के साथ उसने अपनी कमज़ोरियों और आडम्बरों को भी जाला डाला था। वह पीछे मुड़ी तो हाफ़िज़ सामने खड़े मुस्कुरा रहे थे। उसके चेहरे पर उदासी, निराशा, दुःख और चिंता की रेखा न थी। उसकी जगह आत्मसंतुष्टि, प्रसन्नता, ज्योत्सना और तेज़ आ गया था।

हाफ़िज़– 'ज़ल्दी चलो बेगम, नमाज़ का वक्त बीता जा रहा है। सुनो, अज़ान हो रहा है।'

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

जुबैदा– 'नमाज़ ख़ुदा तक पहुँचने का एक साधन मात्र है। आज मुझे ख़ुदा के प्रत्यक्ष दर्शन हो रहे हैं। लोगों के, पूरे एक कौम और एक मुल्क के हिफ़ाज़त में जिसने अपनी जान कुर्बान कर दी, वह क्या किसी ख़ुदा से कम है ? आज मैं यहीं सज़दा करूँगी।'

"असबाबों के जल जाने से मुहल्ले की महिलाओं में इज़्ज़त कम न हो जाएगी ? तुम्हारी मन–पसंद की कई वस्तुएँ जल गयी।"

प्रसन्न मुख से –"बिल्कुल नहीं, उल्टे और बढ़ गयी। आज होली न जलाती तो जीवन भर अपने को माफ़ न कर पाती।"

आश्चर्य यह कि दुःख की इस घड़ी में भी राजनीति हो रही है। वोट के खेल खेले जा रहे हैं। कई पार्टियों द्वारा आपस में आरोप–प्रत्यारोप हो रहे हैं। चुनावी रोटियाँ सेंकने की कोशिश की जा रही है। दो महीना बाद चुनाव है। लोग धीरे–धीरे शहीदों और उनकी शहादत को भूलते जा रहे हैं। दो महीने पहले जो उनके दिलों में आग थी, वह अब ठंडी पड़ चुकी है। लेखक और कवि ख़्याति के पीछे भागने लगे। प्रकाशकों को बिक्री की चिंता सताने लगी। वहीं सेवासभा के सक्रिय सदस्य नेताओं के पीछे, चुनाव प्रचार में लग गये। लोग अपने निजी स्वार्थ और परिवार भरण–पोषण की फ़िक्र में जुट गये। देश और देशभक्ति की चिंता से कौम मुक्त हो गयी थी। उन शहीदों और उनके परिवार को भूल गये। पेंशन और मुआवज़े के लिए उनकी विधवा पत्नी, गोद में बच्चे को लिए दफ़्तर की चौखटे नाप रही है। उनके बूढ़े पिता–माता दर–दर की ठोकरें खा रहे हैं। घर में पैसे–पैसे की तंगी है। परिवार का भरण–पोषण तथा बच्चों के शिक्षा–दीक्षा के लिए मज़दूरी करने को मज़बूर है। कभी अख़बारों में छपी बड़ी–बड़ी तस्वीरें और उससे भी बड़ा नेताओं, पूँजिपतियों और लोगों द्वारा किया गया वादा सब रद्दी के नीचे दब गया।

सेवासभा के कुछ सदस्य हैं जो आज भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह पूरी ईमानदारी और निष्ठा से किये जा रहे हैं। इनकी रग–रग में सच्ची सेवा और राष्ट्रप्रेम का जुनून सवार हो गया है। युग आते हैं, युग जाते हैं पर वे अपनी निष्ठा में अडिग रहते हैं। वे जहाँ, जिस स्थिति में जैसे भी रहते हैं वहीं अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह किये जाते हैं। किसी पार्टी, ओहदा, उत्साह–हतोत्साह, सफलता–असफलता, प्रसिद्धि, ख़्याति, धन–सम्पदा उनके कर्म और निर्णय को विचलित नहीं कर पाती। दीनदयाल और हाफ़िज़ जैसे हजारों लोग, हर समय में होते रहे हैं। उन्हीं चंद लोगों के बल पर देश और राष्ट्र टिका रहता है।

कहानी

ग्रीनकार्ड

डॉ. कृष्णा खत्री

सिन्हा साहब कॉलेज प्रिंसिपल थे, अभी हाल ही में रिटायर हुए हैं। उनकी जीवनसंगिनी आज से चार साल पहले ही उनका साथ छोड़ गई। औलाद के नाम पे इकलौती बेटी नेहा, जिसकी पांच साल पहले शादी हो गई थी। पांच साल से ही अपने पति के साथ अमेरिका में है। बस एक बार आई थी, मां के न रहने पर। उसके बाद तो उसने अपनी शक्ल भी नहीं दिखाई। वह खुद भी इंजीनियर है, और पति नीरज गाइनोकोलोजिस्ट। दो बच्चे हैं, दोनों बेटियां। एक साढ़े तीन साल की है और दूसरी दो साल की। अपनी गृहस्थी व कामकाज में रमी हुई है। सो पिता के पास आने की तो फुर्सत नहीं है। फिलहाल... हफ्ते में दो बार कर लेती है। वीडियों कॉल के कारण लगता नहीं... पास में नहीं है। फिर सिन्हा साहब खुद भी अपने कॉलेज में बिजी रहते हैं। और चंदू, उनका पुराना नौकर जो अपने ही शहर से बल्कि अपने घर से लाये थे। उनका पुराना नौकर किसना, जो अक्सर उनसे कहता रहता– 'बिट्टू बाबू, हमारे चंदू को अपने साथ ले जाओ, कुछ सीख लेगा। यहां तो दिन भर गोटी खेलता रहता है।' तब से उनके साथ ही रहता है। दोनों में एक प्रकार का अपनापा है। उसे उन्होंने पढ़ना–लिखना भी सिखाया है। उसकी पगार बैंक में जमा करते हैं। यानी कि चंदू और उसका पिता दोनों खुश हैं, और सिन्हासाहब भी। इस तरह पत्नी के बाद भी उन्हें कोई परेशानी महसूस नहीं हुई। फिर भी अकेले तो पड़ ही गये थे। यह सब खलता तो था ही।

नेहा अक्सर कहती रहती– 'पापा, अब सर्विस छोड़कर यहां आ जाइये, आपकी चिंता लगी रहती है।'

'नहीं बच्चा, मेरी चिंता मत करो। आय एम फिट एंड फाइन। ...और फिर अब तीन साल की सर्विस ही तो बची है। मेरी

देखभाल करने, देखने व संभालने के लिये चंदू तो है ही। वह पक्का है अपने काम का, हर वक्त डंडा लेके खड़ा रहता है। एक दिन मैं लेट हो गया... तो पता है उसने क्या किया– मुझे तो कुछ नहीं कहा, खाना भी खिला दिया, मगर बोला एक शब्द भी नहीं। और गुस्से में खुद ने खाना भी नहीं खाया। यह तो मुझे रात के बारह बजे पता चला, तो बड़ी मुश्किल से मनाकर खाना खिलाया। और मुझे वादा करना पड़ा कि आइन्दा ऐसा नहीं होगा। ...उसका भी कोई नहीं है! किसना काका भी चल बसे हैं। अब वह मेरी जिम्मेदारी है, फॅमली का हिस्सा है।'

'फिर भी पापा छोड़ दो ना सर्विस!'

'अरे नहीं प्रिसेंस, अभी नहीं रिटायरमेंट के बाद सोचूंगा! बल्कि जैसा तू कहेगी।'

बात आई गई हो गई। बाद में फिर एक बार उनके रिटायरमेंट पे आई थी, देखा– चन्दू सब अच्छा ही कर रहा है। वैसे वह लगभग सिन्हा साहब के पास बाारह साल से है। फिर भी वह चाहती है कि उसके पापा अब उसके साथ रहे। इस बारे में अपने पति नीरज से बात की तो उसने ना तो नहीं कहा, मगर भाव में अनमनापन था, जरा भी रजामंदी नहीं थी। फिर इतना ही कहा– 'यहां उनका मन लगेगा ? फिर मेरे पैरेन्ट्स आयेंगे तो वे ऑक्वर्ड फील करेंगे।'

'तो क्या तुम चाहते हो कि मैं अपने पापा को न देखूं... और फिर उनका है भी कौन ? क्यूं... तुम्हारे पैरेन्टस आ सकते हैं, तो मेरे पापा क्यूं नहीं ? तुम्हारे तो दो भाई और हैं... मेरे पापा की तो मैं अकेली संतान हूँ!'

'नेहा मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा, बस अपना व्यू बताया है।'

'मैं खूब समझती हूँ, सफाई देने की कोई जरूरत नहीं है।'

'लेकिन तुम बात का बतंगड़ क्यूं बना रही हो ? मैंने तो एक संभावना व्यक्त की है, मगर तुम तो...। मैं यह थोड़े ही कह रहा हूँ कि तुम पापा को मत देखो... ऑफकोर्स तुम्हें देखना ही चाहिये। मेरी भी कोशिश तो यही रहेगी कि जब पापा हों तो मॉम और डैड को नहीं बुलाऊं, ताकि किसी को भी ऑक्वर्ड न लगे।'

इस तरह दोनों के पैरेन्ट्स को लेकर नेहा और नीरज में गाहे–बगाहे बहस होती रहती।

आखिरकार सिन्हा साहब के आने की तैयारी हो ही गई। चंदू से कहा– 'इस बार तू यहीं रह! तेरा सारा बंदोबस्त करके जाऊंगा, वापस आने पर तेरा भी पासपोर्ट बना लूंगा।' तब हम दोनों जहां जायेंगे, साथ ही जायेंगे। चंदू दुखी तो बहुत था, पर और कोई चारा भी नहीं था।

'...और हाँ, सावधानी से रहना, अपना ख्याल रखना। यह समझ इस घर में हम दोनों ही फॅमली मेम्बर हैं, तो पीछे ठीक से रहना। नेहा के पास ज्यादा से ज्यादा एक–दो महीने रहूंगा... ओके!'

'ठीक है भैयाजी, आप निश्‍चिंत होकर जाइये। ये लीजिये सौ रूपया... बच्चों को और सौ बिटिया को मिठाई का दीजियेगा।'

ले लिया, उसका मन नहीं दुखी किया। वे समझ रहे थे, वहां इन दो सौ रूपयों की भला क्या वेल्यू। फिर भी प्रेम की सौगात थी।

नेहा न्यूयार्क में रहती थी। रिसीव करने बेटी, दामाद व बच्चे सभी आये थे। आज पन्द्रह सालों बाद न्युयार्क आये थे। पन्द्रह साल पहले कॉन्फ्रेंस में आये थे। तब आठ दिन का डेलीगेशन था। इस बार सोच रहे थे कि नायग्रा वगैरह सब खास–खास जगहों पर विजिट करेंगे। एक हफ्ता तो अच्छा ही गुजरा...। पता नहीं क्यों... बाद में उन्हें अच्छा नहीं लगता। ऐसे तो कुछ खराब नहीं था, फिर भी ऐसा कुछ था जो सिन्हा साहब को ऑक्वर्ड लग रहा था।

नेहा ने कहा– 'पापा, आपके ग्रीनकार्ड के लिये अप्लाई करते हैं... क्यों नीरज!'

'अच्छा... हाँ, हाँ, अच्छा रहेगा।'

मगर इन चंद शब्दों में कुछ तो था, जो सिन्हा साहब को चुभ रहा था। फिर दिमाग को परे झटक दिया। और भूल गये। लेकिन ऐसा कुछ हो जाता, जो उन्हें भूलने नहीं देता।

21 सितम्बर को नेहा को बर्थडे था।

'पापा चलिये बाहर सेलिब्रेट करेंगे।'

सब खुशी खुशी गये। बेटी बार–बार पूछ रही थी– 'पापा आप क्या लेंगे ? आपके लिये क्या आर्डर करूं ? पिज्जा या इंटालियन पास्ता, या फिर मेक्सीकन फूड ट्राई करेंगे। थोड़ा तीखा होता है, शायद आपको पसन्द आयेगा।'

सिन्हा साहब कुछ बोलें, उससे पहले नीरज बोला– 'अरे पापा को कया मालूम... क्या ट्राई करना है! तुम्हें पापा का टेस्ट मालूम है, तुम ही आर्डर कर दो।'

'हाँ बेटा, तू अपनी पसंद से मंगा ले।'

पिज्जा और पास्ता दोनों मंगाया था। दो–चार बाइट लेने के बाद नेहा ने पूछा– 'पापा क्या पसंद आया ?'

सिन्हा साहब ने कहा– 'दोनों ही ठीक हैं।'

नीरज बोला– 'तो भी... एक कम ज्यादा अच्छा होगा ना! पास्ता अच्छा लगा ?

'ठीक है।'

'लगता है, आपको अच्छा नहीं लगा।'

'नहीं नहीं... मैं कह तो रहा हूँ– ठीक है।'

'पर जिस तरह से कह रहे हैं, उससे साफ पता चलता है कि पसंद नहीं आया।'

'नहीं भई, ऐसी बात नहीं है। खा तो रहा हूँ।'

'यहां इस तरह से जोर से नहीं बोलते। लोग सोचेंगे, आप झगड़ा कर रहे हैं।'

'अब आवाज ही ऐसी है, तो क्या करें! फिर इसी आवाज की तो रोटी खाई अब तक, तो भला अब कहां से उसमें कृत्रिमता आयेगी। जो है, जैसी है... वही तो रहेगी, वैसी ही तो रहेगी।' सिन्हा साहब को यह सब कहीं न कहीं चुभ रहा था, फिर भी आगे बोले कुछ नहीं, चुप हो गये। नेहा को भी नीरज की बातें अखरीं, पर वह भी चुप रही।

घर आने के बाद फ्रेश होकर सब अपने–अपने रूम में सोने गये, तो नेहा ने कहा– 'नीरज, तुम पापा से किस तरह की बात कर रहे थे ? वे क्या सोच रहे होंगे! देखा नहीं, एकदम सैड हो गये थे।'

'देखो, मैंने ऐसा तो कुछ नहीं कहा। अब तुम यह पापा–पुराण छेड़कर मेरा मूड ऑफ मत करो।'

इस तरह कुछ ने कुछ चलता रहता। अधिकतर घर में रेडीमेड फूड आता और फ्रिज उससे अटा रहता। सिन्हा साहब ने एक दिन नेहा से कहा– 'बेटा फ्रिज में इतना क्यों फ्रोजन फूड भर देते हो ? कई बार तो खराब भी हुआ है, तुमने फेंका भी है।

एक–दो दिन में तो जाना होता ही है, लिमिट में लाओ। ये जो रायता–बूंदी है, उसमें पुराने तेल की स्मेल आ रही है। कब का है बेटा ?'

नेहा तो कुछ नहीं बोली, नीरज बोला– 'देखिये पापाजी, हम तो ऐसा ही खाते हैं। हमें बासी का, नये–पुराने का पता नहीं चलता।'

सिन्हा साहब को बहुत बुरा लगा– 'देखो नीरज, इस तरह की बात क्यूं करते हो ? जब मैं चुप रहता हूँ, तब भी तुम्हें प्रॉब्लम... और कुछ कहता हूँ तब भी प्रॉब्लम...। क्या पता किसी को कब क्या बुरा लग जाय, इसलिये मैं चुप रहता हूँ। तब भी तुम्हारी शिकायत और मेरे बोलने पर भी तुम्हारी शिकायत।' फिर सॉरी बोलकर सिन्हा साहब वहां से उठ गये।

अब इन सब बातों को लेकर बेटी–दामाद में गर्मागर्म बहस होती। एक महीना गुजरा, मगर सिन्हा साहब ने बोझ तले गुजारा। यह महीना भी साल जैसा लग रहा था। उसी रात....रात भर सोचते रहे। नींद नहीं आई। अंत में निश्चय किया कि अब चले जाना चाहिये। टिकट तो दो महीने की है। चेंज कराने की बजाय एक महीना यू.एस.ए. का टूर कर लेता हूँ, और फिर वहीं से फ्लाइट लेके चला जाऊंगा। यहां अब रहना नहीं चाहिये। बेटी अपनी है, मगर दामाद तो पराया है। ...और फिर मेरे कारण इन लोगों में आये दिन झगड़े होते रहते है। साथ ही ग्रीन कार्ड का ख्याल भी झटक दिया। फिर खुद से ही बोले– अरे भाई, इतना लम्बा–चौड़ा और सुन्दर अपना भारत है, भारत–भ्रमण करेंगे। ये सारे पैसे कब काम आयेंग... बेचारे चन्द्र को भी साथ ले लेना। और इन्हीं ख्यालों से गुजरते–गुजरते जाने कब नींद आ गई। सुबह उठने पर सारे बादल छट चुके थे। असमंजस भी खत्म हो गया।

उधर नीरज परेशान था कि ग्रीनकार्ड के बाद तो और मुसीबत हो जायेगी। मुझे नेहा को मना करना पड़ेगा। आखिर उसने अपना मंतव्य नेहा को बता दिया। नेहा बिफर पड़ी– 'तो ठीक है, अपने मां–बाप के बारे में आगे से मुझसे जरा भी बात नहीं करना। अगर मेरे पापा की तुम्हें परेशानी है, तो तुम्हारे मां बाप की परेशानी मुझे भी है।'

नेहा नीरज में जंग चल रही थी कि सिन्हा साहब बाहर आये। उनके बॅडरूम से आती आवाजों से हैरान हो गये। वे तो पहले ही निर्णय ले चुके थे, फिर भी... पर इनको भी कहां पता है, मैंने बताया थोड़े ही ना है!

थोड़ी देर में किचिन में गये और सबके लिये चाय बनाई। फिर नेहा नीरज को आवाज दी। सबने मिलकर चाय पी। चाय के दौरान सिन्हा साहब ने कहा– 'मैं दो महीने के लिये आया था। एक महीना तुम लोगों के साथ रह लिया, और अब एक महीने का यू. एस.ए. टूर कर लेता हूँ। मैंने बुकिंग वगैरह कर ली है... बस परसों जाऊंगा। इस तरह प्लान किया है कि आकर एयरपोर्ट से डायरेक्ट ही फ्लाइट ले लूंगा!'

'क्या पापा, आपने पूछा भी नहीं... और इस तरह... फिर आपके ग्रीनकार्ड के लिये भी तो अप्लाई करना है।'

'नहीं बेटा, जिन्दगी बची ही कितनी है! जितने साल है, अपना देश घूमूंगा। समय रहा तो फिर अन्य देश...।'

नीरज के चेहरे की तल्खी जाने कहां चली गई। खुश खुश बोला– 'दिस इज नॉट फेयर पापाजी! आपने अकेले ही टूर बना लिया। कहते तो हम भी चलते।'

'तो अब कौन सी देर हुई है। तुम लोगों की बुकिंग भी कर दूं ?'

'नहीं नहीं अब तो फिर कभी... मेरा हॉस्पीटल का इन दिनों वर्कलोड ज्यादा है।'

नेहा भी जानती थी और सिन्हा साहब भी कि यह सब दिखावा था। ...कहीं नेहा ने भी हल्का महसूस किया।

'लेकिन पापा, यहां आकर दो दिन रुककर जाइयेगा।'

'नहीं प्रिंसेस सब हो गया है, अब क्या हो जायेगा दो दिन में। महीना भर तो तुम लोगों के साथ रह लिया। जिन्दा रहा तो फिर कभी...।'

'पापा प्लीज!' कहते हुए नेहा को रोना आ गया।

सिन्हा साहब भी खुद को रोक नहीं पाये। बेटी को बाहों में भर प्यार की बरसात कर रहे थे। संयत होने के बाद नीरज से बोले– 'नीरज, यह पगली समझती नहीं ना कि बेटी के घर बाप शोभा नहीं देता! लेकिन मैं तो इस तथ्य को समझता हूँ ना! खैर,

अपना और नेहा का ख्याल रखना। बच्चियों को खूब पढ़ाना, उन्हें अपने पांव पर खड़ा करना। बाप बेटी के बीच की फीलिंग तुम तब समझोगे, जब मेरी एज तक पहुंच जाओगे। और एक गुजारिश है... साल, दो साल में तुम लोग चक्कर लगाया करो। बच्चों को भी अपने देश का अहसास होगा। एक बात कहूं– उम्र के इस पड़ाव पर आकर तो मेरे जैसे लोग अपनी धरती पर ही भले! जहां का जर्रा–जर्रा जाना–पहचाना है।'

'...पापा क्या आप फिर कभी आयेंगे ही नहीं ?'

'क्यों... क्यों नहीं आऊंगा ? जरूर आऊंगा।'

'अरे भैयाजी आप आ गये। अब जाकर हमारी जान में जान आई। आपके बिना हमें तो जरा भी अच्छा नहीं लग रहा था।'

'चलो, अब तो आ गया हूँ... खुश!'

'वहां सब कैसे हैं ? बिटिया को मिठाई लेकर दी ?'

'हाँ दी ना! देख तेरे लिये तेरी बिटिया ने गर्म जैकेट भेजा है, सर्दियों के लिये।'

जैकेट देखकर चंदू फूला नहीं समा रहा था। पर सच तो यह न उन्होंने उसके पैसे नेहा को दिये, न ही यह जैकेट नेहा ने दिया था।

यहां जैसे खुले में सांस ले रहे हो। वहां इतना खुला, फिर भी घुटन... जगह नहीं! महत्वपूर्ण हैं रिश्ते और उन्हें निभाने की कला। जिसे रिश्ते निभाना आ गया, उसे जीना आ गया... और जेहन में चंदू उतर आया।

***

कहानी

भावना ठाकर
bt100564@gmail.com

मुझे भी हक है!

वृंदा के दिमाग की नसें फट रही थी जिनको वो अपने कह रही थी, उन्होंने आज जता दिया कि ये जमाना बदल गया है, वो पुरानी हो गयी है। आज की नयी पीढ़ी खुद को मानसिक तौर पर कुछ ज्यादा ही समझदार समझ रही है, उनको लगता है– माँ बाप पुराने जमाने के है। एक उम्र के बाद इनको कुछ काम शोभा नहीं देते। उनको अपने शौक मार देने चाहिए, ये नहीं करना चाहिए, वो नहीं करना चाहिए। जिन्हें मैंने सब कुछ सिखाया, आज वो मुझे सीखाने निकले है।

वृंदा के घर में कदम रखते ही दो बेटे ओर दो बहुओं के चेहरों पर अजीब से भाव आ गए, जैसे वृंदा कोई गलत काम करके लौटी हो। वृंदा ने किसी को नोटिस नहीं किया तो उनकी अकुलाहट ओर बढ़ने लगी। वृंदा ने टी वी ऑन किया, और नये सांग सुनने लगी। तो बड़े बेटे के दिमाग का पारा चढ़ गया। टीवी ऑफ करके वृंदा के सामने बैठ गया– 'मॉम ये सब क्या है ? आप आज कल कुछ ज्यादा ही बिजी रहने लगी हो, घंटों मोबाइल में व्यस्त..! इतने सारे फ्रेंडस, कभी कोई घर पर आ जाते है, कभी आप चली जाती हो। और ये कपड़े, कुर्ती लेगइन तो कभी जीन्स टॉप, ये क्या नये–नये शौक पाल रखे है ? उम्र का तो खयाल कीजिए..!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

और ये लिखना–विखना आपके बस की बात नहीं... फालतू में टाइम पास मत कीजिए। आपकी बहूएँ भी शिकायत कर रही हैं कि सासू माँ सठिया गई हैं। भजन कीर्तन की उम्र में अब हमसे बराबरी कर रही हैं।... और आज भी आप सुबह से गायब थीं। ना कुछ बताकर गई, ना फोन उठा रही थीं... आखिर ये सब क्यूँ कर रही हो। घर पर बैठकर दो टाइम खाना खाओ, और आराम से भजन कीर्तन करो।'

बहुएं इतरा रही थीं कि देखो कैसे डांट पड़ी इस उम्र में! चली थी खुद का ग्रुमिंग करने।

वृंदा ने गुस्से को कंट्रोल किया और इनविटेशन कार्ड आगे रख दिया, बोली– 'आज मैं यहाँ गई थी। ये कार्ड मैंने सबको दिखाकर चार दिन पहले बोला था कि मेरी सोशल एक्टिविटी के सम्मान में हमारे राज्य के सीएम के हाथों मेरा सम्मान होने वाला है, हम सबको विद फैमिली जाना है। पर आप सबको मैं एक पुराने फर्नीचर सी बेकार चीज ही लगती हूँ। तो किसी ने नोटिस तक नहीं किया। आप सबके लिये ये मामूली बात थी, पर मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि....। आज भी तुम सबके चेहरे की खुशी से ज्यादा मेरे लिए ओर कुछ नहीं, पर आज आप में से कोई मेरी खुशी का हिस्सा बनना नहीं चाहता। ....तो आज किसको बताकर जाती, ओर क्यूँ बताती ?'

मुझे लगता है, कुछ लोग तो 50 साल के होते ही संन्यास ही ले लेंगे। क्या एक उम्र के बाद इंसान इंसान नहीं रहता, दिल दिल नहीं रहता, मन मन नहीं रहता!

बहुओं की तरफ देखे बिना ही वृंदा बोली– 'मुझे लगता है, कुछ लोग तो 50 साल के होते ही संन्यास ही ले लेंगे। क्या एक उम्र के बाद इंसान इंसान नहीं रहता, दिल दिल नहीं रहता, मन मन नहीं रहता, शौक ओर इच्छाएं मर जाते हैं....! एक दिन तुम सबको इस उम्र का सामना करना है.... तो क्या तुम दो वक्त खाना खाकर सिर्फ भजन करोगे ? देखो बेटा, पहले तो मुझे ये बताओ की इस उम्र में मुझे क्या करना चाहिए, क्या

नहीं.... ये बताने वाले तुम होते कौन हो! और कौन से ग्रंथ ने उम्र की सीमा तय की है कि उम्र के एक पड़ाव पर कुछ काम नहीं करने चाहिए ? रही बात मेरे मोबाइल में व्यस्त रहने की, तो ये बात तुम्हें सोचनी चाहिए कि क्यूँ आप सबके रहते मुझे आभासी लोगों का सहारा लेकर जिंदगी के लम्हें काटने पड़ रहे है! अरे, तुमसे तो वो सब दोस्त अच्छे हैं जो दिन में दस बार हाल पुछते हैं। दो दिन ना दिखूँ तो फिक्र करते हैं मेरी कि दादी/दीदी कहाँ हो ? कैसी हो, ठीक तो हो। मेरी लिखी हुई रचना जैसी भी हो, तारीफ करते हैं। और दोस्त बनाने की कोई उम्र नहीं होती। कुछ सीखने की कोई उम्र नहीं होती। जिंदगी जीने की कोई उम्र नहीं होती। तुम्हारे पापा के जाने के बाद मैंने कुछ दिन कैसे काटे... मेरा मन जानता है, किसी ने कभी पास बैठकर नहीं पूछा कि मॉम आप कैसी हो, कभी मेरे साथ बैठकर खाना नहीं खाया, हमेशा उपेक्षित रही। मोबाइल जैसी छोटी सी मशीन से जो अपनापन मिला, वो अगर आप सबसे मिलता तो आज तुम्हें ये सब पूछने की नौबत ना आती। जिंदगी की आखिरी साँस तक इंसान इंसान ही रहता है, और एक मासूम बच्चा हर इंसान के भीतर ताउम्र जीता है। हर किसी को अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीने का पूरा हक है। तुम इतने भी बड़े नहीं हो गए कि अपनी माँ को सिखाओ कि उसे कैसे जीना चाहिए।'

वृंदा ने सबकी ओर देखकर बोला– 'अगर मेरा अपनी मर्जी के मुताबिक जीना किसी को पसंद नहीं तो कल से अपना इंतजाम कहीं और कर लो। ये घर मेरे पति का है, ये जिंदगी मेरी खुद की है, पति की पेंशन में गुजारा हो जाएगा। जब हाथ पैर नहीं चलेंगे तो वृद्धाश्रम चली जाऊंगी, पर अब इस उम्र में अपने ही बच्चों की मोहताज होकर नहीं जीना। माँ–बाप अगर नयी जनरेशन से कदम मिलाकर ना चलें तो गँवार ओर पुराने ख्यालात के कहलाएँगे। और अपनी मर्जी से जवाँ कदमों से ताल मिलाते हैं तो शोभा नहीं देता! इससे अच्छा है बेटा, तुम लोग अपनी जिंदगी अपने तरीके से जियो, मुझे अपने तरीके से जीने दो।'

आज वृंदा ने एक खिड़की खोल दी थी, जहाँ से धूप का एक टुकड़ा उसकी जिंदगी को रोशन करता झाँक रहा था।

***

लघुकथा

नशे की दलदल

✍
उर्मिला शर्मा
urmila.sharma009@gmail.com

डॉ. विवेक अपने क्लीनिक में आकर बैठे ही थे कि एक युवा पेशेंट को उसके पिता बड़ी दयनीय हाल में लेकर चैंबर में आए। उस लड़के को देखते ही डॉ. विवेक को हॉस्टल के दिन बरबस याद आ गए। कहां ज्यादा दिन हुए थे स्टूडेंट लाइफ से प्रोफेशनल लाइफ में आये हुए महज तीन साल ही तो हुए थे। बेंगलुरू में मेडिकल कॉलेज में एडमिशन होने पर वह एक छोटे से शहर से निकल विवेक को बेंगलुरु जैसे शहर में एडजस्ट होने में थोड़ा वक्त तो लग ही गया था। अत्यंत साधारण परिवार से होने की वजह से भी यहां के पाश्चात्य संस्कृति का अनुगमन करते सम्भ्रांत अन्य छात्रों के मध्य अपने को स्थापित और सहज बनाने में उसे काफी कोशिश करनी पड़ती थी। उसके क्लासमेट्स ब्रांडेड कपड़े, एसेसरीज पहनते, सैर–सपाटा करते। कभी–कभी पब भी जाते। उनका अनुसरण वह नहीं कर सकता था। अतः वह और उसका रूममेट राहुल, जो उसी के आर्थिक पृष्ठभूमि से

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

आता था, ऐसे सहपाठी और उनकी जैसी आदतों से दूर ही रहते थे। हालांकि ये सब करते हुए उन्हें कई बार हीन– भावना का भी शिकार होना पड़ता था। ये सब बातें वह मम्मी को बताता था। वो हमेशा उसे अच्छे– बुरे का ज्ञान देते रहती थीं। विवेक अपने साथियों के कपड़े, शूज, वॉच या अन्य चीजों का जिक्र करता। तब उसकी मम्मी उसे सुनते हुए मन ही मन सोचतीं कि पैसे की बचत कर उसे नए शूज दिला देंगी जो कि उनकी सोच से बहुत महंगे होते थे। ऐसा वो इसलिए करतीं कि बेटे को हीनता बोध न हो। इसी तरह कई चीजें पवन बताता, उनमें से जो सम्भव होता मम्मी दिलवा देतीं। क्योंकि उसके पापा जितने पैसे उसे महीने में भेजते वो बेंगलुरू जैसे शहर के लिए पर्याप्त तो नहीं ही कहे जा सकते। जब से विवेक बेंगलुरू गया था तब से उनके पास बचत पैसे कम ही होते थे। यह सोचकर कि पराये शहर में बेटे को कोई तकलीफ न हो इसलिये पैसे भेजती रहतीं। महंगा भी कितना है यह शहर। विवेक जब कभी किसी रेस्तरां में जाता या फिर कोई मूवी देखने जाता तो पांच सौ रूपये निकल जाते थे। बस उसकी मम्मी–पापा यह चाहते कि वह मन पर बिना किसी तनाव के ठीक से पढ़ाई करे।

विवेक भी अपनी पढ़ाई बड़े लगन से कर रहा था। अब वह थर्ड ईयर में आ पहुंचा था। क्लीनिकल ड्यूटी भी लगती थी। बुरी तरह थक जाता था वह। वहीं उसके सहपाठी डयूटी के बाद ड्रिंक कर सो जाते। आराम से सुबह फ्रेश से दिखते। वह हमेशा मम्मी की नसीहत ध्यान में रखता। इन सभी चीजों से दूर रहता। इस बात के लिए वह और उसका रूममेट राहुल एक दूसरे को कॉम्प्लीमेंट करते। उन दोनों का साथ न होता तो चीजें मुश्किल हो सकती थीं। कॉलेज में या बाहर की दुनिया में युवा किस– किस किस्म के नशे के गिरप्त में थे, उसे देखकर हैरानी होती थी। 'वीड' के नशे में लड़के करते। गांजा, अफीम व चरस फूंकते। सिगरेट, शराब तो आम सी बात थी। खाने में कटौती कर लेते लेकिन नशे के लिए पैसे बचा लेते। फिर भी कम पड़ जाता तो सिगरेट पीने वाले बीड़ी तक पीने लगते। उस दिन विवेक राहुल के साथ मूवी देखकर लौट तो देखा कि कॉलेज कैंपस में कुछ विशेष भीड़ दिखी। पूछने पर पता चला कि उसी का बैचमेट आर्यन नशे में अपने कमरे में बेसुध पड़ा मिला था तथा कपड़े में ही टॉयलेट भी कर दिया था। एक बड़े बिजिनेसमैन का बेटा था

वह। उसी को अभी–अभी हॉस्पिटल भेजा गया है। यह सब सुन वह सिहर उठा था। उसकी स्मृति में यह बात पुनः ताजी हो उठती थी कि कितनी मुश्किलों से उसके पेरेंट्स उसे पढ़ा रहे हैं। कुछ स्टूडेंट्स का मानना था कि नशा से एग्जाम के ठीक पहले पढ़ी हुई बातें दिमाग में छप सी जाती है और जाकर एग्जाम में लिख दो। अब इसमें कितनी सच्चाई है ये तो उसका सेवन करने वाले ही जानें। फाइनल ईयर तक आते–आते न जाने नशे के कितने किस्से थे। वेंकटेश जो पास के ही शहर के एक साधारण परिवार से था। वह भी नशे की गिरप्त में आकर होस्टल के लड़कों की चीजें, जिनमें अधिकतर इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स होते थे, चुराकर बेंचने लगा। बाद में जब पकड़ा गया तो कितना अपमानित होना पड़ा उसे। लड़के उससे अपनी चीजों की कीमत मांगने लगे। मजबूरन उसने पैसे कमाने के लिए कॉलेज के टाइम के बाद 'स्विगी' में होम डिलीवरी का काम करना पड़ा था। प्रशांत पवार मुम्बई के एक बड़े बिजनेसमैन का बेटा था। उसका किस्सा तो और भी विचित्र था। वह तो श्स्नेक बाईटश का नशा करता था। 'एंकल एरिया' में बाईट ले–लेकर कैसी विचित्र स्किन हो गई थी वहाँ की। ऐसी घटनाएं जब–जब विवेक देखता, तब–तब उसका निश्चय और दृढ़ हो जाता कि उसे इन चीजों से दूर ही रहना है। वैसे तो जब वह बनारस में रहकर कोचिंग कर रहा था, तभी उसने एक घटना को देखकर कान पकड़ लिए थे कि वह जीवन में इन चीजों से अलग ही रहेगा। उस घटना में एक इंजीनियरिंग का स्टूडेंट नशे का शिकार बन सड़क पर भिखारी के रूप में मिला था। अपनी उम्र से कई गुना ज्यादा का दिखता वह स्टूडेंट हड्डियों के ढांचे के रूप में मिला था। घरवाले तो उसे लापता मान बैठे थे। वो तो सौभाग्य से एक एन.जी.ओ वाले की नजर उस पर पड़ गई थी। बड़ी मशक्कत से पूछताछ करने के बाद उसके घरवालों तक खबर भेजी गई।

आज जब उसके क्लीनिक में ऐसे ही ड्रग पेशेंट के रूप में यह लड़का आया तो उसे पुरानी सारी बातें स्मरण हो आयीं। विवेक बड़े मनोयोग से एक डाक्टर के साथ–साथ एक दोस्त की भांति वह उसे मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी कॉपरेट करने लगा।

***

फार्म – 4

स्माचार–पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून 1956 के आठवें नियम के अन्तर्गत **'मधुराक्षर' त्रैमासिक पत्रिका** से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का आवश्यक विवरण–

1. प्रकाशन का स्थान : **जिला कारागार के पीछे, 9 ब, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212601**
2. प्रकाशन की आवर्तिता : **त्रैमासिक**
3. प्रकाशक/मुद्रक का नाम : **बृजेन्द्र अग्निहोत्री**
4. राष्ट्रीयता : **भारतीय**
5. सम्पादक का नाम : **बृजेन्द्र अग्निहोत्री**
6. राष्ट्रीयता : **भारतीय**
7. पूरा पता : **जिला कारागार के पीछे, 9 ब, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212601**
8. कुल पूंजी का 1 प्रतिशत से अधिक शेयर वाले भागीदारों का नाम व पता : **स्वत्वाधिकारी बृजेन्द्र अग्निहोत्री**

*''मैं **बृजेन्द्र अग्निहोत्री** घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त सभी विवरण सत्य हैं।''*

–बृजेन्द्र अग्निहोत्री

लघुकथा

बुद्धम् शरणम् गच्छामि

डॉ. पूरन सिंह
240, बाबा फरीदपुरी, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली
drpuransingh64@gmail.com

बस में बहुत भीड़ नहीं थी तो खाली भी नहीं थी। मेरा स्टैण्ड आया तो मैंने ड्राइवर से बस रोकने के लिए कहा। उसने बस रोक दी। मैं उतर रहा था तभी एक व्यक्ति और उतरा। उसे उतरने में असुविधा हो रही थी। 'साहब यही अकबर रोड है।' उसने पूछा।

'हाँ यही है। कहां जाएंगे।' मैंने बिना उसकी ओर देखे ही पूछा था।

'यूपीएससी।'

'आओ, मेरे साथ आओ।' कहकर मैं चलने लगा।

मैं कुछ दूर निकल गया और पीछे मुड़कर देखा। वह आदमी बहुत धीरे–धीरे चला आ रहा था। मुझे अपने ऑफिस में जरूरी काम था। मैंने उससे कहा, 'जल्दी–जल्दी नहीं चला जाता। मेहंदी लगा ली है पैरों में क्या।'

वह कुछ नहीं बोला।

मुझे गुस्सा आ गया। मैं रुक गया। तब तक वह मेरे पास आ गया था। उसने अपने झोले में से एक छड़ी निकाली। मैं सन्न रह गया। वह ब्लाइंड व्यक्ति था।

'पहले नहीं बता सकते थे।' कहते हुए मैंने उसका हाथ पकड़ा। सड़क पार करवाई और धीरे–धीरे उसके साथ चलने लगा।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

'यूपीएससी में क्या काम है।' अपनी झेंप कम करने के लिए मैं धीरे से बोला।

'यूपीएससी में काम नहीं है। जामनगर हाउस में एस.डी.एम. के ऑफिस में काम है।'

अब मुझे फिर गुस्सा आया, 'क्या आदमी है। जाना कहीं है और बता कहीं और रहा है।'

वह बोला, 'आप कहां काम करते हो।'

'विदेश मंत्रालय में।'

'आपके तो बड़े–बड़े अधिकारियों से संबंध होंगे।' वह विनम्रता से बोला।

'काम बताओ।'

'काम ये है सर कि मुझे एक हारमोनियम चाहिए। उसके लिए सरकारी मदद मिल जाती तो मदद हो जाती।' उसने अपनी बात रख दी थी।

मुझे अपना दोस्त रामफल याद आया। वह अंडर सक्रेटरी है सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में। वह इस तरह के काम करवाता रहता है। उसके लिए यह बाएं हाथ का काम है। कहता भी रहता है। कभी कोई काम हो बताना। मैंने उसे कभी कोई इस तरह का काम नहीं बताया।

'क्या नाम है तुम्हारा।' उसका हाथ पकड़े–पकड़े ही मैंने पूछा।

'रामसिया चौबे।'

मुझे करंट लग गया। मैंने उसका हाथ छोड़ दिया था। मुझे लगने लगा मानो उसका हाथ न हो कोई सांप हो जिसे मैं इतनी देर से पकड़े था। अच्छा हुआ उसने काटा नहीं। फिर बोला– 'वह सामने ही है एस.डी.एम. साहब का दफ्तर। अब चले जाओ।'

'साब ध्यान रखना मेरी बात का।' चलते–चलते वह बोलता गया।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

'इसका ध्यान रखूंगा मैं। मेरा ये भी ध्यान न रखे।' मन ही मन बुदबुदाया था मैं। अपना काम कितना किया, कितना नहीं, मैं नहीं जानता। शाम को घर आया। मन अशांत था। उल्टा–सीधा खाना खाया। जल्दी ही अपने कमरे में चला गया। अभी ढंग से लेट भी नहीं पाया था कि.......कि.........

'तो फिर ररामसिया चौबे की मदद नहीं करोगे।' न जाने कौन मुझसे उलझ गया था।

'नहीं करूंगा।' मैं लड़ने को तैयार।

'क्यों।'

'मैं क्या जानूं।'

'तुम सब जानते हो।'

'हाँ जानता हूँ तो ।'

'तो बताओ।'

'इसलिए नहीं करूंगा उसकी मदद क्योंकि वह चौबे है.... ब्राह्मण... ब्राह्मण है वह। इन साले चुकटियाओं ने हमारे पूर्वजों का जीना हराम कर रखा था.... हम सभी का जीना दूभर कर रखा है...... इनकी मदद तो मैं कतई न करूं... मुझे पता होता कि वह अंधा साला पंडित है तो मैं कभी उसको सड़क पार न कराता.... उल्टा उसको बीचो–बीच सड़क पर छोड़ देता ताकि कोई बस आए और आकर उसे कुचल कर चली जाए...... कम से कम एक दुश्मन तो कम हो।' मैं फटा जा रहा था।

'अपने को बुद्धिष्ट कहते हो।' फिर वही पूछने लगा।

'तो।'

'तो मतलब... क्या भगवान बुद्ध ने यही सिखाया है।' आवाज तेज होने लगी थी ।

'अरे यार, दिमाग मत खराब करो। मुझे ब्राह्मणों से सख्त नफरत है। बस।' मैं बिलबिला रहा था।

'भगवान बुद्ध तो किसी से घृणा नहीं करते थे। वे तो सभी को क्षमा, शील, मैत्री, बंधुत्व, शांति सिखाते थे। फिर तुम ऐसे क्यों

हो। तुम शायद नकली बुद्धिष्ट हो।' अबकी बार आवाज पीछे की तरफ से आई थी।

'नहीं मैं असली बुद्धिष्ट हूं। मैं तथागत को मानता हूँ।' मेरी आवाज में कंपन था।

'अच्छा, अब समझ आया.. तथागत को तो मानते हो। तथागत की नहीं मानते।' अब आवाज बिल्कुल सामने से था।

'लेकिन ये ब्राह्मण....।' मैं अब बच्चा बन गया था।

'देखो, उन्होंने तुम्हारे या तुम्हारे पूर्वजों के साथ क्या किया या क्या कर रहे हैं, ये जरूरी नहीं है। जरूरी ये है कि आप उनके साथ क्या कर रहे हो।' अचानक आवाज आना बंद हो गई थी।

मैंने चारों ओर देखा, कोई नहीं था। मैं बिलबिलाने लगा। उठकर बैठ गया। इधर–उधर देखा। मोबाइल पास में ही रखा था। कुछ नंबर मिला दिए थे। रिंगटोन के साथ ही उधर से आवाज आई थी। आवाज मेरे मित्र अंडर सेक्रेटरी रामफल की थी।

कसक

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-0-3

संस्करण : 2014, मूल्य : 180/-

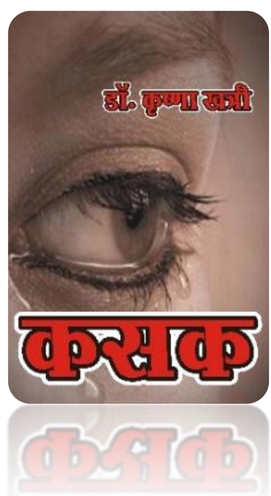

लघुकथा

उम्मीद अभी जिंदा है!

प्रो. शरद नारायण खरे
प्राचार्य, शासकीय जे एम सी महिला महाविद्यालय, मंडला (म.प्र.) 481 661
khare.sharadnarayan@gmail.com

'देखो मिस्टर राजेश हमें अपनी कंपनी के लिए एक अनुभवी आदमी की जरूरत है।'

'वो तो मैं हूँ।'

'पर हमें मेहनती आदमी की रिक्वायरमेंट है।'

'डेफीनिटली मैं वैसा ही हूँ।'

'पर आदमी पूरी तरह से ईमानदार भी होना चाहिए।'

'वो भी मैं हूँ।'

'आदमी पूरी तरह से सच्चा भी होना चाहिए।'

'वो भी मैं हूँ।'

'आदमी पूरी तरह से स्पष्टवादी भी होना चाहिए।'

'वो भी मैं हूँ।'

'आदमी ऐसा होना चाहिए, जो कि हमारी कंपनी के फायदे के लिए गलत काम करने के लिए भी तैयार हो।'

'नहीं, वो तो मैं नहीं कर सकता।'

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

'आदमी ऐसा हो जो सरकार का नुकसान करके भी कंपनी के भला करने के लिए तैयार रहे।'

'वो तो मुझसे नहीं हो सकता।'

'पर सोच लो तनख्वाह मुंहमांगी मिलेगी।'

'नहीं, मुझे गलत काम पसंद नहीं।'

'तनख्वाह के अलावा आपको सुविधाएं भी कंपनी की ओर से खूब सारी मिलेंगी।'

'नहीं, मुझे आपकी कंपनी की पॉलिसी पसंद नहीं। नमस्ते, मैं चलता हूँ। आप किसी और आदमी को ढूंढ लीजिए।'

'नहीं–नहीं, मिस्टर राजेश! आप मेरी बात सुनिए। यू आर सिलेक्ट फॉर दिस जॉब। दरअसल हमारी कंपनी को जिस तरह के परफेक्ट व स्ट्रेट फॉरवर्ड आदमी की जरूरत है, आप हंड्रेड परसेंट वैसे ही हैं। क्योंकि हमारी कंपनी केवल और केवल ऑनेस्टी में विलीव करती है।'

'थैंक यू सो मच सर! जी, अब मैं जाऊं ?'

'ओके, आप कल से काम पर आ सकते हैं। ...पर मिस्टर राजेश, एक बात आपको बताऊं कि आपको देखकर केवल लगता ही नहीं, बल्कि पूरा विश्वास हो जाता है कि सच्चे मायनों में अभी भी सच्चे आदमियों की कमी नहीं। दोस्त, उम्मीद अभी जिन्दा है!'

अपनी कृतियों के प्रकाशन हेतु संपर्क करें...

लागत आपकी, श्रम हमारा!
75 फीसदी प्रतियाँ आपकी, 25 प्रतिशत हमारी!!

विशेष : आपकी कृतियों व उन पर विद्वानों द्वारा लिखित समीक्षाओं द्वारा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में व्यापक प्रचार।

मधुराक्षर प्रकाशन
जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर फतेहपुर (उ0प्र0) 212 601
madhurakshar@gmail.com +91 9918695656

लघुकथा

अपराधबोध

महेश कुमार केशरी
मेघदूत मार्केट फुसरो, बोकारो (झारखंड)
keshrimahesh322@gmail.com

ज्वाला बाबू अनमोल की बातों को बहुत ही बेचारगी से सुन रहे थे। हालांकि, अब ये रोज की दिनचर्या हो गई थी। वे चलते–चलते अपने मकान को और कभी–कभी अपनी रखी चीजों को भी भूल जाते थें . कभी चश्मा भूल जाते तो कभी छड़ी! लेकिन आज तो हद ही हो गई थी! वे अपना घर ही भूल गये थे। और किसी ने उनको चौक पर से उनके घर तक सकुशल पहुंचाया था।

अनमोल बिना लगाम के घोड़े की तरह बदजुबानी पर उतर आया था– 'बाबूजी, आपको तो कुछ याद–वाद रहता नहीं है, कम–से–कम हमारी हालत पर तो रहम कीजिए। जब आपको अपना मकान ही याद नहीं रहता तो आप घर से बाहर निकलते ही क्यों हैं ? खामखां आपके चलते हम लोगों को परेशानी होती है !..... और, बाहर के लोग हमारे ऊपर ये इल्जाम लगायेंगे कि बूढ़े को मरने के लिए जानबूझकर ये लोग बाहर छोड़ आतें हैं। आपको जिस चीज की जरूरत हो, हमसे कहिए हम आपको लाकर देंगे।'

ज्वाला बाबू बड़ी बेचारगी से अनमोल की बातों को एक टक ध्यान लगाकर सुन रहें थे। और, वो ये भी सोच रहे थे कि मेरे जैसा जिम्मेदार व्यक्ति आज उम्र के उस पड़ाव पर पहुँच गया है, जहां दिमाग चीजों को बहुत लंबे समय तक याद नहीं रख पाता तो भला इसमें उनकी क्या गलती हो सकती है... ?

इस घटना को हुए लगभग सप्ताह भर हो चुका था। एक सुबह वो कहीं से टहल कर आ रहे थे कि फिर से वो अपना ही घर

भूल गये! वो अपने ही घर की तस्दीक कर लेना चाह रहे थे। जैसे ये उनका ही घर है या नही। मैं, उनके बगल से गुजर रहा था, तभी उन्होंने मुझे टोका– ‘सुनो, ये मेरा ही घर है ना!’

मैनें एक बार उन्हें देखा, फिर मकान को– ‘नहीं ये वर्मा जी का मकान है। आपका घर थोड़ा–सा और आगे है।’

‘मुझे वहां तक पहुंचा दोगे ?’

‘हाँ, क्यों नहीं।’

मैंने उन्हें सहारा देकर उनका हाथ पकड़ लिया, और उनको उनके घर तक पहुँचा आया। ज्वाला बाबू ने अपने घर के ग्रिल को अपने खुरदरे हाथों से छुआ। फिर अपने मोटे फ्रेम वाले चश्मे से घर को देखा। फिर वे अपने भरोसे को सही पाकर बोले– ‘हाँ यही है। तुमने मुझे यहां तक पहुंचा दिया। तुम्हारा बहुत–बहुत धन्यवाद! अब क्या करुं... मुझे कुछ याद नहीं रहता तो.. इधर कुछ सालों से ऐसी परेशानी हो गई है.... नहीं तो पहले ऐसी कोई बात नहीं थी।’ वे सफाई देते हुए बोले।

‘गायत्री!’ उन्होंने अपनी स्वर्गवासी पत्नी को आवाज लगाई। लेकिन उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ। फिर, जैसे अपने आप से बोले– ‘अरे, उसको गुजरे तो करीब दो महीने से ज्यादा हो गए। उनकी आँखें अब भीगने लगी थीं। और वे ग्रिल को ठेलकर धीरे से अंदर चले गए।

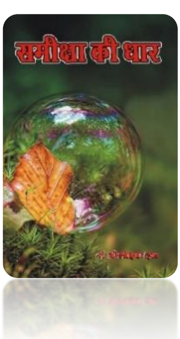

समीक्षा की धार

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

आईएसबीएन : 978-81-929060-3-4

संस्करण : 2014, मूल्य : 180/-

लेख

साहित्य, समाज और संस्कृति

डॉ. विदुषी शर्मा
अकादमिक काउंसलर, इग्नू
drvidushisharma9300@gmail.com

शोध सारांश : साहित्य समाज का दर्पण है और समाज का निर्माण संस्कृति से होता है। वास्तव में साहित्य समाज और संस्कृति तीनों ही एक दूसरे के अनुपूरक कहे जा सकते हैं, क्योंकि किसी एक का भी अस्तित्व दूसरे के बिना संभव नहीं हो सकता। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव ने किस प्रकार आदिम युग से लेकर आज तक के वैज्ञानिक युग का सफर तय किया है। वह जंगल और गुफाओं से होता हुआ आज अंतरिक्ष तक पहुंच गया है। विज्ञान की उपलब्धि में जहां उसका मस्तिष्क, अभिप्रेरणा, प्रयास उसका आधार बने हैं, वही अपनी मानव सुलभ भावनाओं को संतुष्ट करने के लिए, हृदय में उठने वाले भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए उसे अनेक साहित्यिक विधाओं का आश्रय भी लेना पड़ा है। यहीं से आरंभ होता है 'सृजन'। जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से झलक होती है उसकी भाषा (मातृभाषा) की। यह अटल सत्य है। आप किसी भी देश का साहित्य उठाकर देख लीजिए उसमें जो विशेषता होगी, वह वहां की मिट्टी की सुगंध लिए होगी, मातृभाषा की झंकार उस में व्याप्त होगी, क्योंकि बिना मातृभाषा के साहित्यिक रचनाओं में मौलिकता का गुण आ ही नहीं सकता। किसी भी साहित्यिक रचना में वो भाव, वो प्रेरणा, वो समर्पण, वो सच्चाई, वो मौलिक चिंतन, अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम यह सब कुछ साहित्यिक रचना के प्राण होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हम यह सार्थक प्रयास करने का यत्न करेंगे कि 'साहित्य, समाज और संस्कृति' के अंतर्संबंधों का पूर्णतया सारगर्भित विश्लेषण किया जा सके तथा संगोष्ठी के अन्य उपविषयों से भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रस्तुत शोध पत्र की परस्पर निर्भरता सिद्ध की जा सके।

बीज शब्द : परिवेश, संगोष्ठी, संस्कृति, अंतर्संबंध, चिंतन, सारगर्भित, विश्लेषण, आत्मनिर्भरता, सृजन।

परिचय : साहित्य, समाज और संस्कृतिष संगोष्ठी का एक ऐसा विषय है जो समग्रता लिए हुए है। वास्तविक अर्थों में आजकल के समाज, साहित्य और भाषा की जो स्थिति है वह सही नहीं है। संस्कारों से भाषा में

अपेक्षित सुधार हो सकता है, भाषा से संस्कृति का सुधार संभव है और संस्कृति से समाज में अपेक्षित परिवर्तन हो सकता है। और जब इन तीनों में ही अवश्यमेव सुधार होंगे तो उससे हमारा देश सुधर सकता है, विश्व सुधर सकता है, आने वाली पीढ़ियों का भविष्य, उनकी मानसिकता, उनके मूल्य, उनकी नैतिकता, उनका चारित्रिक बल, धार्मिकता ,सामाजिकता संबंधी आचरण सुधर सकते हैं और हम सब का यही तो कर्तव्य है और प्रबुद्ध वर्ग की यही तो चिंता है कि किन उपायों से इन सब में सार्थक सुधार लाया जा सके। आज जिस तरह हिंदी सिनेमा और सोशल मीडिया की भाषा और संस्कृति हमारे समाज को दिन–प्रतिदिन विकृत किए जा रहे हैं, हमारी युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट कर रहे हैं वह चिन्तनीय है।वर्तमान में हमारे समाज की यह स्थिति है कि–

आज दिवस में तिमिर बहुत है, जैसे हो सावन की भोर,
मानव तो आकाश की ओर, मानवता पाताल की ओर।

हम सभी को यह सार्थक प्रयास करने होंगे, इस प्रकार उपाय किए जाएं कि ष्समाज और संस्कृति के बीच अंतःसंबंध स्थापित हो सके। और वह ऐसे कौन से यत्न किये जाने चाहिए, कौन से ऐसे प्रबंध होने चाहिए कि जिन्हें ष्समाज और संस्कृति के अंतःसूत्रों की संज्ञा दी जा सके। समय–समय पर सरकार द्वारा, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों द्वारा इस बात पर निरंतर चिन्तन किया जाता रहा है कि 'सत्ता, भाषा और समाज' में टकराव की स्थिति उत्पन्न होने के स्थान पर ऐसी व्यवस्था की जाए जिससे सत्ता भाषा और समाज के मिलन की एकरूपता, समरसता की स्थिति कायम की जा सके। इन्हीं सब उपायों को अपनाकर ही हम 'भाषा, समाज और संस्कृति के द्वारा राष्ट्रीय एकता' कायम करने में कामयाब सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार हमने देखा कि संगोष्ठी का मुख्य विषय तथा उसके सारे उप विषय किस प्रकार एक दूसरे पर आश्रित हैं, अंतर संबंधित हैं, और अंत में सभी का एक ही लक्ष्य है 'राष्ट्रीय एकता'।

साहित्य का स्वरूप, भाषा, समाज और संस्कृति : भाषा, समाज, सभ्यता और संस्कृति के संबंध में पाश्चात्य विद्वान ग्रीन का मत दर्शनीय है– 'एक संस्कृति तभी सभ्यता बनती है जबकि उसके पास एक लिखित भाषा, दर्शन विशेषीकरण युक्त श्रम विभाजन, एक जटिल विधि और राजनीतिक प्रणाली हो'। इस संदर्भ में एक और विद्वान जिस्बर्ट का मत– 'सभ्यता बताती है कि 'हमारे पास क्या है', और संस्कृति यह बताती है कि, 'हम क्या हैं'।'

साहित्य क्या है ? इसका स्वरूप क्या है ? यह समाज से किस प्रकार संबंधित है ? और यह संस्कृति को किस प्रकार अपने अंदर समेटे हुए है ? तथा किस प्रकार संस्कृति को प्रभावित करता है ? एवम किस प्रकार यह संस्कृति से प्रभावित होता है ? यह सब महत्वपूर्ण बिंदु है।

किसी भी प्रकार के साहित्य की मूल चेतना या भावना, मुख्य आधार, मानव समाज की चहुँमुखी उन्नति ही होती है। प्रत्येक प्रकार के साहित्य का यह उद्देश्य होता है कि मानव हर प्रकार के राग, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, शोषण, कलुषित विचार आदि दुर्भावनाओं को त्याग कर, उस परमपिता परमेश्वर, सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता को, उसकी शक्ति को जानने का प्रयास करता हुआ, 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' यानी सभी को अपने समान समझने का प्रयास करे तथा 'सर्वे भवंतु सुखिनः' का भाव लेकर 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के सिद्धांत को अपने जीवन में उतार ले।

यह अकाट्य सत्य है कि जितना साहित्य हमारे भारत में है, जितना विषय वैविध्य हमारे साहित्य में है, उतना किसी भी अन्य देशके साहित्य में हो ही नहीं सकता। हमारा तो एक–एक ग्रंथ ही सर्वकालिक ज्पउमसमे है कि जिसके सिद्धांत आज से हजारों वर्ष पूर्व भी उतने ही प्रासंगिक थे, जितने आज है। सिर्फ एक ग्रंथ ष्श्रीमद्भगवद्गीताष को ही लीजिए जो विश्व प्रसिद्ध है। सिर्फ यदि इसी एक ग्रंथ को ही आत्मसात कर लिया जाए तो मानव मात्र का जीवन सुधर सकता है, तो फिर अन्य साहित्य की तो बात ही क्या है। हमारा साहित्य हमें धार्मिकता, नैतिकता, सामाजिकता, नीति राजनीति, आर्थिकता आदि सभी गुण सिखाता हैं। हमारे साहित्य में ज्ञान है, वैराग्य है, नीति है, श्रृंगार है, भक्ति है, प्रेम है, वात्सल्य है, करुणा है, ओज है, वीरता है, प्रकृति प्रेम है, जीव प्रेम है। हिंदी साहित्य के इतिहास को इन्हीं गुणों के आधार पर विभक्त किया गया है, जैसे वीरगाथा काल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल। जिस काल में जिस भाव, जिस प्रकार के साहित्य की प्रधानता रही उसे उसी के नाम से संबोधित किया गया है। यही साहित्य, स्वस्थ सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण करने में सहायक है, जो हमारी पहचान है, भारतीयता की पहचान है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे साहित्य में एक और जहां विष्णु शर्मा जी ने पंचतंत्र के माध्यम से ज्ञान, जीव प्रेम, प्रकृति प्रेम, पारिस्थितिकीय संतुलन आदि का संप्रेषण किया जो सभी के लिए हर युग में प्रासंगिक है तथा पर्यावरण संरक्षण, शाकाहार की भावना को पोषण प्रदान करता है जो कि वर्तमान की एक समस्या तथा आवश्यकता बन चुकी है।

साहित्य, साहित्यकार, समाज और संस्कृति : साहित्य समाज का दर्पण है, यह हम सब जानते हैं। आत्मा और शरीर का जो संबंध है वही संबंध साहित्य और समाज का है। यह शाश्वत सत्य है कि साहित्य की अपेक्षा समाज पहले जन्म लेता है। समाज से ही साहित्यकार जन्म लेते हैं। साहित्यकार के व्यक्तित्व की पहचान अलग होती है। सच्चे साहित्यकार गंभीर, चिंतनशील, संवेदनशील, दूरदृष्टा, व्यापक दृष्टिकोण रखते हुए भावना और सम्वेदनाओं से परिपूर्ण होते हैं। क्योंकि अपनी लेखनी से वो

जिस साहित्य का निर्माण करते हैं, सृजन करते हैं, वह भविष्य में समाज का, संस्कृति का निर्माण करता है। इसलिए प्रत्येक साहित्यकार यह प्रयास करता है कि वह जिस विषय पर साहित्य का सृजन करे उसकी जड़ें समाज से, उसकी समस्याओं से गहराई से जुड़ी हुई हों। ज्वलंत मुद्दों पर भी अपनी बात कहने से पूर्व उक्त सामाजिक विषय से संबंधित पूर्ण जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य है क्योंकि साहित्यकार की कलम से निकला एक–एक शब्द समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम है। 'कलम के सिपाही' सामाजिक जन चेतना लाने का कार्य करते रहे हैं। अतः लेखक अथवा कवि (साहित्यकार) अपने समाज की हर गतिविधि, हर परिस्थिति में ही जीता है, उनसे प्रभावित होता रहा है। वह किसी भी रुप से समाज से अलग नहीं हो सकता। वह इसी समाज में ही रहकर इसके प्रभावों को, इन परिवर्तनों को, इन समस्याओं को जानता है, क्योंकि वह भी तो एक सामाजिक प्राणी ही है।

साहित्य, समाज और संस्कृति अन्योन्याश्रित : प्रत्येक समाज का एक सांस्कृतिक आधार भी होता है। प्रत्येक संस्कृति, उस समाज की आत्मा, उसकी पहचान होती है, जिस प्रकार किसी भी प्रकार की सभ्यता एवं संस्कृति में व्याप्त अच्छाई और बुराई को हम सब देखते हैं, महसूस करते हैं कि यह हमारे समाज में किस प्रकार फैल रही है, समाज को दूषित कर रही है संस्कारों का हनन कर रही है।उसी प्रकार साहित्यकार इन सब को देखते हुए, इन सब पर अपनी व्याख्या प्रदान करते हुए, समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं, और यह कार्य करना अपना कर्तव्य समझते हैं ,क्योंकि––

'केवल मनोरंजन ही न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।'

इतिहास साक्षी है कि मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नवीन विचारों ने साहित्य को जन्म दिया तथा साहित्य ने मानव की विचारधाराओं गतिशीलता प्रदान करते हुए उसे सभ्य बनाने का कार्य किया है। किसी भी राष्ट्र या समाज में आज तक जितने भी परिवर्तन आए हैं, वो सब साहित्य और संस्कृति के माध्यम से ही आए हैं। साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विकृतियों, विसंगतियों, अभावों, विषमताओं व असमानताओं आदि के बारे में अपने विचार, सुझाव, उपाय आदि प्रस्तुत करता है। इन सब के प्रति जनसाधारण को जागरुक करने का प्रयास करता है। वर्तमान में साहित्य को ज्ञानवर्धक, मूल्यवर्धन, मनोरंजक बनाने के लिए सोशल मीडिया, सिनेमा का आश्रय लिया जा रहा है जो कुछ कुछ हद तक उचित भी है, क्योंकि लिखित साहित्य में ज्ञान, मूल्य, नीति,

संस्कार आदि सब कुछ तो है परंतु मनोरंजक तत्व नहीं। अतः साहित्य को दृश्य, श्रव्य भाव के साथ मनोरंजक भी बनाते हुए जनमानस तक पहुंचाने का कार्य एक अनूठा प्रयास रहा है। इससे समाज में गहरा परिवर्तन देखने को मिला है। 80 के दशक में रामानंद सागर द्वारा लिखित और निर्देशित धारावाहिक 'रामायण' तथा बी. आर. चोपड़ा द्वारा निर्देशित धारावाहिक ष्महाभारतष का नाम इस श्रेणी में लिया जा सकता है जिन्होंने समाज में सकारात्मक परिवर्तन किए, जनमानस को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का दर्शन कराया, मानवीय मूल्यों से अवगत कराया तथा वर्तमान पीढ़ी को सामाजिक, नैतिक, मानवीय मूल्यों को परोक्ष भाव में ही सिखा दिया। साहित्य के विकास की कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव सभ्यता। अतः यह नितांत आवश्यक है कि साहित्य लेखन, संशोधन, परिवर्द्धन निरंतर जारी रहना चाहिए। अन्यथा सभ्यता का विकास ही अवरुद्ध हो जाएगा। भारत की अपनी विशिष्ट सभ्यता एवं संस्कृति रही है। 'भा' का अर्थ हुआ प्रकाश। 'रत' का अर्थ है संलिप्तता। यानी 'भारत' का अर्थ हुआ प्रकाश में दत्तचित्त होकर अनुष्ठान करने से संप्राप्त संस्कार, और संपन्नता। यही भारतीय संस्कृति है। यही संस्कृति समाज से, साहित्य से अनादि काल संपोषित होती चली आ रही है, और आगे भी इसी तरह संपोषित, संवर्धित होती रहेगी।

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि वास्तव में हर देश का साहित्य उस देश की लौकिक सभ्यता एवं संस्कृति, मातृभाषा, लोक गीत, लोक भाषाओं (जन भाषाओं) तथा तत्कालीन परिस्थितियों (सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक) को भी उजागर करता है। साहित्य राष्ट्र की धरोहर है, उसका अभिमान है, गौरव है, पहचान है। प्रत्येक युग का साहित्य उस युग की पहचान, उस युग का वैशिष्ट्य बताता है। अब इससे अधिक और क्या कहा जाए कि प्राचीन वैदिक साहित्य भारत के उन्नत और गौरवशाली समाज का प्रमाण है। इस साहित्य में 'विश्व मानव' (वैश्विक एकता) और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की जो भावना है, वह विशुद्ध भारतीय संस्कृति की महानता, विशालता, निःस्वार्थपरता, लोक कल्याणकारी भावनाओं की परिचायक है। हमारा साहित्य समाज को न केवल ज्ञान, बोध और मूल्य प्रदान करता है अपितु एक चिंतन की दिशा भी प्रदान करता है ताकि हम सभी यथासंभव प्रयास कर सके जिससे कि भारतीय मूल्य ,भारतीय सभ्यता एवम संस्कृति, भारतीय साहित्य का विश्व में सदैव उच्चस्थ स्थान बना रहे तथा भारत पुनरू 'जगद्गुरु' की उपाधि ग्रहण करे वो भी अपने अक्षय साहित्य, विशुद्ध सभ्यता एवं अलौकिक संस्कृति के बल पर।

ग्रंथानुक्रमणिका

1. डॉ राधेश्याम द्विवेदी – भारतीय संस्कृति।
2. प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति– दामोदर धर्मानंद कोसांबी ।
3. आधुनिक भारत – सुमित सरकार।
4. प्राचीन भारत – प्रशांत गौरव ।
5. प्राचीन भारत – राधा कुमुद मुखर्जी ।
6. सभ्यता ,संस्कृति, विज्ञान और आध्यात्मिक प्रगति – श्री आनंदमूर्ति।
7. भारतीय मूल्य एवं सभ्यता तथा संस्कृति– स्वामी अवधेशानंद गिरी (प्रवचन)।
8. नवभारत टाइम्स – स्पीकिंग ट्री ।
9. इंटरनेट साइट्स।

शोध–लेख

मणिपुर के पर्व–त्योहार

वीरेन्द्र परमार
103, नवकार्तिक सोसायटी, प्लाट–13, सेक्टर–65, फरीदाबाद –121004
veerendraparmarfaridabad@gmail.com

मणिपुर अपने शाब्दिक अर्थ के अनुरूप वास्तव में मणि की भूमि है । इसे देवताओं की रंगशाला कहा जाता है। सदाबहार वन, पर्वत, झील, जलप्रपात आदि इसके नैसर्गिक सौंदर्य में चार चांद लगा देते हैं। अतरू इस प्रदेश को भारत का मणिमुकुट कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। यहां की लगभग दो–तिहाई भूमि वनाच्छादित है। प्रदेश के पास गौरवशाली अतीत, समृद्ध विरासत और स्वर्णिम संस्कृति है। इस राज्य की स्थापना 21 जनवरी 1972 को की गई थी। यहाँ तीन जातीय समूह के लोग रहते हैं– मैतै, नागा और कुकी। चीन मणिपुर की प्रमुख भाषा मैतै है जिसे मणिपुरी भी कहा जाता है । मणिपुरी भाषा की अपनी लिपि है– मैतै–मएक। इसके अतिरिक्त राज्य में 29 बोलियां

हैं जिनमें प्रमुख हैं– तंगखुल, भार, पाइते, लुसाई, थडोऊ (कुकी), माओ आदि। मणिपुर में ऐमोल, अनल, अंगामी, चिरु, चोथे, गंगते, हमार, लुशोई, काबुई, कचानगा, खरम, कोईराव, कोईरंग, कोम, लम्कांग, माओ, मरम, मरिंग, मोनसंग, मायोन, पाईते, पौमई, पुनरूम, राल्ते, सेमा, तंगखुल, थडोऊ, तराव इत्यादि आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं। मणिपुर एक उत्सवधर्मी प्रदेश है। यहाँ पारंपरिक रीति–रिवाजों के साथ अनेक पर्व–त्योहार मनाए जाते हैं जो प्रदेश के सांस्कृतिक वैभव के साक्षी हैं।

लाई–हराओबा (Lai Haraoba) : लाई–हराओबा मणिपुर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और रंगीन त्योहार है। लाई–हराओबा को उमंग लाई हराओबा भी कहते हैं। यह एक पारंपरिक मैतै त्योहार है। यह त्योहार सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा पृथ्वी की रचना और उस पर जीवों के निवास से संबंधित है। किंवदंतियों के अनुसार शुरुआत में गुरु सिदबा सबसे बड़े देवता थे जो घोर अंधकार में रहते थे। वे जिस कमरे में रहते थे वह कमरा एक बार इंद्रधनुष के विभिन्न रंगों से जगमगा उठा। इस घटना से वे सृष्टि के निर्माण के लिए प्रेरित हुए। इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्हें अतिया गुरु सिदबा का साथ मिला। अतिया गुरु को मानव का एक ढांचा दिया गया। सिदबा ने अपनी नाभि के मैल और नाभि की दाईं ओर से नौ पुरुषों एवं बाईं ओर से सात महिलाओं का सृजन कर सभी को अतिया गुरु की सेवा में समर्पित कर दिया। अतिया गुरु ने इन पुरुषों और महिलाओं की मदद से सृष्टि का निर्माण शुरू किया। अतिया गुरु के पहले दो प्रयासों को हरबा ने बेकार कर दिया। गुरु सिदबा ने बिजली की देवी को अतिया गुरु के बचाव में भेजा। तब अतिया गुरु ने मानव के ढाँचे को मजबूत कर दिया और इसे ढाँचे को मानव जीवन के उपयुक्त बनाया। सृष्टि की पूरी प्रक्रिया का जश्न मनाने के लिए हर साल लाई–हराओबा त्योहार मनाया जाता है। इसलिए इस त्योहार को सृष्टि की प्रक्रिया का उत्सव कहते हैं। लाई–हराओबा ही नृत्य और लोकगीतों (खुनुंग इसाई) का मूल स्रोत है। लाई–हराओबा को सभी मणिपुरी नृत्यों और कुछ स्वदेशी खेलों का उत्स माना जाता है। इस त्योहार का आरम्भ ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में हुआ। उस समय पुष्प, खाद्य पदार्थ आदि अर्पित करना ही मुख्य अनुष्ठान होता था, बाद में इस त्योहार के साथ और अन्य अनुष्ठान और परम्पराएं जुड़ गईं। इस त्योहार में उमंग लाई के नाम

से जाने जानेवाले सिलवन देवताओं की उपासना की जाती है। यह त्योहार पारंपरिक देवताओं और पूर्वजों की पूजा का प्रतिनिधित्व करता है। प्राचीन दिव्यताओं से पहले पुरुषों और महिलाओं द्वारा कई नृत्य किए जाते हैं। मोइरांग के शासक देव थंगजिंग के लाई हराओबा सबसे प्रसिद्ध हैं। यह त्योहार मई महीने में आयोजित किया जाता है। यह त्योहार स्थानीय पारंपरिक देवताओं और पूर्वजों के प्रति सम्मान और श्रद्धा व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है। इसे देवताओं की उत्सवधर्मिता के रूप में भी जाना जाता है। इस त्योहार में लोग सनमही, पखंगबा, नोंगपोक निमगथो, लेईमरेल और लगभग 364 उमंग लाई या जंगल के देवी–देवताओं की पूजा करते हैं। यह त्योहार ब्रह्मांड के सृजन में भगवान के योगदान की स्मृति के रूप में आयोजित किया जाता है, साथ ही यह पेड़–पौधों, जानवरों और मनुष्य के विकास की स्मृति में भी मनाया जाता है। इस त्योहार में लोग मूर्तियों के सामने नृत्य करते हैं जो उनके रिवाज का एक अंग है। वे देवी–देवताओं और अपने पूर्वजों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं। समाज के वृद्ध और जवान सभी अपना पारंपरिक नृत्य करते हैं और गीत गाते हैं। इस अवसर पर नाटक भी प्रस्तुत किया जाता है जिसमें खंबा और थोइबी के जीवन को दर्शाया जाता है जो एक लोककथा के नायक–नायिका हैं। शाम में देवता को पालकी में घुमाया जाता है। पूरी श्रद्धा से लोग उनकी पूजा करते हैं।

याओशंग या डोल जात्रा (Yaoshang or Dol Jatra) : फाल्गुन माह की पूर्णिमा (फरवरी/मार्च) से शुरू होने वाले पांच दिवसीय याओशंग मणिपुर का प्रमुख त्योहार है। इस त्योहार में थबल चोंगबा नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। थबल चोंगबा एक मणिपुरी लोक नृत्य है जिसमें लड़के और लड़कियां हाथ पकड़कर नृत्य करते हैं और सभी लोग उस नृत्य का आनंद लेते हैं। नृत्य के दौरान पुरुष महिलाओं को पैसे भी देते हैं। इसे मणिपुर की होली भी कहा जाता है। यह स्वदेशी संगीत और नृत्य के साथ मनाया जाता है। इस त्योहार में हिंदू मान्यताओं और मैतेई प्रथाओं का मणिकांचन संयोग देखने को मिलता है। थबल चोंगबा लोक नृत्य इस उत्सव का एक महत्वपूर्ण आकर्षण है जिसका प्रदर्शन रात्रि में किया जाता है। मणिपुरी पुरुष और महिलाएं स्थानीय लोक गीत गाते हैं और ढोलक की थाप पर नाचते हैं। वे पारंपरिक मणिपुरी वेशभूषा पहनकर नृत्य करते हैं। मणिपुरी अवधारणा

के अनुसार नृत्य भी ईश्वर की उपासना का एक रूप है। इस अवसर पर पुरुषों के लिए फिजोम (धोती) और महिलाओं के लिए फनक (स्कर्ट) परिधान निर्धारित है। पुरुष और महिला एक–दूसरे के हाथ पकडकर नृत्य करते हैं। इस त्योहार में युवा और बूढ़े सभी लोग घर–घर जाकर चंदा इकट्ठा करते हैं और इकट्ठा किए गए से भोज और पार्टी करते हैं।

कुत (Kut) : कुत मणिपुर के कुकी–चिन–मिजो समूह के आदिवासी समुदायों का प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार शरद ऋतु में मनाया जाता है। यह त्योहार मणिपुर के सभी जिलों में पूर्ण उत्साह और धूमधाम के साथ मनाया जाता है। त्योहार को विभिन्न जनजातियों के बीच विभिन्न स्थानों पर चवांग–कुत या खोदो आदि के रूप में वर्णित किया जाता है। यह ग्रामीणों के लिए एक खुशी का अवसर होता है जिनके भोजन का भंडार एक साल के कठिन परिश्रम के बाद भर जाता है। यह त्योहार धन्यवाद देने का एक अवसर है जिसमें गीतों के साथ दावत दी जाती है। यह हर साल एक नवंबर को मनाया जाता है। इस त्योहार के अवसर पर उत्साह और उमंग के साथ नृत्य–गीत प्रस्तुत किए जाते हैं और भरपूर फसल देनेवाले परम पिता को धन्यवाद दिया जाता है। इस त्योहार का उद्देश्य सभी समुदायों में सांप्रदायिक सद्भाव, प्रेम और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व को बढ़ावा देना है। यह त्योहार वास्तव में कठिन श्रम के बाद भरपूर फसल की प्राप्ति का आनंदोत्सव है।

कंघी त्योहार (Kanghi Festival) : मणिपुर की मरम नागा जनजाति द्वारा यह त्योहार मनाया जाता है। मरम नागा का सात दिवसीय कंघी त्योहार दिसंबर महीने में आयोजित किया जाता है। यह युवाओं का एक भव्य उत्सव है। सात दिनों को क्रमशः लिंगसमासुइ, वांग्निमताम, नेगेदी, मतोह, सबंगहा, हंगिरा और थंगिरा कहा जाता है। त्योहार की शुरुआत भैंस और गायों को मारने से होती है। दूसरे दिन छोटे बच्चे मुर्गों के साथ खेलते हैं जिन मुर्गों को शाम को मार दिया जाता है। गांव के युवाओं के लिए कुश्ती प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। लड़के और लड़कियाँ अपने युवागृहों (डोरमेटरी) में इकट्ठा होते हैं। वे त्योहार के तीसरे दिन अपने युवागृहों में भोजन और मांस तैयार करते हैं। खाद्य पदार्थों का परस्पर आदान–प्रदान किया जाता है और गाँव के लोग भव्य दावत में भाग लेते हैं। लड़कों द्वारा एक कुत्ते को मारा

जाता है और कुत्ते का सिर लड़कियों के युवागृह में दे दिया जाता है ताकि लड़कियां भोजन की तैयारी कर सकें । विवाहित महिलाएं अपने माता–पिता को मदिरा परोसती हैं। इस अवसर पर लंबी कूद प्रतियोगिता, कुश्ती प्रतियोगिता आदि आयोजित की जाती है। प्रतियोगिता शुरू करने से पहले सभी पुरुष प्रतिभागी अनिवार्य रूप से स्नान करने के लिए पास के झरने में जाते हैं जिसे 'एडुई कुंग' कहा जाता है। खुल्लकापा से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद उसकी उपस्थिति में प्रतियोगिता शुरू होती है।

गंग–नगाई (Gang& Ngai) : मणिपुर में 29 विभिन्न जनजातियाँ निवास करती हैं। यहाँ नागाओं के विभिन्न समूह अपनी संस्कृति और रीति–रिवाजों को विभिन्न त्योहारों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। गंग–नगाई कबुई नागाओं का प्रमुख त्योहार है। दिसंबर–जनवरी महीने में पांच दिनों तक मनाया जानेवाला गंग–नगाई त्योहार राज्य के विविध संप्रदायों के रीति–रिवाजों और धर्मों से परिचित होने का अवसर प्रदान करता है। मणिपुर के कबुई नागा समुदाय अपनी जीवन शैली, संस्कृति और अपने धर्म को व्यक्त करने के इस अवसर का पूरे साल इंतजार करते रहते हैं। वे इस पांच दिवसीय त्योहार में संगीत, नृत्य, दावत का भरपूर आनंद लेते हैं। गंग–नगाई त्योहार शगुन समारोह से शुरू होता है। त्योहार के प्रथम दिन कबुई नागा पवित्र अनुष्ठानों के माध्यम से अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं। इसके बाद चार दिनों तक लगातार उत्सव मनाया जाता है। सामुदायिक दावतें, संगीत और नृत्य प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो दर्शकों के स्मृति पटल पर लंबे समय तक रहते हैं। मणिपुर में गंग–नगाई त्योहार के माध्यम से कबुई नागाओं को अपने धर्म के संरक्षण और सुरक्षा के लिए प्रोत्साहन मिलता है। रंगीन पारंपरिक वेशभूषा में वाद्ययंत्रों की धुनों पर नाचते हुए पुरुषों और महिलाओं से भरी सड़कें मणिपुर में एक सुंदर दृश्य उपस्थित करती हैं। इस त्योहार के अवसर पर दोस्तों और परिवारों के बीच उपहारों का आदान–प्रदान भी किया जाता है। यह त्योहार आम तौर पर दिसंबर–जनवरी महीने में मनाया जाता है।

चुमफा (Chumpha) : तंगखुल नागा जनजाति के लोगों का निवास मणिपुर के उखरुल जिले में है। चुम्फु या चुम्फा इस समुदाय का एक विशिष्ट त्योहार है जो हर साल दिसंबर में फसल की कटाई के बाद

सात दिनों तक मनाया जाता है। तंगखुल नागा इस त्योहार को बहुत धूमधाम के साथ मनाते हैं। अन्य त्योहारों से अलग इस त्योहार में महिलाओं द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। इस त्योहार की पूर्व संध्या पर गांव के तालाबों को साफ किया जाता है और तालाबों को अच्छी तरह से सुखा दिया जाता है। अगले दिन सुबह किसी भद्र महिला को तालाब से पानी लेने की अनुमति दी जाती है। तंगखुल समुदाय की एक अनूठी परंपरा यह है कि वे पेय जल की शुद्धता पर विशेष ध्यान देते हैं। वे पीने के पानी की विशेष देखभाल करते हैं और शुद्ध व उबला हुआ पानी पीते हैं। वे सभी जल स्रोतों की समय–समय पर साफ–सफाई करते रहते हैं वे अपने तालाबों को बाड़ से घेरकर रखते हैं तथा किसी को अपने जानवरों को नहलाने और इसमें कपड़े धोने की अनुमति नहीं देते हैं। इस समुदाय में एक परंपरा है कि जब तक चुम्फु त्योहार नहीं मनाया जाता है और आवश्यक अनुष्ठान आयोजित नहीं किए जाते हैं तब तक नया चावल खाना वर्जित है। इस त्योहार में महिलाओं द्वारा धन की देवी की पूजा कीजारी है। इस दिन पुरुष सदस्य लगातार दो रातों तक घर से बाहर रहते हैं। अगर उनके पति गलती से अनुष्ठान को देख लेते हैं तो यह माना जाता है कि आगामी वर्ष में व्यक्ति को शिकार, मछली पकड़ने या युद्ध में कोई सफलता नहीं मिलेगी। अनुष्ठान के बाद महिला अपनी सास के साथ खलिहान में पूरे परिवार के साथ चूल्हे के आसपास बैठती है और उसकी सास उसके लिए कुर्सी खाली करती है। उस खाली कुर्सी पर बहू बैठती है। कुर्सी को खाली करने का तात्पर्य यह है कि युवा दुल्हन को घर के प्रत्येक काम का प्रभार दे दिया गया और अब वह उस घर की मालकिन बन गई। त्योहार के अंतिम तीन दिन सामाजिक समारोहों और मनोरंजन कार्यक्रमों के लिए समर्पित होते हैं। सामाजिक समारोहों में सगे–सम्बन्धियों और दोस्तों को आमंत्रित किया जाता है। इस त्योहार का समापन गांव के भीतर एक जुलूस के साथ होता है।

चेईराओबा (Cheiraoba) : चेईराओबा एक महत्वपूर्ण मैतेई त्योहार है। चेईराओबा उत्सव की शुरुआत पहली शताब्दी में पखंगबा द्वारा की गई थी। इस त्योहार को पहले 'कुम्गी लकयेन तैबा' अथवा 'सजिबु लकयेन तैबा' के नाम से जानते थे। 'सजिबु' (मार्च–अप्रैल) महीने के पहले दिन में इसका आयोजन किया जाता है। यह मणिपुर के नए

वर्ष का त्योहार है जिसे सभी मैतेई परम्परागत तरीके से मनाते हैं। पहले इस त्योहार की घोषणा चार 'पना' के प्रमुख करते थे। पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राजा क्यम्बा के शासनकाल में अनुष्ठानों के तरीकों में बदलाव किया गया और चार पना के स्थान पर शाही अधिकारी त्योहार की घोषणा करने लगे जिन्हें 'चेईताबा' कहा जाता था। 'चेईताबा' मैतेई ब्राह्मण होता था, कोई गैर हिंदू 'चेईताबा' नहीं बन सकता था। राजा की उपस्थिति में अनुष्ठान आयोजित होता था। चेईराओबा 'चेई' और 'राओबा' के योग से बना है। 'चेई' का अर्थ वर्ष और 'राओबा' का अर्थ 'चिल्लाना' होता है। अतः चेईराओबा का अर्थ नए वर्ष की घोषणा है। 'पना' अथवा 'चेईताबा' द्वारा त्योहार की घोषणा से 'चेईराओबा' शब्द का संबंध है। मैतेई के अतिरिक्त पंगल समुदाय (मणिपुरी मुस्लिम) भी यह त्योहार मनाता है। बाँस में लगा झंडा और घंटी बीते हुए वर्ष और आनेवाले वर्ष के संकेतक हैं। इस त्योहार के दौरान लोग अपने घरों की साफ–सफाई कर उसे सजाते हैं। इस उत्सव के अवसर पर विशेष प्रकार के व्यंजन तैयार किए जाते हैं और सर्वप्रथम विभिन्न देवताओं को व्यंजन अर्पित किए जाते हैं। इस दिन गाँव के लोग निकट में स्थित पर्वत चोटी पर चढ़ते हैं। पहाड़ी की चोटी पर चढ़ने का अनुष्ठान त्योहार का अभिन्न अंग है। ग्रामीणों का विश्वास है कि ऐसा करने से वे सांसारिक जीवन में अधिक से अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने में सक्षम होंगे। मणिपुर के प्रत्येक घर में कुलदेवता सनामही की पूजा की जाती है। इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं और नए बर्तन भी खरीदते हैं। पूरे मणिपुर में यह त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर परिवारों और दोस्तों के बीच उपहारों का आदान–प्रदान किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह लोकप्रिय त्योहार परिवार के सदस्यों के बीच अटूट प्रेम बंधन का प्रतीक है। चेईराओबा का समारोह राज्य स्तर पर आयोजित किया जाता है। वैयक्तिक स्तर पर भी इस त्योहार का आयोजन किया जाता है।

हेईग्रु हिडोंगबा (Heigru – Hidongba) : यह मणिपुर के मैतै समुदाय का एक प्राचीन त्योहार है। यह त्योहार सितंबर महीने में मनाया जाता है। यह त्योहार आनंद का उत्सव है जिसका धार्मिक महत्व भी है। नाव दौड़ इस लोकप्रिय त्योहार का एक अभिन्न अंग है। दौड़ शुरू होने से पहले श्री विष्णु की मूर्ति स्थापित की जाती है। मणिपुर में

यह त्योहार राजर्षि भाग्यचंद्र से बहुत पहले से मनाया जा रहा था। यह 'सनमही पखंगबा' की पूजा से संबंधित उत्सव था। उत्सव का कोई निश्चित दिन नहीं था। जिस दिन से राजर्षि भाग्यचंद्र ने अपने चाचा नोंगपोक लेईरीखोम्बा (अनंतसई) के साथ श्री बिजय गोविंद की उपासना शुरू की उस अवसर को यादगार बनाने के लिए हेईग्रु हिडोंगबा का भव्य उत्सव आरंभ किया। यह निर्णय लिया गया कि अगले वर्ष से यह उत्सव मनाया जाएगा। तब से यह त्योहार परंपरागत तरीके से मनाया जाता है। मेइडिंग–यू इरेंगा के समय से इस त्योहार के आयोजन में कई बदलाव हुए हैं। राजर्षि भाग्यचंद्र ने प्राचीन मैतेई पारंपरिक तत्वों के साथ वैष्णववाद के तत्वों जैसे– पूजा, फल–फूल अर्पण, संकीर्तन, शंख ध्वनि आदि का मिश्रण किया और नाव पर चढ़ने के बाद श्री बिजय गोविंद की आरती की। हेईग्रु हिडोंगबा के सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक नौका दौड़ का शानदार दृश्यांकन है। दौड़ शुरू होने से पहले खबक लकपा नाव (एक साथ बंधी दो नावें) में सवार होकर श्री बिजय गोविंदा जुलूस में जाते हैं जिसे 'लाई लमयेंगबा' के नाम से जाना जाता है। श्री बिजय गोविंद को फल, फूल अर्पित किया जाता है और उनकी आरती की जाती है। जुलूस के बाद श्री बिजय गोविंद को ले जानेवाली नाव पूर्व की ओर जाती है। यहाँ प्रत्येक टीम का नेता नाव पर आकर देवता को प्रसाद अर्पित करता है। संक्षिप्त विश्राम के बाद नौकाओं को दौड़ क्षेत्र में लाया जाता है और दौड़ शुरू होती है। नाव की दौड़ से एक दिन पहले सुबह के समय प्रत्येक टीम का नेतृत्व करनेवाले दो व्यक्ति एक कंटेनर में चांदी और सोने से बने सामान डालते हैं और इसे श्री बिजय गोविंदा को भेंट करते हैं। इससे यह प्रदर्शित किया जाता है कि सभी लोग ब्रह्मांड के सर्वोच्च स्वामी के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। ये मैतेई परंपरा में पूजा के प्राचीन तरीके हैं । दौड़ के दिन एक सौ आठ हेईक्रू से बनी एक माला और एक सौ आठ चावल के दानों से बनी दूसरी माला श्री बिजय गोविंदा को अर्पित की जाती है और फिर उन्हें दो नावों पर रखा जाता है । कौन सी माला किस नाव पर रखी जाएगी यह पंडितों द्वारा दौड़ के दिन तय किया जाता है। जब दौड़ का विजेता घोषित किया जाता है तो यह घोषणा की जाती है कि या तो हेईक्रू परेंग टीम या चेंग परेंग टीम की जीत हुई है। चेंग परेंग का महत्व यह दर्शाना है कि जिस ईश्वर ने हमें अन्न दिया है वह

अन्न बदले में उसे वापस दिया जा रहा है। चेंग परेंग व्यक्ति की आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है।

निंगोल चकौबा (Ningol Chakouba) : निंगोल चकौबा मणिपुर का सबसे बड़ा और रंगीन त्योहार है। यह मैतै लोगों का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। 'निंगोल चकौबा' का अर्थ है महिलाओं को पैतृक घर में भव्य भोज के लिए आमंत्रित करना। 'निंगोल' का अर्थ है 'महिला' और 'चकौबा' का अर्थ है 'भोजन के लिए बुलाना'। इसलिए यह दिन विवाहिता बेटियों और बहनों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। इसमें सभी उम्र की बहन और बेटियों को आमंत्रित किया जाता है। प्रत्येक वर्ष अक्टूबर–नवंबर माह में इस त्योहार का आयोजन किया जाता है। इस त्योहार में अमीर–गरीब सभी शामिल होते हैं। परंपरा के अनुसार त्योहार के कुछ दिन पहले सभी बहन बेटियों को औपचारिक रूप से आमंत्रण भेजा जाता है। इस त्योहार के अवसर पर सभी बहन–बेटियाँ अपने माता–पिता के घर में कुछ समय बिताती हैं। इस त्योहार में महिलाएं पारंपरिक परिधान और अलंकार धारण कर अपने बच्चों के साथ अपने पैतृक घर में आती हैं, अपने माता–पिता और भाइयों से मिलती हैं और उनके साथ भोजन करती हैं। दूर देश–प्रदेश में रहनेवाली महिलाएं भी इस मौके को छोड़ना नहीं चाहती हैं, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस त्योहार में शामिल होनेवाली महिलाएं भाग्यशाली होती हैं। अपने माता–पिता के घर पर महिलाओं को स्वादिष्ट भोजन, उपहार और पूर्ण आराम दिया जाता है। माता–पिता और भाइयों द्वारा अपनी बेटियों और बहनों के लिए सुस्वादु भोजन तैयार किए जाते हैं। माता–पिता, दादा–दादी, भाई आदि घर के सभी सदस्य अपनी निंगोल (बेटियों और बहनों) का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं। पारिवारिक आत्मीयता को पुनर्जीवित करने के लिए इससे बेहतर कोई अवसर नहीं हो सकता है। परंपरा के अनुसार शादी के बाद महिला अपने पैतृक घर को भौतिक रूप से तो छोड़ देती है, लेकिन जिस घर में वह पैदा हुई और पली–बढ़ी उस घर को मन से कभी नहीं छोड़ पाती है। निश्चित रूप से यह त्योहार परिवार के सदस्यों को पुनर्मिलन का अवसर देता है। यह मूल रूप से परिवार के पुनर्मिलन का उत्सव है। इस त्योहार में कई पीढ़ियों के लोग, पुरुष और महिला, युवा और बुजुर्ग मिलते हैं और त्योहार का आनंद लेते हैं। यह त्योहार भाई–बहनों के बीच स्नेहसूत्र को मजबूत बनाता

है। भव्य दावत के बाद माता–पिता बेटियों और बहनों को सामान्य उपहार के साथ आशीर्वाद भी देते हैं। कहा जाता है कि बहन के साथ कभी भी दुर्व्यवहार नही करना चाहिए क्योंकि भाई की खुशी उसकी बहन की खुशी में निहित है। यह त्योहार पारिवारिक आत्मीयता को पुनर्जीवित करने और रिश्तेदारों के बीच स्नेह का संचार करने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। आजकल यह त्योहार पंगल (मणिपुरी मुसलमानों) द्वारा भी मनाया जाता है।

रास लीला : रासलीला में राधा और कृष्ण के अलौकिक प्रेम के साथ–साथ गोपियों के उदात्त और पारलौकिक प्रेम और प्रभु की भक्ति को दर्शाया जाता है। यह आम तौर पर मंदिर के सामने किया जाता है और दर्शक भक्ति की गहराई में डूबकर इसे देखते हैं। रास का प्रदर्शन बसंत पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा और कार्तिक पूर्णिमा की रात में इम्फाल स्थित श्रीश्री गोविंदजी के मंदिर में किया जाता है और बाद में इसका प्रदर्शन स्थानीय मंदिरों में किया जाता है। रचना के अनुसार इसका प्रदर्शन एकल, युगल और समूह में किया जा सकता है। नृत्य की इस विशिष्ट शैली में सूक्ष्मता, नवीनता और आकर्षण है। नर्तकों की वेशभूषा का कलात्मक सौन्दर्य दर्शकों को अभिभूत कर देता है। मणिपुरी रास एक नृत्य नाटिका उत्सव है जो श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित है । रासलीला राजर्षि भाग्यचंद्र (1777–1891) की व्यापक दृष्टि की उत्पत्ति है। रासलीला में वृंदावन की गोपियों के साथ श्रीकृष्ण के दिव्य प्रेम की कहानी प्रदर्शित की गई है। रासलीला का यह त्योहार मुख्य रूप से श्री श्री गोविंदजी मंदिर, इंफाल में मनाया जाता है। यह राधा और बृंदावन की अन्य गोपियों के साथ भगवान कृष्ण का नृत्य उत्सव है। यह श्रीकृष्ण के दिव्य प्रेम के बारे में नृत्य नाटिका (लीला) है जो मणिपुरी वैष्णव की जीवन शैली से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है। भक्ति योग में इस त्योहार का बहुत महत्व है क्योंकि यह राधा और श्रीकृष्ण के लिए अन्य गोपियों के उदात्त प्रेम को प्रकट करता है। इस त्योहार के अनेक नृत्य मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य के रूप में संगीत प्रेमियों के बीच प्रसिद्ध है। मणिपुरी रास पांच प्रकार के होते हैं– वसंत रास, कुंज रास, महारास, नित्य रास और दिबा रास। बसंत रास, कुंज रास और महारास की शुरुआत स्वयं राजश्री भाग्यचंद्र महाराज ने की थी और बसंत पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा और कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि में श्रीगोविंद जी की मूर्ति स्थापित कर

श्री श्री गोविन्दजी मण्डप में उनका प्रदर्शन किया जाता था । नित्य रास की शुरुआत उनके पोते श्री चंद्रकीर्ति महाराजा और दिव्य रास की शुरुआत श्री चूड़ाचाँद महाराजा द्वारा की गई थी।

अंग्गी–फेव त्योहार (Anggee – Pheo Festival) : थंगल मणिपुर की एक नागा जनजाति है जिसके सभी गाँव सेनापति जिले में स्थित हैं। सरकारी दस्तावेजों में इन्हें 'कोईरव' कहा गया है। इस समुदाय को 'कोईरव' नाम संभवतः दूसरे लोगों ने दिया है क्योंकि इस समुदाय के लोग खुद को 'कोईरव' नहीं कहते हैं। अंग्गी–फेव इस जनजाति का एक प्रमुख त्योहार है जिसका आयोजन जनवरी माह में किया जाता है। 'अंग्गी–फेव' का शाब्दिक अर्थ 'ढाल की सफाई' है। इस त्योहार में सभी प्रकार के औजारों और उपकरणों जैसे, कुदाल, दाव, कुल्हाड़ी, फावड़ा आदि की साफ जल से सफाई की जाती है। इस त्योहार का उद्देश्य मनुष्य के सभी पापों को पीछे छोड़ते हुए आगामी वर्ष की सुख–समृद्धि के लिए प्रयत्न करना है। यह त्योहार तीन दिनों तक मनाया जाता है। इस त्योहार में पुरुष वर्ग मुख्य भूमिका निभाता है। इस त्योहार के प्रथम दिन पुरुषों द्वारा औजारों और उपकरणों जैसे, कुदाल, दाव, कुल्हाड़ी, फावड़ा आदि की सफाई की जाती है। त्योहार के दूसरे दिन पुरुषों के लिए महिलाएं चावल से बनी ताजा मदिरा लाती हैं। सबसे पहले ईश्वर के नाम पर थोड़ी मदिरा अर्पित की जाती है और "ओ सरई नंग तारी–सकरिला" का उच्चारण किया जाता है जिसका अर्थ है "हे ईश्वर! सबसे पहले आप मदिरापान और भोजन करें।" इसके बाद महिला–पुरुष सभी भोज में शामिल होते हैं और मदिरा का सेवन करते हैं। तीसरे दिन त्योहार मनाया जाता है।

लिन्हू त्योहार (Linhu Festival) : थंगल मणिपुर का एक आदिवासी समुदाय है जिसकी अधिकांश आबादी सेनापति जिले में निवास करती है। मणिपुर का थंगल समुदाय प्रत्येक वर्ष फरवरी महीने में लिन्हू त्योहार मनाता है। तीन दिनों तक धूमधाम से इसका आयोजन किया जाता है। इस दिन गाँव का चीफ उपवास रहकर ईश्वर की पूजा करता है। यह इस समुदाय का कृषि संबंधी त्योहार है। इस त्योहार के पहले किसी को अपने खेतों में बीज बोने की अनुमति नहीं है। इस त्योहार की कोई निश्चित तिथि नहीं है। सामान्यतः गाँव के बुजुर्ग त्योहार की तिथि निर्धारित कर उसकी सार्वजनिक घोषणा करते हैं। इस त्योहार का मुख्य उद्देश्य गाँव के चीफ द्वारा अच्छी फसल के लिए

प्रार्थना करना है। त्योहार के एक दिन पहले गाँव के सभी द्वार बंद कर दिए जाते हैं तथा किसी को गाँव से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाती। कोई आकस्मिक स्थिति उत्पन्न होने पर गाँव के चीफ द्वारा गाँव से बाहर जाने अथवा किसी को गाँव में प्रवेश करने की अनुमति दी जाती है। गाँव का चीफ इस त्योहार के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाता है। वह तीन दिनों तक उपवास रहता है और अलग कमरे में सोता है। उसकी सहायता के लिए एक अविवाहित युवक उसके साथ रहता है। वह तीन दिनों तक केले के पत्ते में चार बार चावल से बनी स्थानीय मदिरा पीता है। इस दौरान गाँव के प्रत्येक परिवार का यह दायित्व है कि वह चीफ के लिए निरंतर मदिरा की आपूर्ति करता रहे। ईश्वर को भी मदिरा अर्पित की जाती है और उनसे अच्छी फसल के लिए प्रार्थना की जाती है। त्योहार के दौरान चीफ द्वारा देखे गए सपने अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। उन सपनों से फसलों और आनेवाले वर्ष का संकेत मिलता है। इन तीन दिनों तक चीफ के कदम जमीन पर नहीं पड़ते हैं, या तो वह केले के पत्ते पर अथवा लकड़ी के तख्ते पर अपने पैर रखता है। इस दौरान कोई उनसे नहीं मिल सकता। चौथे दिन चीफ का उपवास और त्योहार समाप्त होता है। त्योहार के तीन दिनों तक गाँव में उत्सव का माहौल रहता है। गीत, नृत्य, भोज और विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं जिनमें हर उम्र के लोग शामिल होते हैं।

कांग चिंगबा (Kang Chingba) : कांग चिंगबा मणिपुर का एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है। यह उत्सव प्रत्येक वर्ष जून–जुलाई महीने में मनाया जाता है। यह पुरी की रथयात्रा के समान है लेकिन रथ निर्माण की शैली पर मैतै स्थापत्य कला की छाप है। 'कांग' का अर्थ पहिया होता है। भगवान जगन्नाथ को जिस रथ में ले जाया जाता है उसे भी 'कांग' कहा जाता है। कांग चिंगबा त्योहार दस दिनों तक पूरे मणिपुर में मनाया जाता है। रथ में भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की काठ की मूर्तियाँ रखकर उनकी शोभा यात्रा निकाली जाती है। इस त्योहार को देखने और शोभा यात्रा में शामिल होने के लिए पूरे मणिपुर से हजारों भक्त इंफाल में आते हैं और विशाल रथ को खींचते हैं। रथ को गोबिंदजी मंदिर से सनथोंग (महल के द्वार) तक लाया जाता है और पुनः उसी मार्ग से मंदिर तक वापस लाया जाता है। गोबिंदजी मंदिर के अतिरिक्त पूरे मणिपुर में

कंग चिंगबा का आयोजन होता है लेकिन परिवार के स्तर पर कंग चिंगबा का आयोजन गोबिंदजी मंदिर के आयोजन के बाद ही किया जा सकता है। कंग चिंगबा के आयोजन का इतिहास बहुत पुराना है। सर्वप्रथम कांग चिंगबा का आयोजन वर्ष 1832 ई. में राजा गंभीर सिंह ने प्रारंभ किया था। पहले सात रंगों का ध्वज 'कंगलेईपक' (मणिपुर के सात वंशों का प्रतिनिधित्व करनेवाला ध्वज) कांग की छत पर फहराया जाता था, लेकिन अब ध्वज के स्थान पर 'कांगशी' (घंटी) का उपयोग किया जाता है। मैतेई समाज और उसकी प्रत्येक मान्यता, अनुष्ठान, त्योहार, संस्कृति और परंपराओं में पृथ्वी की रचना, जीवित प्राणियों की सृष्टि, मानव सभ्यता और प्रकृति आदि आधारभूत तत्व के रूप में मौजूद रहती है। मणिपुर में पहली बार कंग चिंगबा का आयोजन वर्ष 1832 ई. में मणिपुरी महीने 'इना' (मई दृ जून) की दूसरी तिथि को शनिवार के दिन हुआ था। इसके बाद सात साल तक इस त्योहार का आयोजन नहीं हुआ। पुनः वर्ष 1840 में राजा गंभीर सिंह के निधन के बाद उनके बेटे चंद्रकीर्ति ने इना के दसवें दिन इस त्योहार का आयोजन किया। इससे स्पष्ट होता है कि शुरुआत में त्योहार का कोई दिन निश्चित नहीं था, हालांकि इना महीने में इसका आयोजन किया जाता था। चार साल के विराम के बाद वर्ष 1846 ई. में पुरी में इस उत्सव का आयोजन किया गया । इस प्रकार मणिपुर में जगन्नाथ पंथ का आगमन हुआ और कंग चिंगबा मैतेई हिंदुओं का सबसे बड़ा त्योहार बन गया। मणिपुर में रथयात्रा के अवसर पर भक्तों द्वारा खींचे गए रथ में ब्राह्मण और शंख, मृदंग तथा झांझ लिए संगीतकारों की एक टीम शामिल होती है। अपने हाथों में चँवर लेकर दो युवा लड़कियां द्वारपाला की भूमिका में रहती हैं। जहां भी रथ रुकता है वहां भक्तगण फल, फूल, अगरबत्ती से भगवान की पूजा करते हैं। आरती के बाद फल वितरित किए जाते हैं। लोगों का मानना है कि रस्सियों को पकड़ने और मूर्तियों के साथ रथ को खींचने का अवसर मिलने से सभी दुख और पाप दूर हो जाते हैं। इस विश्वास के साथ सभी क्षेत्रों के लोग रथ को खींचने के लिए दूर–दूर से आते हैं। नौ दिनों तक प्रतिदिन मंडप में जयदेव (भगवान का स्तुति गीत) और 'खुबाक–ईशै' का प्रदर्शन होता है। 'खुबाक' का अर्थ ताली और 'ईशै' का अर्थ संगीत होता है। 'जयदेव' और 'खुबाक–ईशै' के बाद प्रसाद के रूप में खिचड़ी का वितरण किया जाता है। कमल के पत्ते

पर प्रसाद परोसा जाता है जिसके कारण प्रसाद का स्वाद बढ़ जाता है। प्रसाद के रूप में खिचड़ी परोसने के पीछे एक स्थानीय मान्यता है। ऐसा माना जाता है कि एक बार सुभद्रा को उनके भाइयों ने खाना बनाने के लिए कहा। समुद्री लहरों की आवाज से भयभीत होकर सुभद्रा ने जल्दबाजी में चावल और दाल दोनों को एक ही बर्तन में मिला दिया जो खिचड़ी बन गई। इसलिए खिचड़ी कंग उत्सव का एक अभिन्न अंग बन गई। इंगी के बारहवें दिन को हरिशयन कहा जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन भगवान विश्राम करते हैं। हरिशयन के दिन उत्सव का समापन होता है। विभिन्न प्रकार के मौसमी फल और फूल जैसे अनान्नास, नाशपाती, बेर, कमल के बीज, कमल के फूल, कमल के पत्ते और सूखे मटर और धान के दानों की माला आदि कंग त्योहार से जुड़े हुए हैं।

ख़्वाहिशें

बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-4-1
संस्करण : 2015, मूल्य : 300/-

शोध–लेख

भारत के निर्माण के आलोक में नई शिक्षा नीति

अमित कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर (उ.प्र.)
amitkumarpandey25@gmail.com

प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप, अपने नागरिकों के जिन गुणों, कौशलों और योग्यताओं को आवश्यक समझता है उसके अनुरूप शिक्षा व्यवस्था के संचालन हेतु नीतियों का निर्माण करता है। शिक्षा का स्वरूप क्या होगा? आदर्श क्या होंगे ? किन विषयों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी, जिससे कि वर्तमान की चुनौतियों एवं भविष्य की आकांक्षाओं पर खरा उतरने के साथ वैश्विक जगत से कंधे से कंधा मिलाकर उस देश के नागरिक चल सके इत्यादि सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार पूर्वक शिक्षा नीति में विचार किया जाता है। सरकारों की यह विशेष जिम्मेदारी है कि अपने नागरिकों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराएं, क्योंकि यह उनका मौलिक अधिकार है और इससे उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता है। शिक्षा की सर्व सुलभता एवं शैक्षिक अवसरों की समानता की संवैधानिक प्रतिबद्धता की भावना से ओतप्रोत शिक्षा नीति सरकार का वह नीतिगत दस्तावेज है, जिसके माध्यम से सरकार प्रजातांत्रिक मूल्यों का अपने नागरिकों में रोपण करते हुए, अपने अतीत की संस्कृति, परंपराओं, आकांक्षाओं को वर्तमान एवं भविष्य के मध्य सामंजस्य का प्रतिबिंबित स्वरूप प्रस्तुत करती है। यह राष्ट्र की आवश्यकताओं का सम्यक विवेचन होता है।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

1959 तक भारत में कोई शिक्षा नीति नही थी। आजादी के उपरांत ही आचार्य विनोबा भावे ने प्रचलित शिक्षा पद्धति पर प्रश्नचिह्न उठाते हुए 1951 में हरिजन पत्रिका के लेख में कहा था कि, ष्यदि पुरानी शिक्षा पद्धति अब भी आरंभ रहती है तो इसका अर्थ होगा कि कुछ भी परिवर्तित नहीं हुआ है। मात्र विदेशी शासन को हमने हटाया है।ष कोठारी आयोग 1964–66 की अनुशंसा के आधार पर 1968 में प्रथम भारतीय शिक्षा नीति आई इसके बाद 1986 में दूसरी और 1992 में इसमें कुछ संशोधन प्रस्तुत किया गया। 1986 के बाद 2020 में 34 वर्षों के अंतराल के बाद ढाई लाख ग्राम पंचायतों, 66100 ब्लॉक और 650 जिलों के साथ–साथ शिक्षाविदों, अध्यापकों, जनप्रतिनिधियों एवं छात्रों सहित आम जनमानस के सुझावों के पुंज के रूप में प्रस्तुत की गई है। इस शिक्षा नीति को चरणबद्ध ढंग के संपूर्ण देश में लागू किया जाना है, क्योंकि शिक्षा केंद्र व राज्य दोनों के अधिकार क्षेत्र में आता है। यह समवर्ती सूची का विषय है। इसके लगभग 75 प्रतिशत प्रावधान 2024 तक और शेष प्रावधान चरणबद्ध ढंग से 2035 तक लागू किए जाने हैं। शिक्षा मंत्रालय को मानव संसाधन विकास मंत्रालय करने और अब उसे पुनः शिक्षा मंत्रालय करने का फायदा तभी मिलेगा जब यह शिक्षा नीति भारतीय युवाओं को शिक्षा के समान अवसर, रोजगार के साधन उपलब्ध कराते हुए एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना योगदान दे। जिससे अखिल विश्व में भारतीय मेधा–शक्ति का दबदबा कायम हो एवं भारत विश्व–गुरु की संज्ञा से विभूषित हो सके। शिक्षा नीति तभी सफल कहलायेगी जब यह भारत को और अधिक रचनात्मक, बुद्धिमान एवं प्रगतिशील तथा आत्मनिर्भर बनाये।

देश के प्रख्यात वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित 9 सदस्यीय कमेटी द्वारा 31 मई, 2019 को सौंपी गई अनुशंसा के आधार पर घोषित यह नीति भारत लोकाचार में निहित, एक वैश्विक सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली के निर्माण की परिकल्पना करती है, जिसका लक्ष्य भारत को एक विज्ञान की महाशक्ति बनाना है। हम जानते हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है जिसमें 1028 विश्वविद्यालय, 45000 कॉलेज, 14 लाख स्कूल तथा 33 करोड़ विद्यार्थी सम्मिलित हैं। अभी जीडीपी का 4.3 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है इसे बढ़ाकर 6ः करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण स्तंभों को निम्नलिखित क्रम में समझने का प्रयास किया जा सकता है–

- **शैक्षिक संरचना :** प्रस्तावित शिक्षा नीति वर्तमान प्रचलित 10़2 ढांचे के स्थान पर 5़3़3़4 उम्र वर्ग क्रमशः 3–8, 8–11, 11–14 तथा 14–18 प्रतिमान प्रस्तुत कर रही है। 3 वर्ष आंगनवाड़ी के साथ पहली तथा दूसरी कक्षा को रखा गया है, इसके बाद कक्षा 3, 4, 5 अगले चरण में कक्षा 6, 7, 8 और अंतिम चरण में 9, 10, 11, 12।
- **मातृभाषा को प्रोत्साहन एवं शिक्षा का माध्यम मातृभाषा :** शिक्षा का माध्यम मातृभाषा का होना एक शुभ संकेत है और पांचवी तक की पढ़ाई मातृभाषाध्क्षेत्रीय भाषा में होगी।
- **त्रिभाषा सूत्र :** त्रिभाषा सूत्र को भी लचीला बनाया जा रहा है। भाषा चुनने का अधिकार राज्यों को होगा इससे गैर हिंदी भाषी राज्यों को लाभ मिलने की संभावना है।
- **उच्च शिक्षा :** वर्तमान नामांकन 26.3ः को 2035 तक 50ः पहुंचाने के साथ–साथ 3.5 करोड़ नई सीटों को जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यूजीसी, एआईसीटीई, भारतीय वास्तु कला परिषद, फार्मेसी परिषद तथा NCTE को एक नियामक आयोग के अंतर्गत लाया जाएगा। केवल चिकित्सा शिक्षा एवं विधि के लिए स्वतंत्र आयोग रहेगा। कालेजों को क्रेडिट स्वायत्तता देकर विश्वविद्यालयों की संबद्धता प्रक्रिया से 15 वर्ष में खत्म किया जाना है।
- **शोध कार्य :** एमफिल कोर्स को बंद करने के साथ शोध के इच्छुक छात्रों के लिए 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम की शुरुआत की जा रही है (3 वर्षीय BA एवं 1 वर्ष MA) । इसके उपरांत वे सीधे शोध कर सकेंगे। जो नौकरी करना चाहे वे 3 वर्षीय बीए कर सकते हैं। एक शीर्ष निकाय की स्थापना की जा रही है जिसका नामकरण नेशनल रिसर्च फाउंडेशन छत्थ् होगा।
- **बीच में पढ़ाई छोड़ने वालों का ध्यान :** मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम द्वारा किन्ही कारणों व पाठ्यक्रम पूरा न कर पाने वालों का ध्यान रखा जा रहा है। एक वर्ष के बाद

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

सर्टिफिकेट, 2 वर्ष पूर्ण करने के उपरांत डिप्लोमा एवं तीन अथवा 4 वर्ष पूर्ण करने पर डिग्री मिलेगी। छात्र अपना वर्तमान कोर्स बदल कर दूसरा कोर्स भी चुन सकेंगे। पाठ्यक्रम को क्रेडिट के आधार पर रखा जाएगा।

- **रोजगार एवं कौशलपरक पाठ्यक्रम :** छठी कक्षा से ही वोकेशनल पाठ्यक्रम की शुरुआत की जा रही है। सामुदायिक सेवा, कला–शिल्प खेल, योग इत्यादि विषयों को पाठ्यक्रम में जोड़ा जा रहा है। कक्षा 6 से 8 तक के बच्चे 10 दिन बिना स्कूली बैग के विद्यालय जाएंगे। इन दिनों वे इंटर्नशिप पर कार्य की बारीकियां सीखेंगे जिसमें स्थानीय शिल्प एवं उद्योगों की प्रमुखता होगी। स्थानीय कलाकारों को भी विद्यालय में बुलाया जाएगा।
- **बोर्ड परीक्षाओं पर लचीला रुख :** बोर्ड परीक्षाओं का स्वरूप बदला जा रहा है। कांसेप्ट और ज्ञान को महत्व दिया जाएगा। बोर्ड के भार को भी कर कम करने की बात कही जा रही है। वस्तुनिष्ठ और विषय आधारित परीक्षा ली जाएगी। रिपोर्ट कार्ड अब समग्र मूल्यांकन पर आधारित होगा।
- **अध्यापक शिक्षा :** शिक्षक बनने की योग्यता ठ.म्क होगी और यह 4 वर्षीय पाठ्यक्रम होगा जो कक्षा 12 के उपरांत ही उपलब्ध होगा। शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण भी समय–समय पर उपलब्ध कराए जाएंगे, जिससे वह स्वयं में नवीनता ला सके। पाठ्यक्रम एवं पुस्तकों में भी बदलाव लाया जाएगा। प्रयास यह रहेगा कि प्राथमिक विद्यालयों से लेकर उच्च शिक्षा तक बेहतर अध्यापक तैयार किए जाएं।
- **शिक्षा में तकनीकी :** ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भरता बढ़ाई जा रही है। NEP में ऑनलाइन टीचिंग, ऑनलाइन लर्निंग पर जोर दिया गया है। इस हेतु एमएचआरडी के अंतर्गत एक विंग की स्थापना की जाएगी।

उपर्युक्त सुधारों एवं प्रयोगों के अतिरिक्त कुछ अन्य सुधार भी प्रस्तावित किए गए हैं। कुल मिलाकर शिक्षा नीति की यह मंशा होगी कि शिक्षा सर्व सुलभ बने, इसमें गुणवत्ता, वहनीयता, जवाबदेही विकसित की जा सके। 21वीं सदी की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित

करने वाली यह शिक्षा नीति शिक्षा को और अधिक समग्र, लचीला, छात्र की निहित क्षमताओं को बाहर लाने वाली तथा भारत को सभ्य समाज में विकसित कर इसे वैश्विक महाशक्ति में बदलेगी। छात्रों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक समझ विकसित करने का लक्ष्य एक बेहतर प्रयोग सिद्ध हो सकता है। समान एवं समावेशी शिक्षा, लैंगिक समानता, छात्रवृत्ति, भारतीय भाषाओं में शिक्षा इत्यादि महत्वपूर्ण प्रस्ताव किए जा रहे हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, संपूर्ण शिक्षा जगत को इसकी त्रुटियों पर ज्यादा ध्यान न देकर इसका स्वागत करना चाहिए। यदि किसी स्तर पर कोई समस्या आएगी तो व्यवहार में आने के उपरांत उसे दूर करने की संभावना निरंतर बनी हुई है। यह इस नीति का लचीलापन है। हमें उम्मीद है कि यह शिक्षा नीति गुणवत्ता युक्त एवं रोजगार की गारंटी युक्त शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ–साथ समय की मांग के अनुरूप आम–जन की आकांक्षाओं पर खरी उतरेगी इस से अमीर एवं गरीब के मध्य की खाई को पाटने में मदद मिल सकेगी और समाज का वंचित तबका भी शिक्षा के मुख्यधारा से जुड़ सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ :

1. थापर, रोमिला, भारत का इतिहास (1000 से 1500ई) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. दामोदरन, के, भारतीय चिंतन परंपरा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2001
3. डॉ. धर्मपाल, रमणीय वृक्ष
4. विद्यावाचस्पति, डॉ. आशापुरी, भारतीय मिथक कोष, नेशनल पब्लिशिंग नई दिल्ली
5. अखंड ज्योति, 1952 अंक

मीडिया और स्त्री

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-1-0

संस्करण : 2014, मूल्य : 165/-

बुजुर्गों की दशा-दिशा

डॉ. मीरा सिन्हा
नालंदा, बिहार
sinhams25@gmail.com

एक व्यक्ति का पोता जो महज तीन साल का है, अपने दादा जी के गालों को चूमता हुआ एक दिन पुछता है– ''दादू, तुम सबसे पहले क्यों उठते हो ? घर मे सब सोए रहते हैं। तुम दूध मेरे लिए लाने जाते हो या फिर मम्मी–पापा के डर से दुध लाते हो ?''

दादू बेचारे निरूतर थे।

पोता कहता है– ''दादू, लाल पंख बाली गोरैया भी तुम्हारी तरह होती है। तुमने गौरैया का घर क्यों बनाया। माँ, आँख दिखाकर चावल छींटने के लिए देती है। मुझे अच्छा नही लगता। चिडियाँ अकेली क्यों है दादू ? बिल्कुल तुम्हारी तरह। चिडियाँ के आँखो में भी आँसु नहीं रहता है और तुम्हारी आँखो में भी नहीं। मेरी तरह तू भी रो ले दादू! आँखों मे पूरा आँसू भरकर! .....तब सब, मम्मी, पापा, भाई, आई तुमसे पहले उठ जाएंगे। लाल पंख वाली अकेली गौरैया की तरह भोर में ही।''

अब मैं खुद से पूछती हूँ कि जो दर्द, जो आँखो का सूनापन एक तीन साल का बच्चा देख पा रहा है... वह मैं और आप क्यो नहीं देख पाते हैं ? क्यों हम उस तरफ से नजर घुमाए बैठे हैं ? जब किसी जिगर, गुर्दे और फेफडे से लाचार वृद्व को घर से निकाल दिया जाता है तो बांसवाडी की छाँह मे रह रहे उस वृद्व की आह बांस में सांय–सांय बजती है। गेंहू की खुंटी जला दिए गए खेत में भरी दुपहरी कोई बूढा किस तरह कांधों से उतार दिए गए हल–सा पड़ा रहता

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

है। मेरा तात्पर्य यह है कि हम माने या न माने, मगर हमें आज के समय में यह मानना होगा कि बुढ़ापा हमारे जीवन में एक अभिशाप की तरह आता है। यह बात अलग है कि वर्गीय आधार पर (सम्पन्न, विपन्न, श्रमजीवी, शहरी, ग्रामीण) बुजुर्गो की दूसरी की समंस्याएँ भले अलग–अलग हों, लेकिन अपनों से मिली उपेक्षा और भावनाओं का अनसुना रह जाना समान है। भले ही बड़े पद से रिटायर सम्पन्न बुजुर्ग और प्रेमचंद की बूढ़ी काकी की अपेक्षा में ताप का अंतर हो, परंतु बुनियादी बात एक जैसी ही है।

अगर हम थोडी दूर सैर करने चलें तो अमेरिका जाने की इच्छा हम सब में होती है, परंतु आप को स्मरण दिला दूँ कि 1997 में अमेरिका के 'न्यूजवीक' में छपी एक रिपोर्ट यह बताती है कि उदारवादी नीति के शुरूवाती सालों में परिवार टूटने लगे और नहीं कमाने बाले बुजुर्ग घर से निकाले जाने लगे। उनमें महिलाओं की संख्या ज्यादा थी। जो अपने कंधों पर कचरे का थैला लेकर सड़कों पर निकल पड़ी थीं, और रोटी मांगती फिरती थीं। इन्हें एक उपनाम भी दिया गया था 'बैग लेडी।' एक सर्वे के मुताविक भारत के आठ करोड़ बुजुर्गो मे से तकरीबन 40 प्रतिशत किसी–न किसी तरह की मानसिक या शारिरिक यातना भोग रहे है। स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि अब ज्यादातर बूढें अपने परिवार के साथ नहीं रहना चाहते वे 'ओल्ड एज होम' की तलाश कर रहे हैं। और भला क्यों ना करें ? अब किसी परिवार को अपने घर कि 100 साल कि एक औरत (वृद्ध)से जान का खतरा महसुस होता है और इस शक के आधार पर उसे पुरे एक दिन हाजत में बंद रखा जाता है, तो वैसे घर से बेहतर तो 'ओल्ड एज होम' ही होगा।

अकेलेपन की यह पीड़ा सिर्फ हम और आप तक ही नहीं है, यह पीड़ा दुनिया को महानतम कृति देने वाले लोगों को भी डंक मारती है। यह बात टॉलस्टॉय की डायरी से पता चलता है। उनकी डायरी मे लिखा है– 'सारा दिन उदासी में बीत जाता है। शाम ढ़लते ही मन में एक हुक सी उठती है कि कोई मुझे सहलाए, प्यार करे, वहीं स्नेह दे जो मुझे बचपन में माँ की गोद मे मिला। मैं उसकी वांह से चिपककर रोज उसी तरह जैसे बचपन मे रोता था।' सिर्फ टॉलस्टॉय ही नहीं, एण्डरसन भी बुढ़ापे में अपने मित्रों को याद किया

करते थे। नींद से अचानक जागकर डायरी लिखते थे– 'अब और नहीं ठहर सकता, मैं इस सुखी जीवन से छुटकारा पाना चाहता हूँ।'

नवउदारीकरण के इस दौर में जीने के रेशनल ही गायब होते जा रहे हैं। व्यक्ति कोई ठोस सामाजिक ईकाई न होकर केवल कंज्यूमर है। ऐसे दौर मे बुजुर्ग की तो उपेक्षा होगी ही। परंतु इन बुजुर्गो की उपेक्षा करने वालों को शायद यह मालुम नहीं कि बुढापा अल्लाह की इनायत है। हदीस में लिखा है कि 'जब कोई 60 साल की उम्र में होता है तो अल्लाह की ओर लौटता है। जब वह 70 का होता है तब अल्लाह उसे फरिश्तों का प्यारा बना देता है। जब इंसान 80 का होता है तब अल्लाह उसकी अच्छाइयों को तरजीह देते है और गुनाहो को माफ कर देते हैं। जब वह 90 का होता है तो अल्लाह फरिश्तों से कहते है कि वह हमारी अमानत है।' वहीं गाँवों में कहा जाता है कि 'बुजुर्गो की उपेक्षा करने पर सारा परिवेश आहत होता है।' कहा जाता है कि 'जब कोई नहीं सुनता उसकी बात को खडंजा हो जाता है। उदास, हैंडपंप निराश ढीली पड़ जाती है खटियां और लस्ता हो जाती है कथरी।'

हमारे पास आज कुछ ऐसे वृद्ध भी हैं, जिनके पास कभी बहुत कुछ था, मगर आज उनके पास न रहने को घर है, ना खाने को रोटी और न पहनने के लिए अंगवस्त्र। अब उनके पास सिर्फ है एक कटोरा, वह भी आग की तरह लाल। आज हमारे बुजुर्गो की हालत जोत में जुताए बैल जैसी है। एक बैल जब थककर अपनी चाल धीमी करता है या गाड़ी के जुए से सिर निकालने कि कोशिश करता है तो गाड़ीवान उसे मुक्त करने की बजाय चाबुक मारकर, पूँछ मरोड़कर या पीछे डंडा खोदकर चलने को मजबूर करता है।

आज इस आधुनिक दौर मे भी एक माँ रोज प्रतिदिन का समय एक मंदिर मे सोकर गुजारती है, वो भी महज इसलिए कि उनकी पुत्रवधु के मायके वाले आए हुए हैं, और कमरों की घर में कमी है। इतना ही नहीं... रात में घर जाने पर उनके लिए बेडरूम का स्थान रसोइघर में है। और आश्चर्य कि बात तो यह है कि उनका बेटा एक प्रशासनिक अफसर है। इधर डेढ़ बीघा जमीन वाला एक व्यक्ति अपनी जमीन बेचकर अपने इकलौते पुत्र को बैंगलौर के एक निजी इंजीनियरिंग कॉलेज से एमटेक कराता है, मगर आज वह व्यक्ति रिक्शा चलाकर अपना पेट पालता है और होल्डिंग कि छाया में रात

बिताता है। उसका बेटा पिछले 10 साल से सिंगापुर में है। एक बेटा अपने पिता को बुरी तरह पीटता है। अब जरा पिटने का कारण सुनिए– बेटे की कमाई कम है, उसके भी चार बच्चे है। बीवी का खर्चा है। इन्हें दो रोटी सुबह और दो रोटी रात मे खाने को मिलती है। एक दिन दोपहर में भुख लगी तो साथी के यहां से माड़ बोतल मे ंलेकर पी रहा था। लेकिन बेटे की नजर बोतल पर पड़ी तो वह इसे ताड़ी समझ बैठा, बोला– 'मेरे पास पैसा नही ंहै, और तुम ताड़ी पी रहे हो।' इस बात पर बेटे नें पिता की जमकर पिटाई कर दी, जबकि पिता पेंशनधारी था।

आज छह बेटे और तीन बेटियों को जन्म देने वाली एक माँ अपने दोनों पैर गंवाने के बाद P.M.C.H में लावारिश वार्ड में अकेलेपन का सामना कर रही है। पति के मरने के बाद संघर्षपूर्ण जीवन बीताकर एक माँ अपने बच्चों की परवरिस करती है और वही संतान इलाज के बहाने सदा के लिए एक नारकीय जीवन जीने के लिए अकेला छोड़ जाता है। यही हालात है एक पिता की भी... जिसे उसके पुत्र और पुत्रवधु ने इलाज के बहाने P.M.C.H में लावारिस वार्ड में छोड दिया है। इंसानियत और परिवार व्यवस्था पर चोट करते हुए वह कहते हैं कि घर जाने से बेहतर है कि 'जो जिंदगी के चार दिन बच्चे हैं यहीं गुजार दूँ। जो अपने है वो तो मुझे पहले ही मरने के लिए यहाँ छोड़ गए हैं, अब इस उम्र में कहां जाऊँगा ? जितने दिन यहां कट जाएं, ठीक हैं.... नही तो बाहर कहीं पड़ा रहूँगा। यहाँ मरने पर कम से कम लाश को कुत्ते तो नहीं नोचेगे।' 'हेल्प एज इंडिया' की रिपोर्ट से एक और बात सामने आती है, जो बिल्कुल सच है। रिपोर्ट यह कहती है कि देश भर में बुजुर्ग सिर्फ बहू–बेटों के हाथो ही नही शोषित और प्रताड़ित हो रहे हैं, बल्कि बेटियों के द्वारा भी उन्हे प्रताड़ित किया जा रहा है। और प्रताड़ना का मूल कारण है बुजुर्गो की संपत्ति। इसके अलावा उनकी स्वास्थ, सेवा सुश्रुपा भी इसके कारण है। यह दर मेट्रो शहरों की अपेक्षा छोटे शहरों में अधिक पाया गई है।

इन सारे तथ्यों का मनन–चिंतन करते हुए प्रसि़द्ध कथाकार उषा किरण खान यह कहती हैं कि 'गांव एवं शहरों के बुजुर्गो की पीड़ाएं थोड़ी अलग हैं। शहरों में अब बच्चों को दादी, नानी की कहानी की जरूरत नहीं रह गई है। उनके पास समय बिताने के लिए T.V.

एवं अन्य आधुनिक साधन है। छुट्टियों में बच्चे अभिवावक के साथ घूमने या समर कैंप में जा रहे है। वे दादा–दादी के साथ समय नहीं बिताते। इससे दो पीढियों मे ंजुड़ाव कम हो जाता है। वहां गांव में तुलनात्मक तस्वीर थोड़ी अच्छी है। लोगों के पास एक–दूसरे के लिए समय है। वहां लोग T.V. नहीं, बल्कि बुजुर्गो के साथ समय बिताना पंसद करते है।'

इधर आनंदी प्रसाद बादल जो कि एक वरिष्ठ चित्रकार है। बुजुर्गो की स्थिति को दीवाली के त्योहार से तुलना करते है। वे कहते हैं कि 'जो आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं दीवाली की चकाचौंध उन्ही को भाती है।' तात्पर्य यह है कि सम्पन्न लोगों की पीड़ा कुछ हद तक पैसा कम कर देती है। लेकिन गरीब वृद्धों को समाज में ज्यादा पीड़ा झेलनी पड़ती है। ऐसे लोग संतान की उपेक्षा सहने को विवश हो जाते है। इन सब के अलावा एक और नया सच यह है कि दुनिया में तकरीबन हर कहीं सामाजिक, राजनितिक और जैवकीय तौर पर भी बूढ़े मौसम का मिजाज व रूख बताते परिंदो कि तरह ही इस्तेमाल होते रहे हैं। अक्सर धूप में आंच, हवा में ठिठुरन या ऑक्सीजन चाट जानने वाली बरसाती नमी का बहुत सटीक बैरोमिटर माने जाते हैं। अक्सर कहा जाता है कि शहर के 21 बूढ़े 'गर्मी' की वजह से या इतने ही 'लू' के कारण मर गए। जाने कब से ये लोग समाज की सुख शांति मापने के स्केल की ही तरह इस्तेमाल होते रहे हैं। ये वाकया बताता है कि ये वृद्ध कितने अभिशप्त हैं। 'द नेशनल सर्वे ऑफ सीनियर सिटीजन इन सिंगापुर' से हासिल एक रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि दुनिया का मौजूदा विकास मॉड़ल जिसका सामाजिक न्याय से कोई लेना देना नही है, का सर्वाधिक दुष्प्रभाव बुजुर्ग ही झेल रहे हैं। अफसोस की बात तो यह है कि अभी तक वृद्धों को कोई तवज्जो नहीं मिली है, और वे खंडहरों की पुरानी ईट बनते जा रहे हैं, लेकिन इससे भी अफसोस और हैरानी की बात यह है कि हमारी सरकार भी इसे उपेक्षित समझती है। तभी तो मानवाधिकार की सार्वभौम घोषणा, 1948 के अनुच्छेद 3 में सभी व्यक्तियों के लिए जीवन के अधिकार की बात की गई है। जिसमें उसका गरिमापूर्ण जीवन समाहित है। अनच्छेद 25 के तहत प्रत्येक व्यक्ति को एक ऐसे जीवन स्तर का अधिकार है जो स्वयं उसके परिवार के स्वास्थ व कल्याण के लिए उपयुक्त हो। मानवाधिकार की

सार्वभौम घोषणा के उलट दूसरी तरफ दुनिया की कुल आबादी की 20 प्रतिशत तादाद गरीबी में जी रही है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओ की रिपोर्ट 'मल्टीडाइमेंशनल पॉवर्टी इंडेक्स' के मुताबिक भारत की 55 प्रतिशत आबादी बरीबी रेखा से नीचे का जीवन जी रही है। रॉबट मैकनमारा के मुताबिक– नकली विकास की दुनिया मे कुल आबादी का 5वाँ हिस्सा भूखे रहने को अभिशप्त है। डेढ़ अरब लोगों को चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध नहीं है। अर्थात् कोढ़ में खाज यह कि पूरी दुनिया में सरकार की भूमिका बहुत कमजोर हुई है। सरकार ने एक कानुन बनाया है कि यदि माता–पिता या कोई वरिष्ठ नागरिक अपनी देखभाल में असमर्थ है तो वह मेंटेंनस पाने के लिए कानून का सहारा ले सकता है। वह माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों का अनुरक्षण एवं कल्याण अधिनियम, 2007 की मदद ले सकता है। परंतु त्रासद यह है कि ग्रामीण या श्रमजीवी वर्ग के ज्यादातर बुजुर्ग अपनी संतान से कोई टकराव नहीं चाहते, शायद इसलिए कि वे घर की बात बाहर ले जाने या कोर्ट–कचहरी का दरवाजा खटखटाने के गुनाह से बचना चाहते हैं या फिर इसलिए कि कानून की मदद लेकर वे अपने हक तो पा लेंगे, लेकिन क्या वे अपने बच्चों में ममत्व और प्यार की भावना जगा पाएंगे ? जिनकी इस उम्र मे उन्हें सबसे ज्यादा जरूरत है। क्या अब नई पीढ़ियों से बुजुर्गो को सिर्फ यही अपेक्षा रह जाएगी कि हम उन्हें प्यार दें और वों हमें... ?

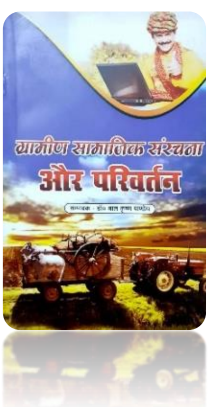

ग्रामीण सामाजिक संरचना और परिवर्तन

डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय (सं.)

आईएसबीएन : 978-81-929060-6-5

संस्करण : 2015, मूल्य : 200/-

मृत्युदंड

सलिल सरोज
salilmumtaz@gmail.com

मृत्युदंड का मतलब है कि एक अपराधी को फांसी की सजा, जिसमें अक्षम्य अपराध के लिए कानून की अदालत द्वारा दोषी ठहराया जाता है। कानून की उचित प्रक्रिया के बिना किए गए अतिरिक्त सजा से मृत्यु दंड को अलग किया जाना चाहिए। मृत्युदंड का उपयोग कभी–कभी 'कैपिटल पनिशमेंट' के साथ किया जाता है, हालांकि जुर्माना लगाने का हमेशा क्रियान्वयन नहीं होता है (भले ही इसे अपील पर बरकरार रखा जाता है), क्योंकि आजीवन कारावास की संभावना है। शब्द 'कैपिटल पनिशमेंट' सजा के सबसे गंभीर रूप के लिए है। यह वह सजा है जिसे मानवता के खिलाफ सबसे जघन्य, दुखद और घृणित अपराधों के लिए प्रयोग किया जाता है। जबकि इस तरह के अपराधों की परिभाषा और सीमा अलग–अलग होती है, देश–दर–देश मृत्युदंड का निहितार्थ हमेशा मौत की सजा रहा है। न्यायशास्त्र, अपराधशास्त्र और लिंगविज्ञान में सामान्य उपयोग से, मृत्युदंड का अर्थ मृत्यु की सजा है।

मृत्युदंड की प्रमाणिकता को एक प्राचीन समय से भी इंगित किया जा सकता है। दुनिया में व्यावहारिक रूप से ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ मृत्युदंड का अस्तित्व कभी नहीं रहा हो। मानव सभ्यता के इतिहास से पता चलता है कि समय की अवधि के दौरान मृत्युदंड को सजा के एक रूप के रूप में नहीं छोड़ा गया है। ड्रेको (7वीं

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

शताब्दी ई.पू.) के कानूनों के तहत प्राचीन ग्रीस में हत्या, राजद्रोह, आगजनी और बलात्कार के लिए मृत्युदंड को व्यापक रूप से नियोजित किया गया था, हालांकि प्लेटो ने तर्क दिया कि इसका उपयोग केवल नपुंसक के लिए किया जाना चाहिए। रोमनों ने इसका इस्तेमाल कई प्रकार के अपराधों के लिए भी किया था, हालांकि नागरिकों को गणतंत्र के दौरान थोड़े समय के लिए छूट दी गई थी। ब्रिटिश भारत की विधान सभा में बहस की सावधानीपूर्वक जांच से पता चलता है कि 1931 तक विधानसभा में मृत्युदंड के बारे में कोई मुद्दा नहीं उठाया गया था, जब बिहार के सदस्यों में से एक, श्री गया प्रसाद सिंह ने मृत्यु की सजा को समाप्त करने के लिए एक विधेयक लाने की मांग की थी। हालाँकि, तत्कालीन गृह मंत्री द्वारा प्रस्ताव का जवाब दिए जाने के बाद इस प्रस्ताव को नकार दिया गया था। स्वतंत्रता से पहले ब्रिटिश भारत में मृत्युदंड पर सरकार की नीति 1946 में तत्कालीन गृह मंत्री सर जॉन थोर्न द्वारा विधान सभा की बहसों में दो बार स्पष्ट रूप से कही गई थी। 'सरकार किसी भी प्रकार के अपराध के लिए मृत्युदंड को समाप्त करने में बुद्धिमानी नहीं समझती है, जिसके लिए वह सजा अब प्रदान की गई है।'

2014 के अंत में, 98 देश सभी अपराधों के लिए उन्मूलनवादी थे, 7 देश केवल सामान्य अपराधों के लिए उन्मूलनवादी थे, और 35 व्यवहार में उन्मूलनवादी थे, दुनिया में 140 देशों को कानून या व्यवहार में उन्मूलनवादी बना दिया गया। 58 देशों को अवधारणकर्ता माना जाता है, जिनके पास अभी भी उनके कानून की किताब पर मृत्युदंड है, और हाल के दिनों में इसका इस्तेमाल किया है। जबकि केवल अल्पसंख्यक देशों ने मृत्युदंड को बनाए रखा है और उनका उपयोग करते हैं, इस सूची में दुनिया के कुछ सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश शामिल हैं, जिनमें भारत, चीन, इंडोनेशिया और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं, जिससे दुनिया की अधिकांश आबादी संभावित रूप से इस सजा के अधीन है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के कई प्रस्तावों ने मृत्युदंड के इस्तेमाल पर रोक लगाने का आह्वान किया है। 2007 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने देशों को 'मृत्युदंड के उपयोग को उत्तरोत्तर प्रतिबंधित करने, उन अपराधों की संख्या को कम करने के लिए बुलाया, जिनके लिए यह लगाया जा सकता है' और 'मृत्युदंड को समाप्त करने की दृष्टि से फांसी पर स्थगन की स्थापना का भी

प्रस्ताव रखा।' 2008 में, जेनेरल असेम्बली ने इस संकल्प की पुष्टि की, जिसे 2010, 2012 और 2014 में बाद के प्रस्तावों में प्रबलित किया गया। इन प्रस्तावों में से कई ने कहा कि, 'मौत की सजा के उपयोग पर रोक मानव सम्मान और मानव अधिकारों के संवर्द्धन और प्रगतिशील विकास में योगदान करती है।' 2014 में, 117 राज्यों ने सबसे हालिया प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया था। भारत ने इन प्रस्तावों के पक्ष में मतदान नहीं किया है।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 सभी व्यक्तियों के लिए मौलिक अधिकार जीवन और स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है। यह कहता है कि कोई भी व्यक्ति अपने जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं होगा सिवाय कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के। इसका अर्थ कानूनी रूप से माना जाता है कि यदि कोई प्रक्रिया है, जो उचित और वैध है, तो कानून बनाकर राज्य किसी व्यक्ति को उसके जीवन से वंचित कर सकता है। हालांकि केंद्र सरकार ने लगातार यह सुनिश्चित किया है कि यह कानून की किताबों में मृत्युदंड को एक निवारक के रूप में कार्य करेगा, और जो लोग समाज के लिए खतरा हैं, उनके लिए सर्वोच्च न्यायालय ने 'दुर्लभतम मामलों' में मृत्युदंड की संवैधानिक वैधता को भी बरकरार रखा है। जगमोहन सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (1973) में, फिर राजेंद्र प्रसाद बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (1979), और अंत में बचन सिंह बनाम पंजाब राज्य (1980) में सर्वोच्च न्यायालय ने मृत्युदंड की संवैधानिक वैधता की पुष्टि की। इसने कहा कि यदि कानून में मृत्युदंड प्रदान किया जाता है और प्रक्रिया उचित, न्यायसंगत और उचित है, तो मौत की सजा एक दोषी को दी जा सकती है। हालांकि, यह केवल 'दुर्लभतम' मामलों में ही होगा, और अदालतों को एक व्यक्ति को फांसी पर भेजते समय 'विशेष कारणों' को प्रस्तुत करना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों में, सुप्रीम कोर्ट ने मृत्यु के मामलों में दी गई चुनौतियों की प्रतिक्रिया के रूप में 'पूर्ण जीवन' या उम्र की संख्या निर्धारित करने की सजा को समाप्त कर दिया है। स्वामी श्रद्धानंद मामले में तीन जजों की बेंच के फैसले के जरिए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि निम्नलिखित आदेशों में इस उभरते दंडात्मक विकल्प की नींव रखी गई है– "मामले को थोड़ा अलग कोण से देखा जा सकता है। सजा के मुद्दे के दो पहलू हैं। एक तो सजा अत्यधिक हो सकता है

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

और बहुत कठोर हो सकता है या यह बहुत ही अपर्याप्त रूप से कम हो सकता है। जब कोई अपीलकर्ता ट्रायल कोर्ट द्वारा दी गई मौत की सजा सुनाता है और उच्च न्यायालय द्वारा पुष्टि की जाती है, तो यह न्यायालय इस अपील को स्वीकार कर सकता है, क्योंकि यह मामला दुर्लभतम श्रेणी के सबसे कम मामलों में आता है और कुछ हद तक मौत की सजा के समर्थन में अनिच्छुकता महसूस कर सकता है। लेकिन एक ही समय में, अपराध की प्रकृति के संबंध में, अदालत को दृढ़ता से महसूस हो सकता है कि सामान्य रूप से 14 साल की अवधि के लिए छूट के लिए आजीवन कारावास की सजा स्थाई रूप से अपर्याप्त और अपर्याप्त होगी। फिर कोर्ट को क्या करना चाहिए ? यदि न्यायालय का विकल्प केवल दो दण्डों तक ही सीमित है, एक कारावास की सजा, सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए, 14 वर्ष से अधिक नहीं और दूसरी मृत्यु के लिए, तो न्यायालय को प्रलोभन महसूस हो सकता है और खुद को मृत्युदंड का समर्थन करने में असमर्थ पाया जा सकता है। ऐसा कोर्स वास्तव में विनाशकारी होगा। इससे कहीं अधिक उचित विकल्पों का विस्तार करना और उस पर अधिकार करना होगा, जो कि वास्तव में, कानूनन तौर पर न्यायालय से संबंधित है यानी 14 वर्ष के कारावास और मृत्यु के बीच का विशाल अंतराल। इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि अदालत मुख्य रूप से विस्तारित विकल्प के लिए सहारा लेगी क्योंकि मामले के तथ्यों में, 14 साल की कारावास की सजा की सजा बिल्कुल नहीं होगी। इसके अलावा, एक विशेष श्रेणी की सजा की औपचारिकता, हालांकि बहुत कम संख्या में मामलों के लिए, कानून की किताब में मृत्युदंड होने का बहुत फायदा होगा, लेकिन वास्तव में जितना संभव हो उतना कम उपयोग करना चाहिए, विशेष रूप से दुर्लभतम मामलों में।

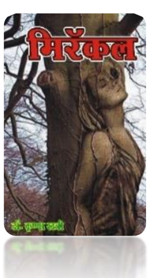

मिरॅकल

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-2-7

संस्करण : 2014, मूल्य : 180/-

शेखर शिखर

चंद्रशेखर शुक्ल

आईएसबीएन : 978-81-929060-9-6
संस्करण : 2019, मूल्य : 251/-

कदम रखना मगर हौले से

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-5-4
संस्करण : 2020, मूल्य : 155/-

कोखजली

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-3-0
संस्करण : 2020, मूल्य : 150/-

यात्रावृत्त

खिल–खिल हँसता निर्झर

अनिता रश्मि
1 सी, डी ब्लॉक, सत्यभामा ग्रैंड, कुसई,
डोरंडा, राँची, झारखण्ड
anitarashmi2@gmail.com

बहुत खूबसूरत है झारखंड। किधर से भी, किधर को निकल जाएँ, हरियाली भरी वादियाँ, नदी, पर्वत, पठार आपकी बाँहें गह लेंगी... रास्ता रोक लेंगी। सुप्रसिद्घ पार्वत्य क्षेत्रों की मनभावन खूबसूरती से किसी भी तरह उन्नीस नहीं यह राज्य... बेहिसाब हरियरी, खूबसूरत घाटियाँ, मदमाते वन, छोटी–बड़ी पहाड़ियाँ, नयनाभिराम जलप्रपात, बेशुमार नदियाँ, अद्‌भुत रंग–बिरंगे कुसुमोंवाले पादप...ऐतिहासिक किले, मंदिर... अनगिन लोककथाओं, लोकगीतों में झरती शहीदों से लेकर इतिहास तक की गाथाएँ! क्या नहीं है यहाँ। हाँ, बस यहाँ स्नो फॉल नहीं होता। हालांकि यह कमी ओला पूरी कर देता है। कब अचानक ओले पड़ने लगे तेज आँधी–बारिस के साथ... बिछ जाए खेत–खलिहान, टुंगरी–टांड़ (पहाड़ी–मैदान) में, कहना मुश्किल। वैसे, नदियाँ कोपभवन में जा बैठीं हैं आजकल। उनके नाम पर बालुओं–चट्टानों के दर्शन हो सकते हैं काफी जगहों पर। अनेक विधाओं में आवाजाही के दौरान यात्रा–वृत्तांत लेखन मुझे सबसे ज्यादा प्रिय लगता रहा है। वजह– उपन्यास, कहानी, लघुकथा तकलीफदेह स्थितियों पर तकलीफ में डूबने के बाद लिख पाई। लेकिन जीवन में केवल दुःख–दर्द, तकलीफें नहीं हैं। प्रकृति ने जितना कुछ दिया है, जो दिया है, सब आन्नद की सृष्टि करता है... आनंद की अलौकिक वर्षा! मानव–प्रदत्त अनेक चीजें, निर्माण भी। अतः यायावरी हमेशा सुखद। कई अज्ञात रहस्यों से रू–ब–रू करानेवाला भी। उस पर लिखना हमेशा सुखदायी।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

बहुत दिनों से राँची के आस–पास के प्राकृतिक स्थलों के नवीनतम बदलाव से मिलने की इच्छा थी। अनगिन निर्झर हैं झारखंड के लगभग हर क्षेत्र में– जोन्हा, हुंडरू, दशम, हिरणी, तमासीन, खयैवा बनारू और भी अनेक निर्झर यहाँ के लोगों के दिल–दिमाग को सरस बनाए रखते। खूबसूरती इतनी कि पर्यटक के पाँव जैसे बँध जाए। पहले भी कई जलप्रपातों में भटक चुकी थी। इधर फिर से इच्छाएँ जोर मारने लगी थीं। मैं परिवर्तन देखना चाहती थी हर निर्झर का। शुरूआत राँची–टाटा मार्ग पर स्थित दशम जलप्रपात से करना चाहा। और हम दो परिवार पहुँच गए राँची से लगभग 40 कि.मी. दूर बुंडु के दशम फॉल को देखने। काँची नदी के जल से निर्मित यह फॉल दस धाराओं में गिरने के कारण इस नाम से नवाजा गया था। कंडारी में पानी को दाअ तथा स्वच्छ को सोअ कहते हैं। स्वच्छ पानी के कारण ही इसका नाम दाअसोअ पड़ा पहले पहल। किंवदन्ती कहती है। कालांतर में दासोम। फिर दशम! हमारी मंजिल फॉल नं. एक थी।

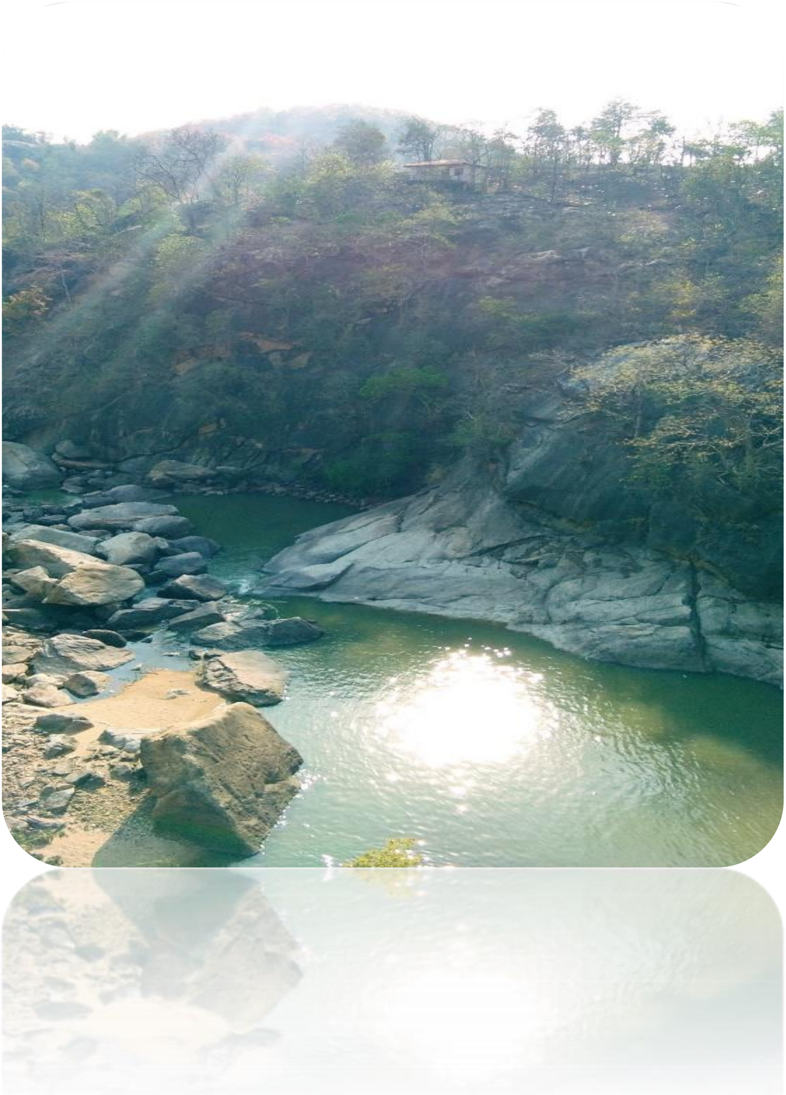

न चाहते हुए भी आप बीच–बीच में अतीत के हवाले हो जाते हैं। मैं भी हुई। बहुत पहले हम नीचे से प्रपात के पास पहुँचे थे। वहीं पतली धाराओं के नीचे स्नान किया था (तब नहीं थी इतनी क्षीणकाय) नीचे बहती काँची नदी के सहारे चट्टानों के पार भोजनादि बना था। बड़ी–बड़ी चट्टानें थीं, लेकिन हम कठोर, काली चट्टानों पर पाँव धर

दूसरी ओर गए थे। सामने था सबसे चौड़ा झरना। नीचे बहुत गहराई। पास जाना खतरे से खाली नहीं। हम पास गए भी नहीं... वह उम्र थी, साहस से भरी। बड़ों की निगरानी ने हिम्मत करने नहीं दी थी। आज सामने था, बेहद–बेहद खूबसूरत विहंगम दृश्य दशम का। ढंग से बनाई गई सीढ़ियाँ, पार्क, विभिन्न प्वांइट, जहाँ से एक सौ चौवालीस फीट की ऊँचाई से गिरते प्रपात का दर्शन सुलभ। और फिर गिरते खूबसूरत झरने का सरिता में ढलकर गहरी घाटी से आगे बढ़ जाना। पत्थरों पर उगा जीवन... जिजीविषा के धनी भरपूर गाछ पाषाणों की कठोरता को मात देते हुए पाषाणों पर ही उगे थे... वर्षों से... सदियों से।

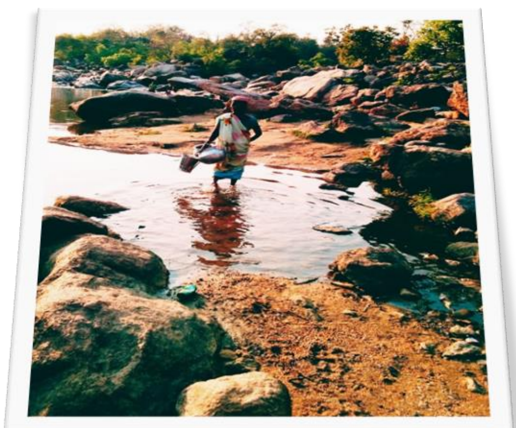

हम इस बार नीचे से अनगढ़ पत्थरों पर नहीं चढ़ रहे थे, ऊपर से उतर फॉल को करीब महसूस कर रहे थे। हर प्वाइंट से दिखलाई पड़ रहा था निर्झर का हर कोना। झरनों से गिर काँची नदी सामने जिधर इठलाती–लचकती बढ़ गई थी, वह भी साफ नजर आ रहा था। घनघोर जंगल भी। लेकिन झरना कई चट्टानों से फूटता नजर आ रहा था। लाख छटपटाती रह गई, सीढ़ियों से या नीचे से निर्झर का स्त्रोत पता नहीं चल पा रहा था। जगह–जगह खाने–पीने की व्यवस्था, दुकानें। पार्क, जंगल का अद्‌भुत विस्तार पर्यटकों की किलकारियों से गूँज रहा था। सबको स्वच्छता का ध्यान रखना था...

पूरी व्यवस्था थी। डस्टबिन हर जगह इंतजार में। कुछेक आदत से लाचार लोगों को छोड़ सब स्वच्छता का ध्यान रख भी रहे थे। गाइड, गोताखोर, स्थानीय आदमी जगह–जगह तैनात। अच्छी व्यवस्था पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए। हम एकदम नीचे जाकर झरने का आन्नद ले रहे थे। पास बैठने पर हवा के झूले पर झूलती फुहारें धीमे–धीमे भिगोकर मन–प्राण तक संतुष्ट कर दे रही थी। काफी समय वहाँ बिताया। स्थानीय लोगों को यहाँ रोजगार मिला है। कुछ वनवासी वनोत्पाद की भी बिक्री कर रहे थे। नीचे निर्झर के पास खाना बनाना मना हो गया है अब।

लौटते हुए दशम फॉल नं. दो पर भी जाने का फैसला खुशियों से भर रहा था। ऊपर से नए बने रेस्तरां की छतरियाँ, काँची नदी बुला रही थी। ऊपर से ही गहरे झरने को ज्यादा पास से अच्छी तरह देख

पाने का लालच भी कम नहीं था। जाने को सीढ़ियाँ नहीं, पथरीले कच्चे रास्ते। हम वापस लौट वहीं दाहिनी ओर से फूटी उबड़–खाबड़, धूल धुसरित राह पर बढ़े। विभिन्न जगहों पर बाँस से घेर प्लास्टिक लगाकर लोग रह रहे थे। बहुत कम कीमत पर वहाँ के लोग भोजन बनाकर खिलाते हैं। एकदम घरेलू व्यवस्था।

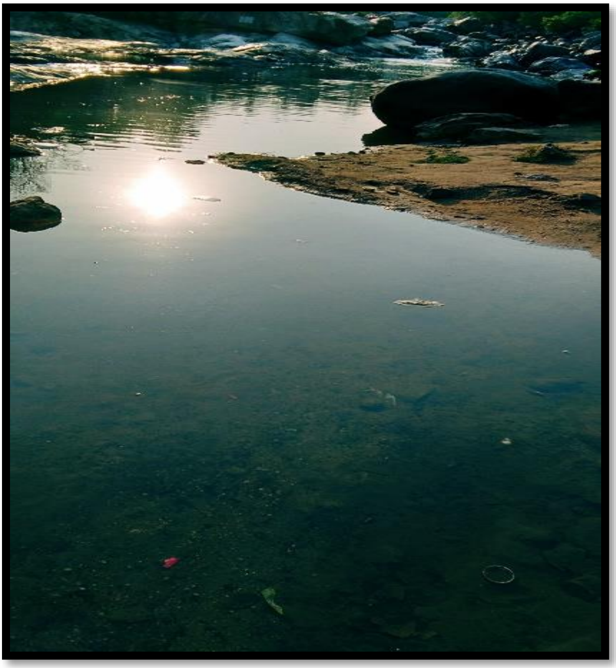

सामने काँची नदी का अद्भुत विस्तार... लेकिन अभी सिमटा हुआ था हरिताभ जल। कमर, सर पर डेगची, बाल्टी, घड़ा थामे काँची नदी के तट पर पानी भरने पहुँची आदिवासी स्त्रियाँ... चट्टानों पर कूदते–फाँदते साँवले–सलोने बच्चे... जंगल में टेंट के बाहर सुस्ताता वृद्ध।... एक टेंट के अंदर परिवार की सुगबुगाहट, माँ का आँचल थामे नन्हें बच्चे। और तटिनी पारकर ऊपर छतरियों के निकट जाते लोग! मैं भाई मानस, भतीजा निलय और बेटी अनुभा के साथ वहीं पत्थर पर बैठे देखती रही कुछ देर। मानस की इच्छा थी, प्रकृति के सान्निध्य में देर तक उसके अनहद नाद को सुना जाए, महसूसा जाए। आस–पास आकाशचुम्बी लाल पत्तियोंवाले कुसुम, यूकलिप्टस और अन्य विटपों की मासूमियत को परखा जाए। भोले–भाले वासिंदों के

साथ समय बिताया जाए। लेकिन दिवाकर अपना तेज समेट रहा था और मुझे हर कीमत पर रास्ते के किंशुक (पलाश) को मोबाइल में कैद करना था। वे आते समय भर रास्ते आमंत्रण देते रहे थे। लौटते वक्त मिलने का वादा कर लिया था। बीच–बीच में वन में 'आग' लगी थी, जंगल की आग (पलाश) से। मुझे उस आग से भेंट करनी थी। ये वही टेसू थे, जो अपना पूरा वजूद खोकर अपना सारा रंग जल को दे देते हैं और पहले के लोग इससे ही होली खेलते रहे हैं। अभी भी जंगल के वासी होली में इन्हीं परासों (पलाशों, टेसू) से रंग उधार लेते हैं।

हम गाड़ी की ओर लौट पड़े। वहाँ इंतजार कर रहे थे पति ओम जी और रूबी। मैं कुसुम गाछ की ऊँचाई में डूबी पीछे गई कि वहीं एक जगह पर दो लोग छोटे से आशियाने में महुआ के दारू में व्यस्त मिले। उसी ने बताया, यह ललछौंहा गाछ कुसुम है। ऊपर से ताकता जैसे निगरानी कर रहा हो। महुआ चुलाकर दारू बनाने में माहिर हैं इधर के लोग। आस–पास गाँवों की उपस्थिति से गुलजार था दशम फॉल। बीच के सालों में नक्सली की उपस्थिति की चर्चा आम थी। लेकिन अब वहाँ भय का वातावरण नहीं है। हर साल बलि लेता है दशम। सब कहते थे। लेकिन अब नहीं। चाक–चौबंद व्यवस्था। पर्यटक मित्र सुरक्षा के लिए तैनात। एक लोककथा यहाँ करवट लेती है।

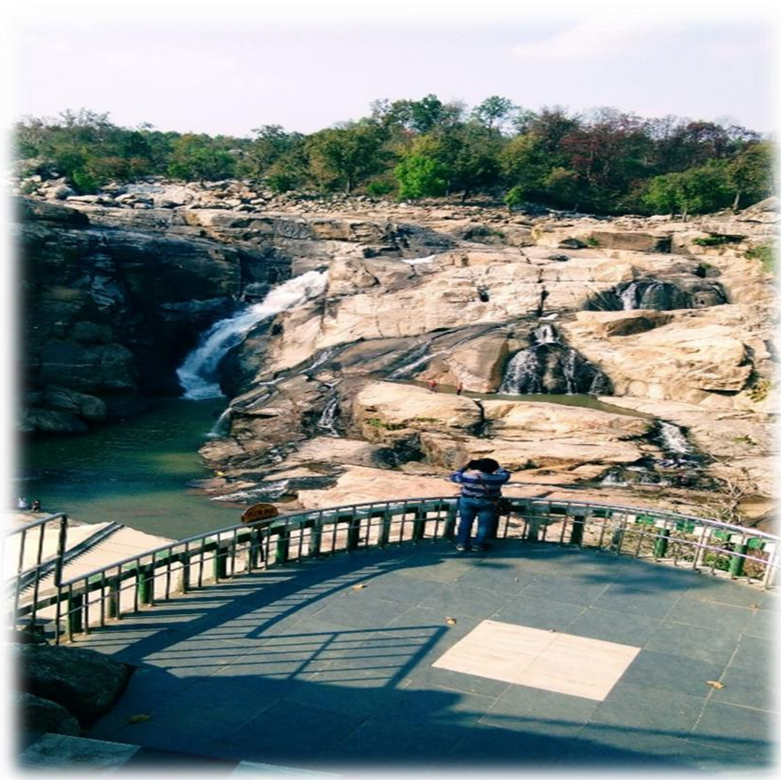

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कहा जाता है, यहाँ छैला की प्रेमकथा आकार लेती रही है। अपनी साँवली–सलोनी प्रेयसी से मिलने गहरे रंग का बाँसुरी वादक छैला काँची नदी से निर्मित झरने को पारकर रात में ऊपर पहुँच जाता... जंगली मजबूत बेलों के सहारे। उसकी बाँसुरी की तान में राधा की तरह दीवानी उसकी प्रेमिका उस साँवले कृष्ण से मिलने को बेताब रहती थी। उसके प्रेम में पूरी पागल थी। दीवाने थे दोनों। गाँववालों को उनकी रासलीला रास नहीं आ रही थी। लता के सहारे झरना पारकर अपनी प्रेमिका से मिलने जाता है छैला... सब तरफ यह शोर था। अंततः एक रात झरना पार करते समय लता काट दी गई और वहाँ से गिरकर छैला की दर्दनाक मौत हो गई। बाँसुरी की मीठी तान

मौत की चीख बन गई सदा के लिए। प्रेम अगन दशम के जलधार में डूब गई। सब कहते हैं, इसी के कारण बलि लेती रही है नदी। लेकिन प्रशासन की चाक–चौबंद व्यवस्था में आजकल दशम में डूबकर मरनेवालों की संख्या नगण्य। सब जगह घूमें, बस चौड़े जलप्रपात एवं गहरी नदी की ओर न जाएँ।

खैर, अब हम वापसी की राह पर। तैमारा गाँव पूरे यौवन पर। जगह–जगह पुराने ढंग के साफ–सुथरे घर, खलिहान प्रकृति की गोद में सुस्ताते हुए। कहीं–कहीं सोहराई पेंटिंग की चमक। झारखण्ड के शहरी क्षेत्रों, कई बस्तियों, ग्रामों में फूस–खपड़े की छत को आजकल पक्के घरों ने परे खिसका दिया है। नहीं दिखते आसानी से मिट्टी के कच्चे, घास–फूसवाले घर।... वहाँ मिले। पर सब जगह बिजली के तार कच्चे घरों के अंदर रौशनी की उपस्थिति की गवाही दे रहे थे। वहाँ पर खेतिहर व्यक्तियों की बस्ती, खेती के विविध औजार, पुआल, हल, खलिहान, मचान, बाहर फुरसती बतकही में व्यस्त लोगों, उनकी बकरियों, बत्तखों, मुर्गियों को देखते हुए हम बैक टु दी पैवेलियन।

हाँ! डूबते प्रभाकर की ललहुन रौशनी के बढ़ते वृत्त के बावजूद मैं ꠰ जंगल की आग ꠰ को कैदी बना लेने में सफल रही, यह संतुष्टि साथ थी। झरने सी हँसी सबके चेहरे पर सबको उद्भासित करती हुई हमारी यादों में देर तक बसी रही। गर्मियों में अब नदियों के सूख जाने के कारण झरने का कंठ भी सूख जाता है। अतः बरसात में या वर्षांत से मार्च के अंत तक घूम लेना ही श्रेयस्कर। आने–जाने के लिए हर क्षेत्र से गाड़ियाँ आसानी से उपलब्ध।

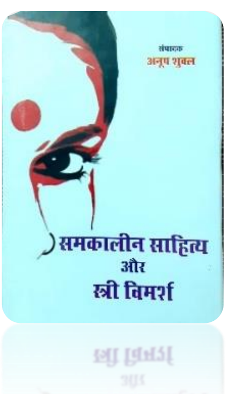

समकालीन साहित्य और स्त्री विमर्श

अनूप शुक्ल (सं.)

आईएसबीएन : 978-81-929060-5-8

संस्करण : 2015, मूल्य : 400/-

प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-93-87831-60-1
संस्करण : 2018, मूल्य : 250/-

पाठालोचन

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल (सं.)

आईएसबीएन : 978-81-929060-7-2
संस्करण : 2019, मूल्य : 1100/-

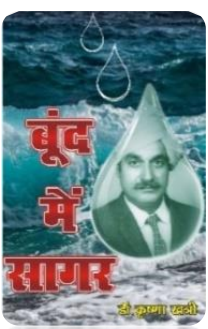

बूंद में सागर

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-8-9
संस्करण : 2019, मूल्य : 200/-

गले पड़ी गंगा

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-7-8
संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

कृष्णा की कलम से...

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-4-7
संस्करण : 2020, मूल्य : 150/-

सज़ायाफ़्ता कठपुतली

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-946859-0-6
संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

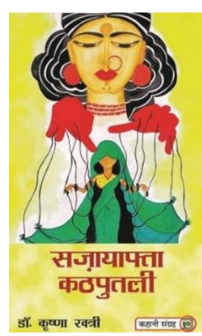

कविता

मनोज शाह 'मानस'
सुदर्शन पाक, मोती नगर, नई दिल्ली

जवानी चार दिन की!

जवानी चार दिन की
चार दिन की चांदनी है।

सुना है चार दीवारों के,
भी कान होते हैं।

चार दीवारों को भी,
दास्तान–ए–जिंदगी सुनानी है।

चार यार महफिल गुलजार,
चार यारों में ही,
जिंदगी बितानी है।

क्या ताज महल,
क्या चार मीनार,
इश्क की ध्वजा तो लहरानी है ।

चार धाम जिंदगी हमाम,
चार कंधा मिल जाए,
जिंदगी तो आनी–जानी है ।

❖

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

मो. मुमताज हसन
रिकाबगंज, टिकारी, गया, बिहार –824 236

दिल्लगी का मुझे भी हुनर आ गया!
बेखबर था जो बाखबर आ गया!

तरक्की ले रही कुर्बानियां साये की,
जद में आज कोई शजर आ गया!

जिधर देखूं नजर तू ही तू आती है,
याद फिर वो सुहानासफर आ गया!

तन्हा रहा दुनिया की भीड़ में अक्सर,
मासूम हाथों में जब खंजर आ गया!

वीरान हो गया आशियाना–ए–दिल,
न जाने ये कैसा मंजर आ गया!

वफा की चाहत में वफा नहीं मिलती,
आशिके–जख्म–दर्दे जिगर आ गया!

दर पे खुशियों की हुई आमद शायद,
'मुमताज' दुआओं का असर आ गया!!

❖

ग़ज़ल

जीने की सजा या मरने की मैं दुआ मांगू ।
ढूंढे से नहीं मिलता जो उससे मैं क्या मांगू।

किरदार की खुशबू से इंसान महकता है
तुझसे ऐ खुदा मेरे बतला दे मैं क्या मांगू।

तू बाग का माली है जो सींचता सबको है
तुझसे ऐ खुदा बस मैं तेरा ही पता मांगू।

जी–जान से मैं तुझसे ही प्यार करुंगी अब
तुझसे हो मिलन बस इतनी सी मैं दुआ मांगू।

लब हो गये पत्थर से जब सबने कहा मांगों
तेरे सिवा अंजू का अपना नहीं क्या मांगू।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

नज़्म सुभाष

356/केसी–208, कनकसिटी आलमनगर लखनऊ 226 017

मुखिया का अहसान सरों पर भारी है।
बेगारी पीढ़ी दर पीढ़ी जारी है।

जिसके आगे तूने रोया है दुखड़ा
वह तो खुद ही आँसू का व्यापारी है।

नौकरशाहों से मिलकर क्या अर्ज करे ?
बेहोशी की हालत में मक्कारी है।

दुर्घटना पर तू – तू , मैं–मैं होगा बस,
कल तेरी थी आज हमारी बारी है।

तन्त्र यहाँ खुद लोक कुचल कर रख देगा,
रुतबा पाकर बढ़ती ये बीमारी है।

चेहरे रोज बदलता है इक बहरुपिया,
इक तबका है जो इस पर बलिहारी है।

नैतिकता का दम भरते वो साहूकार,
जिनके संरक्षण में चोर–बजारी है।

नज़्म तुम्हारी गजलों में वो बात नहीं,
भाषा ही लगती एकदम अखबारी है।

❖

कविता

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
कैतहा, भवानीपुर, बस्ती 272124
laldevendra204@gmail.com

हमारा अंतर्मन

असत्य को सत्य बनाकर हम कैसा भी परोसे
हमारा अंतर्मन झूठ को जानता है
चेहरे पर कितनी भी मुस्कान लाएँ
दर्द व पीड़ा को अंतर्मन पहचानता है
जो कार्य नैतिकता से परे है
अंतर्मन एक बार उसे करने से रोकता है!

भले ही हम दिखावटी दुनिया में उलझकर
गलत को सच का जामा पहनाते हैं
अंतरात्मा एक बार झकझोरती है
अनैतिक न करने के लिए पुकारती है
अंतरात्मा की पुकार सुनकर
यदि हम हो जाय सचेत
और असत्य पर न चलने के लिए
हो जाएँ दृढ़प्रतिज्ञ!

कष्ट तो अवश्य सहने पड़ेंगे
भौतिकता में हम पिछड़ जाएँगे
पर हमारे अंतर्मन में सुकून होगा
चेहरे पर खोखली मुस्कान के बजाय
चेहरे पर सुख शांति की आभा नजर आएगी
और हमें जीवन में निश्चित ही
असली खुशियों की सौगात मिल जाएगी!

❖

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

पिता के हाथ की रेखाएँ

महेश कुमार केशरी
मेघदूत मार्केट फुसरो, बोकारो (झारखंड) 829 144

पिता के हाथ को
एक बार, एक ज्योतिषी
ने देखकर बताया था
कि आपकी कुंडली में
धनलाभ होगा!
संभव है कि आपको
राज योग भी मिले!!

लेकिन,
पिता के हाथ
कभी नहीं लगा कोई गड़ा धन
और ना ही मिला उनको कभी राजयोग!!

वो, ताउम्र, खदान में
पत्थरों को काटते रहे
काटते–काटते ही शायद घिस गई,
पिता के हाथ की रेखाएँ
जिनमें, कहीं धन योग या राजयोग रहा होगा!!

इसलिए भी शायद
उनको नहीं मिला कभी धन
ना ही कभी मिल सका उनको राजयोग!!
वो, ताउम्र बने रहे
दिहाड़ी मजदूर और काटते रहे
पत्थरों की विशालकाय खदान को!!

और, काटते–काटते खदान का पत्थर
एक दिन पिता उसी खदान में समा गए
फिर, पिता कभी घर लौटकर नहीं आये !!

ज्योतिषी आज भी चौक पर
बांच रहा था भविष्य !!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

शब्दों की सत्यता

राजेश सिंह
701, स्वाति फ्लोरेंस, निकट सोबो सेंटर
साउथ बोपल, अहमदाबाद 380 058
raj444singhgkp@gmail.com

कवि से
लोग पूछ रहे हैं
शब्दों की सत्यता के बारे में
और ये भी कि
क्यों... अब तुम्हारी कविता में
ये शब्द नजर नहीं आते।

कवि चुप है
क्या बताए लोगों को
कि शब्दों ने
अपने अर्थ खो दिये हैं
कि शब्दों ने
धोखा देना सीख लिया है।

'प्रेम' शब्द द्वारा
इस धरा पर
सबसे ज्यादा छली गयी हैं– स्त्रियाँ!
'भरोसे' ने
सबसे ज्यादा
लूटा है मजलूमों को!
स्त्रियाँ को तो भरोसे पर ही भरोसा नहीं रहा
हर बार
उनकी इज्जत तार– तार की है, इस शब्द ने!

नेताओं के प्रयोग से 'आश्वासन' शब्द तो
छिलता जा रहा है, प्याज के छिलके की तरह
कवि मौन है प्रार्थना में
शब्द बेचैन हैं...
उनके अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है!!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

नरेश अग्रवाल
35, कागलनगर, सोनारी, जमशेदपुर 831 011
nareshagarwal7799@gmail.com

हारता नहीं हूँ कभी मैं!

जब मैं एक फीट गड्ढा खोदता हूँ
उसकी तनख्वाह से
परिवार का एक सदस्य पलता है

दो फीट खोदने पर दो
शाम होते–होते पॉंच फीट खोद डालता हूँ
और बुरी तरह थककर
बाहर निकलता हूँ

इस तरह अपने चार सदस्यों के अलावा
इस एक अतिरिक्त फीट की कमाई से
आपदा के लिए थोड़े पैसे बचा लेता हूँ
जो मेरी जमा–पूँजी है

मैं इसी तरह से
साल में तीन सौ फीट अतिरिक्त खुदाई करता हूॅं
अगर कोई आपदा नहीं हुई घर में तो
आने वाले दिनों में
जरूर खरीद पाऊॅंगा एक घर
पक्का और मजबूत

यह अतिरिक्त खुदाई ही है
साधन मुझे बचाने और मेरे सपने पूरे करने का
इसलिए बुरी तरह से थक जाने पर भी
इस गहराई से हारता नहीं हूँ कभी!

कविता

बुद्धि सागर गौतम

नौसढ़, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
budhigautam@gmail.com

सरकार व कृषक

वतन को बचा लो, वतन बिक रहा है
बस चंद कौड़ी में, सब बिक रहा है।

रोता कृषक है, वही मर रहा है
अब अन्नदाता, सुबक भी रहा है।

जी तोड़ मेहनत, कृषक कर रहा है
मलाई तो बस, बिचौलिया खा रहा है।

हर मांग अपनी, कृषक कर रहा है
शासन अब उनकी, न कुछ सुन रहा है।

सड़कों पे आके, कृषक रो रहा है
हूँ मैं कृषक क्यूं ? यही कह रहा है।

व्यापार करता, कोई हँस रहा है
बिके देश मेरा, वह क्रय कर रहा है।

कृषक देश का, पोषण कर रहा है
सुनो बात उसकी, विनय कर रहा है।

समझौता करके, निजी हो रहा है।
रोजगार भी सब, खतम हो रहा है।

❖

क्षितिज जैन 'अनघ'
kshitijjain415@gmail.com

कवि की चेतना

जहाँ सत्ता मृत्यु–सी मूर्च्छा की
चेतना की जाग्रति प्रतिषिद्ध है।

उन्हीं काली दीवारों के तल में
नन्हा दीपक टिमटिमाया है
नए प्राण भरने साऐ विश्व में
विद्रोही कहलाता कवि आया है।

सृजन की जय को किया पुनः
निज रचना से सत्य सिद्ध है
उसके स्वर को कुचलने का
हर संभव था प्रयास हुआ
जैसे–जैसे उसे दबाया गया
कविता का विकास हुआ।

भूगर्भ का लावा बनकर
वह कविता हुई प्रसिद्ध है।

जब भी कोई चेतन मानव
सृजन के वे गीत गाता है
जीवन का वह अमर कवि
जय का उत्सव मनाता है
चेतना में खुद विलीन होकर
कवि ने जीवन किया समृद्ध है।

❖

कविता

मधु वैष्णव 'मान्या'
जोधपुर, राजस्थान
madhusabilusa@gmail.com

सुकून

अक्सर बारिशों में
याद आती है
कागज की नाव पुरानी
जाने क्यूं ?
जी चाहता है अक्सर
लौटकर चलूं,
गांव की वो पगडंडियां मस्तानी!

थक जाती हूँ मैं
हर कदम पर
ढेरों सवालों से,
सोना चाहती हूँ
सुकून से मां तेरे आंचल में
वह लोरी बड़ी मस्तानी!

मधु, वह अधूरी कहानी
रह–रहकर मन दहलीज पर
दस्तक देती सुहानी...!!

डॉ. सम्राट् सुधा
94—पूर्वावली, गणेशपुर, रुड़की—247 667
samratsudha66@gmail.com

नयनों को करती सजल

नदिया से पूछना
बादल से नाता क्या है
तेरी प्यास का!

उठकर चलना सभी
जानते है पग—पग मगर
बात तो ध्येय से जुड़ी
चुनते हैं कैसी डगर
पाखी से पूछना
पवन से नाता है क्या
तेरी उड़ान का!

रूह का कालापन
हाथों में कब उज्ज्वल
मन की पावनता
नयनों को करती सजल
सृजक से पूछना
शब्दों से नाता है क्या
तेरी कमान का!

दीप के नाम लिखी
बाती की सब रोशनी
किसने स्नेह को कहा
श्वासें कितनी बची
ज्योति से पूछना
तमस से नाता है क्या
तेरी आस का !

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

स्नेहलता
ssneha.di@gmail.com

जीवन-वृक्ष

जड़–जमीन, छाया–अम्बर
टहनी– पत्ती, पानी–बंजर
जीवन–वृक्ष।

खर–पतवार, गली–गलीचे
खेत–खलिहान, बाग–बगीचे
जीवन–वृक्ष।

भूख–प्यास, सांझ–रात्रि
बूंद–बारिश, दिया– बाती
जीवन–वृक्ष।

घर–घरौंदा, आंगन–बाड़ी
वन–उपवन, प्रेम–संबंध
जीवन–वृक्ष।

भाव–अभाव, दोस्ती–दांव
अपने–पराये, स्त्री–पुरुष
जीवन–वृक्ष।

स्वर्ग–नरक, माटी–आग
हम–तुम, जीवन–मृत्यु
जीवन–वृक्ष।

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

117, आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ

gsvaish51@gmail.com

कलियों को मुस्काना है।
उपवन को महकाना है।

देख सिंधु की लहरों को
क्या अनुमान लगाना है।

बिछे जहाँ पर हों काँटे
ऐसी राह न जाना है।

आँख–कान खोले रखना
मौसम बड़ा सुहाना है।

नभ छू लेने वालों में
अपना नाम लिखाना है।

गेंद सरीखा उछले जो
लौट, धरा पर आना है।

दानें डाले हैं छत पर
चिड़िया नई फँसाना है।

स्वप्न, गीत, आँसू, वैभव
केवल ताना – बाना है।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

अमृता पांडे
हल्द्वानी, नैनीताल, देवभूमि उत्तराखंड
pandeyamrita0910@gmail.com

मेरा गाँव

हिचकियां जो आयीं आज
सुबह सुबह बारंबार मुझे
इस बात का हुआ एहसास मुझे
कि मेरा गांव अभी जीवित है...
होकर सवार यादों की नाव में
पहुंच गई मैं फिर अपने गांव में,
नीम की छय्यां तले
खटिया में बैठे काका ताऊ मिले
चाय की चुस्कियां के बीच
गर्माती राजनीति की चर्चा लिए।

उपलों की थाप, घुंघरू की पदचाप
सोंधी–सोंधी मिट्टी की खुशबू प्यारी,
गेंदे के फूलों से खिलखिलाती क्यारी
उपलों की थाप, घुंघरू की पदचाप
मन को खुशी से भिगोते
भूले एहसास कई पुराने मिले।

ऊंचे नीचे खेत खलिहान
उन पर लहलहाते धान,
प्रेम और स्नेह से सराबोर
उन की रखवाली मिली।

ट्रैक्टर, हार्वेस्टर नहीं है मेरे गांव में
बैलों की जोड़ी वही पुरानी मिली,
प्यार दुलार के सारे पैमाने वही पुराने थे
टूटे हुए मकां से खिलौनों के खजाने मिले,
यूं तो बहुत वर्ष हो गए हैं हमें आजाद हुए
जाने क्यों सत्ता में बैठे सारे लोग बेगाने मिले।

ए हिचकियों के दौर, अब थम भी जा !
पानी का नल नहीं है मेरे गांव के घर में
जाकर देखा तो वही झरने पुराने मिले।
बिजली के तार भी नहीं हैं मेरे गांव में
प्रकाश की बाट जोहते,
लैम्प और लालटेन पुराने मिले।
नहीं हैं साधन सिंचाई के मेरे गांव में
वर्षा की राह तकते लोग सयाने मिले।
संसाधन सीमित हैं पर मेरा गांव जीवित है,
विकास और प्रकाश की उम्मीद में...।

कविता

राहुल कुमार बोयल
पोस्ट ऑफिस लेन, राजेन्द्र कॉलोनी, बाली (पाली) राजस्थान
rahulzia23@gmail.com

हत्या का आरोप

वह गुस्से में आया
और मेरी किताबों के पन्ने
हवा में उड़ा दिए
उसे लगा
उसने मेरे वजूद को
धुआँ–धुआँ कर दिया
उसे लगता था
किताबें सर पे चढ़ के
नाचने लगती हैं
जबकि सच यही था
कि वह एक पेड़ की हत्या में
दूसरी बार शरीक था!

वह गुस्से में आया
और
मेरे कपड़ों के लीरे
हवा में उड़ा दिये
उसे लगा
उसने मेरी इज्जत को
तार–तार कर दिया
उसे लगता था सुंदर देहें

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

उसे बड़ा–सा ठेंगा दिखा के
इतराती रहतीं हैं
जबकि सच यही था
कि वह एक देह की हत्या में
कई–कई बार शरीक था!

इस तरह उस पर
एक पेड़ की दो बार
और एक देह की बार–बार
हत्या का आरोप था!

पेड़ों के समुदाय ने
उसे माफ कर दिया था
आखिरी समय में
उसके लहूलुहान जिस्म के साथ
बस एक पेड़ गया था!

उसे लहूलुहान करने में
एक देह का हाथ था
देहों का समाज
अभी इतना बड़ा नहीं हुआ
कि उसे क्षमा कर दे
(और होना भी नहीं चाहिए)

अकेली देह की बात होती
तो और बात थी
एक आत्मा भी थी
जिसकी वजह से
इस देह में नेह था
उस पर
देह के साथ
नेह की हत्या का भी आरोप था!

❖

कविता

रजत सान्याल
101 योगीसेवा 2, 12 ए सेवाश्रम सोसाइटी, बड़ोदा 390 023

कैसे उसे पता

खुद के लिए
कभी मुझे रोना नहीं आया
कभी आंसू नहीं भी निकले
खुद को प्यार किया मैंने चुपके से
एक नारसिसस पेड़ की तरह
जी भर कभी रोया नहीं खुद के लिए!

कभी मैं बहुत जोर–जोर से हँसता था
अगर कोई मेरी लिखने की तारीफ करता तो
इस मन की जो दुर्दशा है क्या कहूँ
शरीर एकदम झुक गया है, हड्डियों से मुड़ गया है
लेकिन कभी भी आँखों से अश्रु नहीं निकले
लगता था आँसूओं को रोक दिया है किसी ने!

आज जब सभी व्यस्त है गाड़ी सजाने में
और आमंत्रण पत्र के शब्द को सजाने में
तब लगता है मेरे कोई शहर में भारी बारिश हो रही है
कैफे में, चाय के अड्डे पर अटके है बहुत लोग
रास्ते में गाड़ी एकसाथ हो गई हैं
जैसे जनसंख्या रुक गई है
यह दृश्य देखकर
समझ नहीं आता कि दिन है या रात
एक दृष्टि से भी नहीं
कुछ दूर पर एक श्मशान घाट है, एक कब्रिस्तान है
इसके पत्थर भी भीग रहे हैं बरसात से
कैसे उसे पता चला इतनी दूर से...!!

कविता

पद्मनाभ पाराशर
विदिशा (मध्य प्रदेश)
bookrudratraders@gmail.com

पूंजीवाद

मैंने सबसे पहले
लालच का जाल बिछाया
केवल कुछ लोगों को
पूंजी का मोह सिखाया
नारा दिया विकास का
और सपना दिखया सुविधाओं का!

महत्वाकांक्षाओं के सहस्रबाहु को जन्म दिया
सर्वहारा का शोषण आरम्भ हुआ
मेरे एक हाथ में छड़ी थी
जो तेज बहुत तेज खाल उधेड़ने वाली थी
दूसरे हाथ में भूख थी
जो छड़ी की ताकत थी
इनके कारण लोग पिसते रहे
कोल्हू के बैलों की तरह
मशीनों की कानफोड़ू आवाज में
चिमनियों के धुंए में, रसायनों के ढेर में
दुर्गन्ध और गंदगी में, जानलेवा बीमारियों में
लोग काठ की हड्डी बनते रहे
और मेरी तिजोरियां मोटी होती रही,
उनके पसीने व खून में गुथी गंध से
मेरे आकाओं के लिए
बेशकीमती इत्र बनता रहा!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

जब टूट चुके थे वो
या यूं कहूँ कि निचोड़ लिया था उनका हाड़–मांस
कब्जा ली उनकी सोच
तब मैंने उन्हें नशा दिया आजादी का
और फिर वो सिपाही बन गए मेरे
क्रांति, युद्ध... सब किया उन्होंने मेरे लिए
और उन्हीं की चिताओं/कब्रों पर
बेचे मैंने हथियार और उपचार
वो मरते रहे, घिसटते रहे
मेरे आका अब राजा भी बन गए
एक नया नाम गढ़कर, एक नया चोला ओढ़कर!

मैं आज भी हूँ
वो लोग...
आज भी मेरे कब्जे में हैं
बल्कि अब तो मैंने उनके मन की मैपिंग भी कर ली है,
मैं उनके मन को ही
खरीदता और बेचता हूँ
मेरे पास अब भी दो ही छड़ी हैं
एक सपनों की, दूसरी असुरक्षा की
वो आज भी पिस रहे हैं
बस, मैंने जगह और तरीका बदल दिया है
मेरे आका ने
अब थोड़ा सा नर्मी का चोला ओढ़ लिया है
पर वो है, अब भी उतना ही
क्रूर, नृशंस, आत्ममुग्ध
और मैं
सोचता हूँ अब क्या बचा है
लोगों के पास
जिसे उनकी कमजोरी बनाकर
उन्हें और निचोड़ सकूँ!!

❖

कविता

मोती प्रसाद साहू
हवालबाग, अल्मोड़ा 263 636
motiprasadsahu@gmail.com

प्रतीक्षा

दिन बीता
पखवाड़ा बीता
बीते साल महीने

पतझर झड़ा
बसंत अंखुवाया
कोयल चहकी बाग

रंग–अबीर सभी ने खेला
गाया मिलकर फाग
प्रतीक्षा के पहाड़ नीचे थे
दबे हमारे भाग

ग्रीष्म गया
तन को झुलसाते
पावस झर–झर बरसा
सावन झूला झूल रहा था
लेकर खूब उमंग
प्रतीक्षा के पहाड़ नीचे हम
मिला न तेरा संग

लौट रहे हैं पक्षी दिन प्रति
चारा चुग कर नीड़
बांट रहे हैं साथ बैठकर
दिनचर्या की पीड़

आते जाते, रहे लौटते
घर के रोशन–दीप
लौटे नहीं अभी तक मधुवन
पता नहीं क्यों कृष्ण ...?

प्रतीक्षा का भी होता अपना
मधुमय लय संगीत
अब तो होती चली जा रहीं
कब से कालातीत

प्रतीक्षा के पहाड़ पर ही अब
उगकर शदिनकरश आता
पंकज तो खिलते हैं लेकिन
हमको बहुत रूलाता

पूर्णचन्द्र बन मिल तो लेते
हे मधुवन के कृष्ण!
आस और विश्वास पुनः ही
होता यहां सृजित!!

कविता

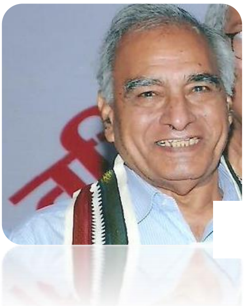

डा. केवलकृष्ण पाठक
आनद जवास, गीता कालोनी, जींद
ravinderjyotijind@gmail.com

नव वर्ष अभिनंदन

नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन
सौरभमयी हो जैसे चंदन
हो सब के मन में उजियारा
नव वर्ष में बरसे सुख धारा
तेरे आने पे सब खुश हों
जाये न भूख से कोई मारा
जन–जन में कभी न हो क्रंदन
नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन
अब करे न कोई घोटाला
आतंक पे लग जाये ताला
सब दृढ निश्चय से तन्मय हों
हो राष्ट्र–प्रेम का मतवाला
करते धरती–माँ का वंदन
नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन
सब जग में हो भाईचारा
मन–मंदिर में हो उजियारा
सब लोग द्वेष से दूर रहें
नयनों में प्रेम की हो धारा
ऊसर बन जाय नंदन–वन
नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन!!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

अनामिका अनु
31, कावुलेन, त्रिवेंद्रम, केरल 689008
anamikabiology248@gmail.com

मैं क्वारेन्टीन में हूँ!

मैं लिख रही हूँ तुम्हारे ही लिए
कमरा एसी है
सागवान की लकड़ी की अल्मारी में किताबें है
लैपटॉप है
और तुम्हारा ध्यान!

न्यूज में बता रहे हैं
तुम्हें स्टेशन पर से मार डंडे भगा देते हैं ?
तुम कहाँ जाते हो तब ?
स्टेशन की दूसरी तरफ, नाले के पास
रात भर मच्छर काटेंगे!
भोर से कुछ नहीं खाया पुलिस के डंडे के सिवा ?
पाँच सौ रुपये थे कोई सोते में जेब से निकाल ले गया
इतनी गंदगी और मच्छर में तुम सो कैसे गये ?
भैंस हो ?
बस आयी थी, बैठ जाते
छत का पाँच सौ, भीतर बैठने का एक हजार माँग रहे थे ?
खड़े रह गये!

दूसरा दिन है
आज खाना बँटा था
तब तुम चीख–चीख कर क्यों रोने लगे थे ?
पत्रकार पूछ रहे थे
तुम 'घर–घर' कह रो रहे थे।
चालीस किलोमीटर चले, पैंतीस और चलना है
माथे पर बिटिया बैठी है, बुखार है
बस एक सौ दो ?

मैं लिखने में लगी हूँ तुम्हारे वास्ते
जरा एसी ऑन कर लूँ
मेरे पास दस हजार किताबें हैं,
करोना से संबंधित
देश–विदेश में प्रकाशित सब लेख मैं पढ़ चुकी हूँ
मैं तुम्हारी तस्वीर लगाकर तथ्यपरक, बेहतर और
प्रभावशाली भाषा में लेख लिखूँगी
कविताएँ भी, कई कहानियाँ

रुको
मैंने आज चिकन बिरियानी बनाई है
रायता रह गया है
बना कर, खाकर आती हूँ
फिर लिखूँगी
तुम्हारी भूख, तुम्हारी पीड़ा, तुम्हारे तंग हाथ
और हाँ, घास खाते बच्चों की कहानी
मेरे शब्दकोश बड़े समृद्ध हैं, मैं बहुत पढ़ी लिखी हूँ
मैंने कई किताबें पढ़ी हैं, मैं तुम्हारे लिए लिखूँगी

काश! कि तुममें से कोई लिखता एक कविता
और ढा देता एसी में पेट भर खा कर लिखी गयी
मेरी कविताओं के बुर्ज खलीफा को
जो दुबई माल के बगल में ढीठ खड़ी है।

मैंने कहा था न मैं बहुत निर्मम हूँ
उससे भी वीभत्स है मेरा ज्ञान!!

कविता

डॉ. दीपा
सहायक प्राध्यापिका, दिल्ली विश्वविद्यालय
deepaneemwal@gmail.com

स्वर्ग से सुंदर

स्वर्ग से सुंदर है ये आशियाना हमारा
अपनेपन से ओत प्रोत
रहता इसका आँगन–ओसारा।

माता पिता से महका
ये जीवन अपना
जिनसे है अस्तित्व पाता
ये आशियाना अपना।

मां की ममता
हमें खुशहाल बनाती
पिता की डांट सही राह दिखाती
धूप छांव का सही अर्थ बताती
कभी दें शीतलता
तो कभी आग बरसाती
हर परिस्थिति से हमें
लड़ना है सिखाती
जीवन की सही हमको परिभाषा बतलाती
जीवन की हर गुत्थी को सुलझाती
जिनके होते न कभी कोई चिंता सताती
स्वर्ग से सुंदर ये घर हमारा
माता पिता से महका जग सारा।

उनसे घर है ये घर
घर घर सा लगता
त्याग बलिदान की उनकी
अनगिनत कहानियां कहता
उनके चरणों को
जग जन्नत कहता।

मुझे देखकर खुश उनका होना
मुझमें वो पल नव संचार है करता।
कभी अगर मैं डगमगाई
मां ने संभाला
जब भी लड़खड़ाई
माता–पिता ने मेरा संबल बढ़ाया
तब जाकर अपना,
अस्तित्व है पाया।

मेरी हर जीत,
हर खुशी के
मायने हैं उनसे
वो न होते
तो कैसे ये कदम
मेरे आगे बढ़ते ?

पिता ने खुद को खूब खपाया
मां ने खुद को दिन रात तपाया
दोनों ने ही अपना सर्वस्व लुटाया
तब जाकर ये मैंने
सुंदर, सभ्य, सुसंस्कृत
और अनमोल जीवन ये पाया।
दोनों के आगे करती हूं नमन मैं
स्वर्ग से सुंदर जो ये आशियाना बनाया
बागबान का हर एक फर्ज निभाया
स्वर्ग से सुंदर आशियाना हमारा।

आशीष कुमार वर्मा
शोधार्थी, एमफिल (हिंदी साहित्य)
हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी, गाचिबॉली, हैदराबाद

ज़िंदगी के गर्म रास्तों पर

जिंदगी के गर्म रास्तों पर
जो लम्हें छीन लिए गए
उस हकीकत को कविता में
जगह दी जा सकती है,
कविता...
कविता केवल कोरी कल्पना नहीं होती
वह सुखद–सरस हो, ये जरूरी नहीं
वह जीवन का कड़वा सच भी तो हो सकती है
जीवन की राह में
जो छूट गया है, जो चला गया है
उसे कविता में पुनः लाया जा सकता है
उकेरा जा सकता है पन्नों पर
भयानक दृश्य, भूख, बेरोजगारी या बेबस आत्महत्याएं,
अनन्य अभावों और असंख्य अतृप्त इच्छाओं को
उकेरा जा सकता है पन्नों पर
व्यष्टि या समष्टि के अधूरेपन को
कविता की देह में जगह दी जा सकती है
उसे जिया जा सकता है
भयानक संघर्षों भरे हृदयों की
आत्मा में तांक–झांक कर
मुठभेड़ की जा सकती है, समस्त जीवनानुभव समेटकर
कटुताओं को जीकर
जो है और जो नहीं है, उसे समेटकर
जीवन के दर्शन में शामिल किया जा सकता है
कविता में सब कुछ संभव है!!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

अशोक सिंह
जनमत शोध संस्थान, दुमका 814 101

दृश्यों में जीवन और जीवन के दृश्य

भूखी–प्यासी औरतें
गा रही हैं
ईश्वर को छप्पन भोग लगाने के गीत

बुझा–बुझा सा मुरझाया चेहरा लिए
एक स्त्री बेच रही है
सड़क किनारे गजरा

बातों में मिठास घोलकर
नुक्कड़ पर चाय बेच रहे आदमी
के जीवन से
गायब हो चुकी है मिठास

फुटपाथ पर रंगों की दुकान लगाकर
रंग–बिरंगे गुलाल बेचने वाले
आदमी के चेहरे का रंग उड़ चुका है

त्योहारों में
मिट्टी के दीये बनाकर
हजारों घरों को रोशन करने वालों के घर
आज भी डूबे हैं अंधेरे में

पिताजी का हाथ देखकर
अक्सर
उनका भाग्य बाँचने वाले
पंडितजी का भाग्य बदले
हमने आज तीस सालों में कभी नहीं देखा

यह जो लड़का
अभी–अभी
सुबह–सुबह
हाथ में थमा गया है अखबार
उसकी कभी कोई खबर हमने
आज तक अखबार में नहीं पढ़ी

और
यह जो छोटी–सी प्यारी बच्ची
हाथ में छोटा सा तिरंगा लिए
छब्बीस जनवरी की सुबह–सुबह
हँसती–खिलखिलाती हुई
स्कूल की तरफ दौड़ी जा रही है...

वह नहीं जानती अभी
गणतंत्र किस चिड़िया का नाम है!

❖

कोविड–19 से जूझते समकालीन परिदृश्य में शिक्षा जगत का बदलता परिदृश्य न्यू मीडिया की नजर से

डॉ. शैलेश शुक्ला

राजभाषा अधिकारी, एनएमडीसी ख्भारत सरकार का उपक्रम, दोणिमलै परिसर, बेल्लारी – 583118, कर्नाटक

ईमेल : poetshailesh@gmail.com दूरभाष : 8759411563

सार : भारत समेत पूरी दुनिया कोरोना वायरस की चपेट में है। चीन से शुरू हुई यह बीमारी पूरी दुनिया में फैल गई। दुनिया भर के चिकित्सक और वैज्ञानिक इस बीमारी का इलाज ढूंढने में लगे हुए हैं, लेकिन 25 जुलाई 2020 तक कोई दवाई या टीका विकसित नहीं हो सका था। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इस बीमारी के इलाज के लिए सबसे ठोस कदम 'सोशल डिस्टेंसिंग' को बताया। दुनिया के दूसरे देशों से सबक लेते हुए भारत सरकार ने भी 22 मार्च को '21 दिन के देशव्यापी लॉकडाउन' की घोषणा की और बाद में इसकी समय–सीमा तीन महीने तक बढ़ा दी गई। 25 जुलाई, 2020 तक स्थिति पूरी तरह से सामान्य नहीं हो सकी। चाहे टेलीवीजन हो या सोशल मीडिया हर जगह कोरोना वायरस ही बहस के केंद्र में है।

दुनिया के लिए लॉकडाउन नया 'नियम' है। कोविड–19 महामारी के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिये लागू किए गए लॉकडाउन के कारण स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रही है। इससे शिक्षा में अभूपूर्व व्यवधान पड़ा और विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय प्रभावित हुई। परिणामस्वरूप शिक्षा अब तेजी से ई–शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही है। प्राचीन गुरुकुल तथा आश्रम की वाचिक परंपरा से होते हुए भारत में शिक्षा ने अनेक सोपान तय किए हैं। पिछली सदी के कमोबेश

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

पारंपरिक श्यामपट तथा खड़िया मिट्टी (चॉक) के दौर से गुजरते हुए 21वीं सदी के इस दूसरे दशक में पठन–पाठन का समूचा परिदृश्य बहुत बदल चुका है। इस शोध पत्र में ई–शिक्षा की बढ़ती भूमिका, उसकी विशेषताएं तथा इस क्षेत्र में मौजूद चुनौतियों पर विमर्श किया गया है।

बीज शब्द : कोरोना संक्रमण का शिक्षा पर प्रभाव, कोविड–19 का प्रभाव, इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा, डिजिटल शिक्षा, शिक्षा प्रणाली, ई–शिक्षा।

कोरोना वायरस कोई एकल वायरस का नाम नहीं, बल्कि पूरा परिवार है। जिसे कोरोनवीरिडे कहा जाता है। इनमें से कुछ सामान्य सर्दी का कारण बनते हैं। कोरोना का अर्थ लैटिन में श्ताजश होता है। जब वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस को इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप के द्वारा देखा तो उन्हें यह वायरस, क्राउन या सूर्य के कोरोना जैसा दिखाई दिया। वास्तव में यह वायरस गोल है और इसकी सतह पर सूर्य के कोरोना जैसी प्रोटीन की स्ट्रेंस यानी शाखाएं उगी हुई है, जो हर दिशा में फैलती हुई महसूस होती हैं। इसी कारण इसका नाम 'कोरोना' रखा गया। इस कोरोना वायरस का अधिकारिक नाम कोविड–19 (COVID–19), इंटरनेशनल कमिटी ऑन टैक्सनॉमी ऑफ वायरस (आईसीटीवी) ने दिया है। इसमें 'सीओ' (ब्) का मतलब कोरोना, 'वी आई' (टप्) का मतलब वायरस, 'डी' (क्) का मतलब डिजीज और संख्या '19' वर्ष 2019 को दर्शाती है, क्योंकि पहली बार यह वर्ष 2019 में मनुष्य में पाया गया।[1]

कोरोना वायरस एक प्रकार का आरएनए वायरस या जीनोम है। जिसका आकार लगभग 27 से 34 किलोबेस होता है। यह वायरस नाक और अपर रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट में इंफेक्शन फैलाते हैं और प्राणवायु जो हम मुख अथवा नाक द्वारा फेफड़ों तक पहुंचाते हैं, को बाधित कर देता है। फेफड़ों में ऑक्सीजन ना पहुंचने से सबसे पहले मानव मस्तिष्क प्रभावित होता है और श्वास प्रतिक्रिया धीरे–धीरे लुप्त हो जाती है। वायरस बड़ी आसानी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल जाता है और इसका वायरस घंटों और दिनों तक जिंदा रह सकता है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इस नए वायरस के उपचार के लिए जो दिशा–निर्देश जारी किए, उसमें नियमित रूप से हाथ धोना, छींकते व खांसते हुए नाक व मुंह को ढंकना और सामाजिक

एवं शारीरिक दूरी जैसे उपाय बेहद जरूरी बताए।[2] कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों की निगरानी करने वाली वेबसाइट वर्ल्ड– ओ–मीटर के अनुसार, 25 जुलाई 2020 तक दुनिया में कोरोना वायरस से संक्रमितों का आंकड़ा एक करोड़ 59 लाख 85 हजार 274 लोग संक्रमित हो चुके हैं। इनमें 97 लाख 73 हजार 536 स्वस्थ्य हो चुके हैं। वहीं, 6 लाख 43 हजार 581 की मौत हो गई है। सबसे ज्यादा संक्रमित और मौत का आंकड़ा अमेरिका में है। अमेरिका में 42,48,759 संक्रमित हुए और 1,48,498 मौतें हुई। दूसरे नंबर पर ब्राजील और तीसरे नंबर पर भारत है।[3]

24 मार्च को कोविड–19 रोकथाम के लिए जब देश भर में लॉकडाउन लागू किया गया। उसके तुरंत बाद राज्यों की सरकारों ने स्कूली शिक्षा को ऑनलाइन करने का प्रावधान शुरू कर दिया। इसमें एनजीओ, फाउंडेशन और निजी क्षेत्र की तकनीकी शिक्षा कंपनियों को भी भागीदार बनाया गया। इन सब ने मिलकर शिक्षा प्रदान करने के लिए संवाद के सभी उपलब्ध माध्यमों का इस्तेमाल शुरू किया। इसमें टीवी, डीटीएच चौनल, रेडियो प्रसारण, मोबाइल एप्लीकेशन, यूट्यूब वीडियो, व्हाट्सऐप ग्रुप का सहारा लिया।

कोरोना वायरस संक्रमण के लिए उठाए गए कदम लॉकडाउन ने सभी को घरों में कैद कर दिया। विश्वव्यापी लॉकडाउन के बीच तमाम देशों में ऑनलाइन कक्षाओं और इंटरनेट से पढ़ाई पर जोर है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। लॉकडाउन की घोषणा के बाद विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्याल बंद हो गई। इस बीच विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए सरकार ने ऑनलाइन शिक्षा पर अधिक बल दिया। इस बीच तेजी से ऑनलाइन शिक्षा का विस्तार हुआ। ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था, चुनौतियों और समकालीन परिदृश्य में इसके महत्व के कारण इस विषय का चयन किया गया।

इस अध्ययन का उद्देश्य इस तरह है–

- कोरोना संक्रमण के दौरान सरकार ने ऑनलाइन शिक्षा के क्या व्यवस्था की
- ऑनलाइन शिक्षण के लिए क्या–क्या तकनीक अपनाई गई
- लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन शिक्षण का कितना विस्तार हुआ

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

शोध अध्ययन में अवलोकन विधि का इस्तेमाल किया गया। इस विधि के जरिए ऑनलाइन शिक्षण देने की व्यवस्था, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा उठाए गए कदम और मीडिया में छपी खबरों एवं लेख–आलेखों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में केवल ऑनलाइन शिक्षा को शामिल किया गया है। वैसे तो देश में कई निजी कंपनियां भी ऑनलाइन शिक्षा को लेकर काम कर रही है, लेकिन इसमें सरकार द्वारा उठाए गए कदम और उसके महत्व पर को लेकर अधिक केंद्रित किया गया है।

शोध अध्ययन के दौरान सेकेंडरी डाटा की मदद ली गई। आंकड़ों के लिए केंद्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं राज्य शिक्षा विभाग की मदद ली गई है। ऑनलाइन शिक्षा के विस्तार और अन्य जानकारी के लिए शिक्षण गतिविधियों पर नजर रखने वाली विभिन्न वेबसाइट, समाचार पत्र एवं न्यूज पोर्टल का भी अध्ययन किया गया है। तथ्य विश्लेषण शोध अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों की मदद से तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

भारत में कोरोना वायरस संक्रमण की शुरुआतरू भारत में सबसे पहले कोरोना का मरीज 30 जनवरी 2020 को केरल में पाया गया था। चीन के वुहान विश्वविद्यालय से केरल लौटी एक छात्रा में इसकी पुष्टि हुई थी। इस बात की जानकारी केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी) के जरिये प्रेस विज्ञप्ति जारी करके दी।[4] इसके बाद लगातार देश में लगातार कोरोना संक्रमण के मामले बढ़ते चले गए। 25 जुलाई, 2020 (शनिवार) शाम 05.00 बजे तक की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में कुल संक्रमित मरीजों की संख्या 13 लाख 58 हजार 399 हो गई है। इसमें 8 लाख 65 हजार 744 मरीज ठीक हो चुके हैं जबकि 13 हजार 631 लोगों की मौत हो चुकी है।[5] देश में संक्रमण की शुरुआत से लेकर 50 हजार मामले होने में 98 दिन लगे। इसके बाद रफ्तार तेज हो गई। अगले 50 हजार मामले महज 12 दिन में सामने आए। एक से 1.5 लाख मामले होने में 8 दिन और 1.5 से 2 लाख मरीज अगले 7 दिन मिले। 2 लाख से 2.5 लाख केस होने में 5 दिन और 2.5 से 3 लाख केस होने में महज 5 दिन लगे। 3 से 3.5 लाख मामले होने में 4 दिन और फिर 3.5 से 4 लाख मामले होने में भी 4 दिन ही लगे। फिर हर तीन

दिन में 50 हजार नए मामले मिलने लगे। दो जुलाई के आंकड़ों के मुताबिक, अब हर ढाई दिन में 50 हजार संक्रमित पाए जा रहे हैं। देश में 59.40 प्रतिशत की दर से मरीज स्वस्थ्य हो रहे है।[6]

शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है। ई–शिक्षा के विभिन्न रूप हैं, जिसमें वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग या कंप्यूटर आधारित लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम इत्यादि शामिल हैं। वेबिनार, मॉक टेस्ट, वीडियो और काउंसलिंग आदि की विधियां भी ऑनलाइन संचालित की जा रही हैं।[7]

ई–शिक्षा को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

- समकालिक (Synchronous)
- अतुल्यकालिक (Asynchronous)

समकालिक शैक्षिक व्यवस्था से तात्पर्य है कि 'एक ही समय में' अर्थात विद्यार्थी और शिक्षक अलग–अलग स्थानों से एक दूसरे से शैक्षिक संवाद करते हैं। इस तरह से किसी विषय को सीखने पर विद्यार्थी अपने प्रश्नों का तत्काल उत्तर जान पाते हैं, जिससे उनके उस विषय से संबंधित संदेह भी दूर हो जाते हैं। इसी कारण से इसे रियल टाइम लर्निंग भी कहा जाता है। इस प्रकार की ई–लर्निंग व्यवस्था में कई ऑनलाइन उपकरण की मदद से छात्रों को पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराया जाता है। सिंक्रोनस ई–शैक्षिक व्यवस्था के कुछ उदाहरणों में ऑडियो और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, लाइव चौट तथा वर्चुअल क्लासरूम आदि शामिल हैं। ये तरीके बीते कुछ वर्षो में अधिक लोकप्रिय हो गए हैं। अतुल्यकालिक शैक्षिक व्यवस्था से तात्पर्य है कि 'एक समय में नहीं' अर्थात यहां विद्यार्थी और शिक्षक के बीच वास्तविक समय में शैक्षिक संवाद करने का कोई विकल्प नहीं है। इस व्यवस्था में पाठ्क्रम से संबंधित जानकरी पहले ही उपलब्ध होती है। उदाहरण के लिये वेब आधारित अध्ययन, जिसमें विद्यार्थी किसी ऑनलाइन कोर्स, ब्लॉग, वेबसाइट, वीडियो ट्युटोरिअल्स, ई–बुक्स इत्यादि की मदद से शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस तरह की ई–शैक्षिक व्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थी किसी भी समय, जब चाहे तब शैक्षिक पाठ्यक्रमों तक पहुँच सकते हैं। यही कारण है कि छात्रों का

एक बड़ा वर्ग असिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था के माध्यम से अपनी पढ़ाई करना पसंद करता है।

दूरदराज तक ऑनलाइन के जरिए कई निजी कंपनियां शिक्षा के सेवा के साथ व्यापार कर रही है। कोरसेरा, बाईजूस, वेदांतु और माइंडस्पार्क जैसे बहुत से ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म और ट्युटोरियल का कोविड–19 के दौरान तेजी से विस्तार हुआ। ''ऑडिट और मार्केटिंग की शीर्ष एजेंसी केपीएमजी और गूगल ने 'भारत में ऑनलाइन शिक्षाः 2021' शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है जिसमें 2016 से 2021 की अवधि के दौरान भारत में ऑनलाइन शिक्षा के कारोबार में आठ गुना की अभूतपूर्व वृद्धि आंकी गयी हैं। 2016 में ये कारोबार करीब 25 करोड़ डॉलर का था और 2021 में इसका मूल्य बढ़कर करीब दो अरब डॉलर हो जाएगा। शिक्षा के पेड यूजरों की संख्या 2016 में करीब 16 लाख बताई गयी थी, 2021 में जिनके करीब एक करोड़ हो जाने की संभावना है।'' [8]

केंद्र सरकार, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान और शिक्षा से जुड़े अन्य संस्थानों के सहयोग से संचालित वेब पोर्टल और अन्य कार्यक्रमों जैसे– दीक्षा पोर्टल, स्वयं, स्वयं प्रभा, ई–पाठशाला, नेशनल रिपोजिटरी ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज और वर्चुअल लैब आदि के माध्यमों से गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। बिहार में शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से दूरदर्शन के डीडी बिहार चौनल पर "मेरा दूरदर्शन, मेरा विद्यालय" कार्यक्रम शुरू किया गया है। इस पहल से माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को पाठ्य–पुस्तक आधारित शिक्षण लाभ मिलेगा। हिमाचल प्रदेश में सरकार पहली कक्षा से कॉलेज विद्यार्थियों के लिए ई–लर्निंग कार्यक्रम शुरू कर चुकी है। महाराष्ट्र के सतारा जिले में कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों के लिए वाट्सऐप के जरिये सभी विषयों के टेस्ट–पेपर आयोजित करवाए जा रहे है। हरियाणा सरकार ने डीटीएच सेवा शुरू किया है। जिसमें पहली से 12वीं कक्षा के विद्यार्थी लाभ उठा रहे है।

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक 'ने भारत में ऑनलाइन शिक्षा के जरिये लोगों को आपस में जोड़ने के लिए बड़ी संख्या में लोगों के विचार जानने के उद्देश्य से एक सप्ताह लंबा 'भारत पढ़े ऑनलाइन' अभियान की शुरुआत 10

अप्रैल को नई दिल्ली में शुरू किया।[9] केंद्रीय मानव संसाधन विभाग ने ऑनलाइन माध्यम से डिजिटल शिक्षा पर 'प्रज्ञाता' (पीआरएजीवाईएटीए) दिशा–निर्देश जारी किए। प्रज्ञाता दिशा–निर्देशों में ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा के आठ चरण, जिनमें योजना, समीक्षा, व्यवस्था, मार्गदर्शन, याक (बात), असाइन, ट्रैक और सराहना शामिल हैं। ये आठ चरण उदाहरणों के साथ चरणबद्ध तरीके से डिजिटल शिक्षा की योजना और कार्यान्वयन का मार्गदर्शन करते हैं।[10] केंद्रीय मानव संसाधन विभाग द्वारा शुरू किए गए प्रयास इस तरह है–

क) स्वयं : स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स एक एकीकृत मंच है जो स्कूल (9वीं– 12वीं) से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है। अब तक स्वयं पर 2769 ऑनलाइन कोर्सेज (मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेस दृ मूक्स) (बड़े पैमाने पर ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम) की पेशकश की गई है, जिसमें लगभग 1.02 करोड़ छात्रों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिला लिया है। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का उपयोग न केवल छात्रों द्वारा बल्कि शिक्षकों और गैर–छात्र शिक्षार्थियों द्वारा भी जीवन में कभी भी सीखने के रूप में किया जा रहा है। एनसीईआरटी कक्षा नौंवी से 12वीं तक के लिये 12 विषयों में स्कूल शिक्षा प्रणाली हेतु बड़े पैमाने पर ऑनलाइन पाठ्यक्रमों (मूक्स) का मॉड्यूल विकसित कर रहा है।[11]

ख) स्वयं प्रभा : यह 24x7 आधार पर देश में सभी जगह डायरेक्ट टू होम (डीटीएच) के माध्यम से 32 उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चौनल प्रदान करने की एक पहल है। इसमें पाठ्यक्रम आधारित पाठ्य सामग्री होती है जो विविध विषयों को कवर करती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य गुणवत्ता वाले शिक्षण संसाधनों को दूरदराज के ऐसे क्षेत्रों तक पहुँचाना है जहाँ इंटरनेट की उपलब्धता अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।[12]

ग) राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी : भारत की राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (एनडीएल) एक एकल–खिड़की खोज सुविधा के तहत सीखने के संसाधनों के आभाषी भंडार का एक ढांचा विकसित करने की परियोजना है। इसके माध्यम से यहां 3 करोड़ से अधिक डिजिटल संसाधन उपलब्ध हैं। लगभग 20 लाख सक्रिय उपयोगकर्त्ताओं के साथ 50 लाख से अधिक छात्रों ने इसमें अपना पंजीकरण कराया है।[13]

घ) स्पोकन ट्यूटोरियल : छात्रों की रोजगार क्षमता को बेहतर बनाने के लिये ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर पर 10 मिनट के ऑडियो–वीडियो ट्यूटोरियल उपलब्ध हैं। यह सभी 22 भाषाओं की उपलब्धता के साथ ऑनलाइन संस्करण है जो स्वयं सीखने के लिये बनाया गया है। स्पोकन ट्यूटोरियल के माध्यम से बिना शिक्षक की उपस्थिति के पाठ्यक्रम को प्रभावी रूप से नए उपयोगकर्ता को प्रशिक्षित करने के लिये डिजाइन किया गया है।[14] यह शिक्षण संस्थानों में ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग को बढ़ावा देने वाली एक परियोजना है। इसमें शिक्षण कार्य, जैसे कि स्पोकन ट्यूटोरियल्स, डॉक्यूमेंटेशन, जागरूकता कार्यक्रम, यथा कॉन्फ्रेंस, ट्रेनिंग वर्कशॉप इत्यादि इंटर्नशिप के माध्यम से किया जाता है।

ङ) वर्चुअल लैब : इस प्रोजेक्ट का उपयोग प्राप्त ज्ञान की समझ का आकलन करने, आंकड़ें एकत्र करने और सवालों के उत्तर देने के लिये पूरी तरह से इंटरेक्टिव सिमुलेशन एन्वायरनमेंट (Interactive Simulation Environment) विकसित करना है। महत्त्वाकांक्षी परियोजना के उद्देश्यों को प्राप्त करने, वास्तविक दुनिया के वातावरण और समस्याओं से निपटने की क्षमता विकसित करने के लिये अत्याधुनिक कंप्यूटर सिमुलेशन तकनीक के साथ आभासी प्रयोगशालाओं को विकसित करना आवश्यक है। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत 1800 से अधिक प्रयोगों के साथ लगभग 225 ऐसी प्रयोगशालाएँ संचालित हैं और 15 लाख से अधिक छात्रों को लाभ प्रदान कर रही हैं।[15]

च) ई–यंत्र : यह भारत में इंजीनियरिंग कॉलेजों में एम्बेडेड सिस्टम और रोबोटिक्स पर प्रभावी शिक्षा को सक्षम करने की एक परियोजना है। शिक्षकों और छात्रों को प्रशिक्षण कार्यशालाओं के माध्यम से एम्बेडेड सिस्टम और प्रोग्रामिंग की मूल बातें सिखाई जाती हैं।[16]

छ) एनसीईआरटी पोर्टल : एनसीईआरटी ने अपने वेबपोर्टल पर कक्षा पहली से 12वीं तक सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध कराई है। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी और ऊर्दू में किताबें उपलब्ध है, जिसे डाउनलोड कर पढ़ सकते है। इसके अलावा एनसीईआरटी द्वारा ई– रिसोर्सेज जैसे ऑडियो, वीडियो इंटरएक्टिव आदि के रूप में विकसित अध्ययन सामग्री विद्यार्थी, अभिभावक और शिक्षकों के लिए उपलब्ध है।[17]

ऑनलाइन शिक्षा की स्वीकार्यतारू मौजूदा ऑनलाइन शिक्षा से पहले देश में 'इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी' और राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान तथा कई अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के द्वारा दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देने के कई सफल प्रयास किये गए हैं। देश में लॉकडाउन की घोषणा के बाद मानव संसाधन विकास मंत्रालय के ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म तक करीब डेढ़ करोड़ लोग पहुंच चुके है। स्वयं मंच पर पांच गुणा वृद्धि हुई। 574 पाठ्यक्रमों में करीब 26 लाख विद्यार्थी नामांकित है। 'स्वयं प्रभा' टीवी चौनल को लॉकडाउन से पहले रोज करीब 59 हजार लोग देख रहे थे। 'लॉकडाउन' शुरू होने के बाद से इस चौनल को लगभग सात लाख लोग देख है। 'लॉकडाउन' के बाद नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी को 15 लाख से अधिक बार एक्सेस किया जा चुका है।[18]

देश में कोविड–19 और इसके नियंत्रण हेतु लागू लॉकडाउन के कारण अन्य क्षेत्रों के साथ ही शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों पर भी गंभीर प्रभाव पड़ा है। भारत में मार्च 2020 में कोविड–19 के मामलों की शुरुआत तक देश के अधिकांश शिक्षण संस्थानों में आधे से अधिक पाठ्यक्रम पूरा किया जा चुका था, लॉकडाउन के बाद कई शिक्षण संस्थानों में ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से शिक्षण कार्य जारी रखने का प्रयास किया गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए नए शैक्षणिक कैलेंडर के साथ सोशल डिस्टेंसिंग, ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन, वर्चुअल लैबोरेटरीज आदि के बारे में महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिये हैं। साथ ही भविष्य में ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिये अध्यापकों को 'इनफॉर्मेशन व कम्युनिकेशन टूल्स' जैसी तकनीकों के लिए प्रशिक्षित करने का सुझाव दिया है। [19]

महामारी की इमरजेंसी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा की सारी परिचर्चाएं इस बुनियाद पर आधारित हैं कि सभी छात्रों के पास इंटरनेट सेवा है। सभी के पास ऑनलाइन पढ़ाई के लिए उपकरण यानी लैपटॉप या कंप्यूटर मौजूद हैं। जिसकी मदद से वो ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते हैं। नेशनल सैंपल सर्वे के शिक्षा से जुड़े 75वें चरण के आंकड़े बताते हैं कि देश में केवल 24 प्रतिशत घरों में ही इंटरनेट की सुविधा है। इनमें से 42 फीसद शहरी क्षेत्रों में हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों के केवल 15 प्रतिशत घरों में इंटरनेट की सुविधा है। वहीं देश के

केवल 11 प्रतिशत घरों में अपने कंप्यूटर हैं. (23 प्रतिशत शहरी घरों में कंप्यूटर हैं। गांवों में केवल 4.4 प्रतिशत घरों में अपने कंप्यूटर हैं। इसमें स्मार्टफोन को शामिल नहीं किया गया है।)[20] भारत में, 5–11 वर्ष की आयु के लगभग 71 मिलियन बच्चे अपने परिवार के सदस्यों के डिवाइस पर इंटरनेट एक्सेस करते हैं जो कि देश के 500 मिलियन के सक्रिय इंटरनेट यूजर बेस का लगभग 14 प्रतिशत हैं। भारत में दो तिहाई इंटरनेट यूजर 12 से 29 वर्ष की आयु समूह के (इंटरनेट एवं एएमपी, मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा साझा किया गया डाटा) हैं। [21] ऑनलाइन शिक्षा के लंबी अवधि के समाधान के लिए राज्यों और केंद्र की सरकारों को चाहिए कि वो सभी शिक्षण संस्थानों को अच्छी ब्रॉडबैंड सेवा और ऑनलाइन पढ़ाई के लिए लैपटॉप और कंप्यूटर उपलब्ध कराएं।

देश की भौगोलिक स्थिति और बड़ी जनसंख्या के कारण सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करना लंबे समय से एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। भारत में कोविड–19 महामारी का प्रभाव अन्य क्षेत्रों के साथ शिक्षा क्षेत्र पर भी देखने को मिला है। इस महामारी ने शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों को शिक्षण माध्यमों के नए विकल्पों और संसाधनों पर विचार करने पर विवश किया है। पूर्व में भी दूरदर्शन और रेडियो के माध्यम से शिक्षा की पहुंच को बढ़ाने का प्रयास किया गया है और लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन शिक्षा में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। वर्तमान परिस्थिति से सीख लेते हुए भविष्य में इंटरनेट, मोबाइल एप और अन्य नवाचारों के माध्यम से शिक्षा की पहुंच में विस्तार को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश में 993 विश्वविद्यालय, करीब चालीस हजार महाविद्यालय हैं और 385 निजी विश्वविद्यालय हैं। उच्च शिक्षा में करीब चार करोड़ विद्यार्थी हैं और नामांकित छात्रों की दर यानी ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो बढ़कर 26.3 प्रतिशत हो गया है। देश के प्रमुख शिक्षा बोर्ड सीबीएसई की 2019 की परीक्षा के लिए 10वीं और 12वीं कक्षाओं में 31 लाख से ज्यादा विद्यार्थी नामांकित थे। सीआईसीएसई के अलावा विभिन्न राज्यों के स्कूली बोर्डों की छात्र संख्या भी करोड़ों में है। सरकार के सभी विकल्पों और संसाधनों का उपयोग कर दूरस्थ शिक्षा का एक मजबूत आधार स्थापित किया जा सकता है, जिससे भविष्य में सभी के लिए ऑनलाइन शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित की जा सकती है।

संदर्भ :

1. https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019/technical-guidance/naming-the-coronavirus-disease-(covid-2019)-and-the-virus-that-causes-it
2. https://www.who.int/dg/speeches/detail/who-director-general-s-remarks-at-the-media-briefing-on-2019-ncov-on-11-february-2020 11 February 2020
3. https://www.worldometers.info/coronavirus/country/india/ 25 July 2020, 10.30 GMT
   https://www.bhaskar.com/international/news/coronavirus-us-china-italy-coronavirus-outbreak-china-italy-iran-usa-japan-france-live-today-news-updates-world-cases-novel-corona-covid-19-death-toll-127550080.html
4. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1601095, 30 JAN 2020 1:33PM
5. https://www.bhaskar.com/national/news/coronavirus-outbreak-india-cases-live-news-and-updates-25-july-127550070.html Jul 25, 2020, 02:42 PM IST
6. https://www.bhaskar.com/national/news/coronavirus-updates-india-has-6-lakh-case-of-coronavirus-127466534.html Jul 02, 2020, 02:42 AM IST
7. शैक्षिक तकनीकी, प्रथम वर्ष, प्रायोगिक संस्करण , राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर, छत्तीसगढ़, (पृष्ठ संख्या - 51) http://scert.cg.gov.in/pdf/deled-2018-19pdf/ET-2018-19.pdf
8. https://www.amarujala.com/columns/opinion/coronavirus-effect-online-class-and-e-learning-after-lockdown-due-to-covid19 Wed, 01 Apr 2020 12:43 AM IST
9. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1612999 10 APR 2020 2:43PM by PIB Delhi
10. https://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/pr_2703_0.pdf
    https://www.india.com/hindi-news/career-hindi/hrd-ministry-launches-pragyata-education-guidelines-for-

digital-education-mental-health-tips-and-screen-time-for-children-4085061/ July 15, 2020 8:50 AM IST

11. https://swayam.gov.in/explorer
12. https://www.swayamprabha.gov.in/
13. https://ndl.iitkgp.ac.in/
14. https://spoken-tutorial.org/
15. http://www.vlab.co.in/
16. https://www.e-yantra.org/
17. http://www.ncert.nic.in/
18. https://www.patrika.com/opinion/coronavirus-epidemic-lockdown-mhrd-revolution-in-education-and-online-education-system-6016188/ 19 Apr 2020, 12:33 PM IST
19. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1619531 29 APR 2020 8:16PM by PIB Delhi
20. http://mospi.nic.in/sites/default/files/publication_reports/KI_Education_75th_Final.pdf
21. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1629744 05 JUN 2020 3:51PM by PIB Delhi

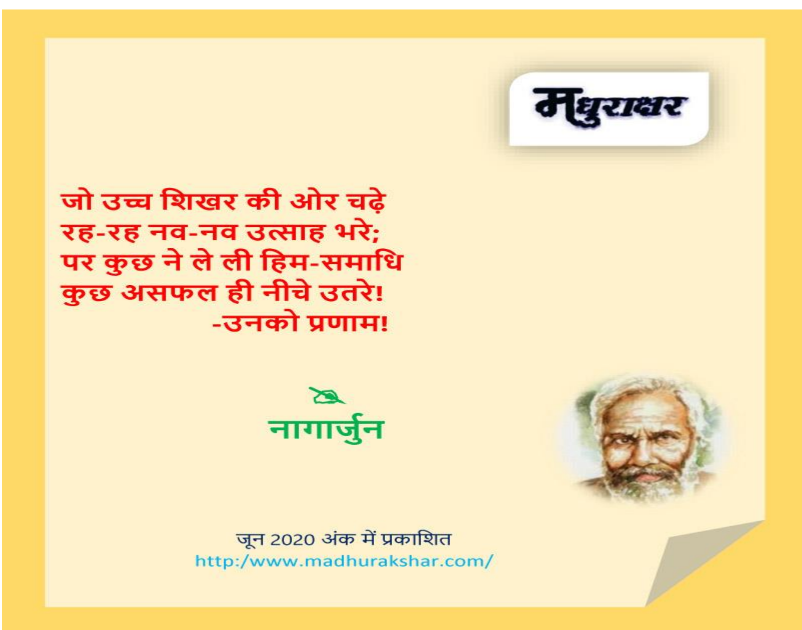

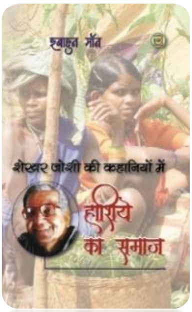

शेखर जोशी की कहानियों में
हाशिये का समाज

इब्राहुन मॉन

आईएसबीएन : 978-81-945460-6-1
संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

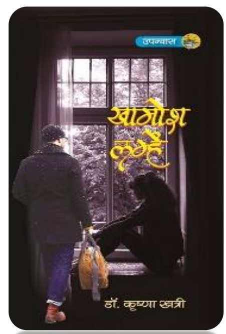

खामोश लम्हें

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-944444-6-6
संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

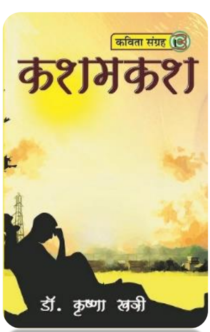

कशमकश

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-8-5
संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

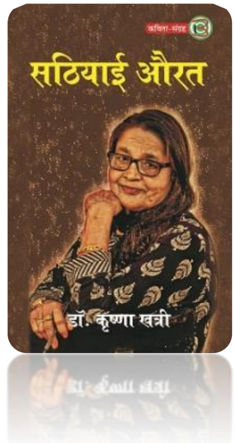

सठियाई औरत

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-9-2
संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

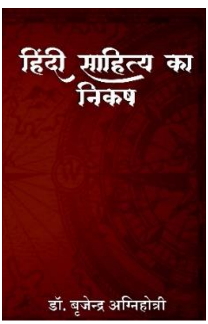

हिंदी साहित्य का निकष

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-93-90548-81-1
संस्करण : 2020, मूल्य : 299/-

जुम्बिश

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-946859-3-7
संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

‘अजस्र-स्रोत तुम!’

सहयोग आधार पर प्रकाश्य साझा काव्य-संग्रह

‘मधुराक्षर प्रकाशन’ से प्रकाशित किए गए साझा संग्रह- ‘अर्द्ध सत्य तुम!’ के प्रति कवियों के अदम्य उत्साह और कुछ वरिष्ठ कवियों की सलाह पर स्त्री-शक्ति पर केंद्रित साझा काव्य-संग्रह ‘अजस्र-स्रोत तुम!’ के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है। ‘अजस्र-स्रोत तुम!’ के लिए ऐसी कविताएं आमंत्रित हैं, जिनमें स्त्री के शक्ति-रूप का चित्रण किया गया हो। स्त्री के जिस रूप ने आपको प्रभावित किया हो, प्रेरणा दी हो; उसका चित्रण आपकी कविताओं में होना अनिवार्य है।

प्रकाशन नियम-

1. **प्रत्येक रचनाकर को पाँच पृष्ठ दिए जाएंगे, जिनमें से चार पृष्ठों में कविताएं और एक पृष्ठ में रचनाकार का साहित्यिक परिचय दिया जाएगा।**
2. **सहयोग राशि का भुगतान रचना-चयन के उपरांत करना है।**
3. **‘अजस्र-स्रोत तुम!’ संग्रह का प्रकाशन प्रत्येक स्थिति में मार्च, 2021 माह के तृतीय सप्ताह में किया जाएगा।**
4. **प्रत्येक रचनाकार को रचना चयन के पश्चात प्रकाशन सहयोग राशि 1250.00 रुपये का भुगतान करना होगा। इस भुगतान में रचनाकारों को प्रेषित करने पर लगने वाला डाकव्यय भी सम्मिलित है। यह भुगतान ‘मधुराक्षर’ के भारतीय स्टेट बैंक के खाता-क्रमांक 31807644508 (IFS Code- SBIN0005396, MICR Code- 212002004) में जमा करें। PayTM या GooglePay के माध्यम से भुगतान करने के लिए 9918-69-5656 मोबाइल नंबर को चुनें। भुगतान करने के पश्चात रसीद व्हाट्सप्प नंबर 9918-69-5656 पर प्रेषित करें।**
5. **प्रत्येक रचनाकार को संग्रह की पाँच प्रति कोरियर/पंजीकृत डाक से प्रेषित की जाएंगी। यदि किसी रचनाकार को पाँच से अधिक प्रतियों की आवश्यकता हो तो वह अपनी सहयोग राशि में प्रति संग्रह 200.00 अतिरिक्त जोड़कर भुगतान करे।**
6. **रचनाएं और संबन्धित भुगतान 25 फरवरी, 2021 तक ही स्वीकार होंगे। यदि 25 फरवरी, 2021 तक आपका भुगतान प्राप्त नहीं होता तो यह समझा जाएगा कि आप सहयोग आधार पर रचना-प्रकाशन के इच्छुक नहीं हैं, और आपकी रचनाएं संग्रह से हटा दी जाएंगी।**

- **किसी भी तरह का पत्र व्यवहार madhurakshar@gmail.com में करें, और विषय (Subject) में ‘अजस्र-स्रोत तुम!’ लिखना न भूलें।**

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)